डाक पंजीयन क्र. MP/Bhopal/186/2024-2026
लाइसेंस क्र. Tech/23-04/08/2024-2026
आर.एन.आई. पंजीकरण संख्या 38506/84

रोज़गार और निर्माण

टेलीग्राम चैनल से जुड़ने के लिए यहां क्लिक करें

प्रति सोमवार को प्रकाशित, भोपाल 01.04.2024 से 07.04.2024 | वर्ष-41 | अंक-24 | मूल्य ₹ 10.00

संक्षिप्त खबर

113 अभ्यर्थियों ने निर्देशन पत्र किए दाखिल

भोपाल, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने बताया कि लोकसभा निर्वाचन-2024 के निर्वाचन कार्यक्रम के अनुसार पहले चरण के लिये नाम निर्देशन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया जारी है। 27 मार्च को 64 अभ्यर्थियों ने 89 नाम निर्देशन पत्र दाखिल किये हैं। अधिसूचना जारी होने से लेकर अब तक कुल 113 अभ्यर्थियों द्वारा 153 नाम निर्देशन पत्र भरे जा चुके हैं। नाम निर्देशन पत्र दाखिल किये गये अभ्यर्थियों के शपथ-पत्र एवं अन्य जानकारियां भारत निर्वाचन आयोग की वेबसाइट https://affidavit.eci.gov.in/ पर देखी जा सकती हैं। श्री राजन ने बताया कि पहले चरण के लिए 19 अप्रैल को मतदान होगा। मतगणना 4 जून को होगी।

विद्यार्थियों को मतदान करने की दिलाई गई शपथ

इंदौर, लोकसभा चुनाव को देखते हुए इंदौर जिले में मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक करने के संबंध में अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत गांव से लेकर शहर तक लगातार जगह-जगह कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री आशीष सिंह के निर्देशन में जागरूकता अभियान के तहत अनेक नवाचार भी किये जा रहे हैं। स्वीप प्लान के अंतर्गत आगामी लोकसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए मतदाता जागरूकता अभियान के तहत आगामी लोकसभा निर्वाचन में विद्यार्थियों को शत-प्रतिशत मतदान करने की शपथ दिलाई गई। बच्चों को बताया गया कि मतदान हमारा अधिकार है, यही एक ऐसा अधिकार है जो हर वर्ग समाज, गरीब, अमीर सबके लिए समान है, इसकी गरिमा को समझें और अपने मताधिकार का उपयोग कर राष्ट्र को सशक्त बनाएं।

शिक्षा के अधिकार को लेकर कलेक्टर ने दिखाई दृढ़ता

इंदौर, राज्य शिक्षा केन्द्र के संचालक श्री धनराजू एस. ने कलेक्टर श्री आशीष सिंह द्वारा गरीब बच्चों की शिक्षा के लिये शिक्षा के अधिकार संबंधी की गयी कार्यवाही के लिये उन्हें बधाई दी है। राज्य शिक्षा केन्द्र के संचालक श्री धनराजू एस. ने पत्र के माध्यम से सराहना करते हुए अवगत कराया कि कलेक्टर द्वारा की गयी कार्यवाही के सामने दो प्रतिष्ठित स्कूल के प्रबंधकों को सहमत होना पड़ा। कलेक्टर श्री सिंह के नेतृत्व में समेकित प्रयास से 56 बच्चों को इन स्कूलों में निःशुल्क प्रवेश मिल सका।

भीतर के पृष्ठों पर

- **पिछला सप्ताह** - देश-विदेश की साप्ताहिक खबरों का संक्षिप्त विवरण
- **चर्चा में** - चर्चित व्यक्तियों और ध्यान आकर्षित करने वाली खबरों की चर्चा
- **खेल चर्चा** - प्रमुख खेल गतिविधियों का विवरण
- **सामयिकी** - देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

(स्रोत : समाचार एवं फोटो जनसंपर्क विभाग, मध्यप्रदेश से साभार)

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी से लोकसभा चुनाव की तैयारियों पर विशेष साक्षात्कार

चुनाव का पर्व DESH KA GARV
LOK SABHA ELECTION 2024

'लोकतांत्रिक व्यवस्था' में मतदान हमारा अधिकार भी है और प्रमुख जिम्मेदारी भी

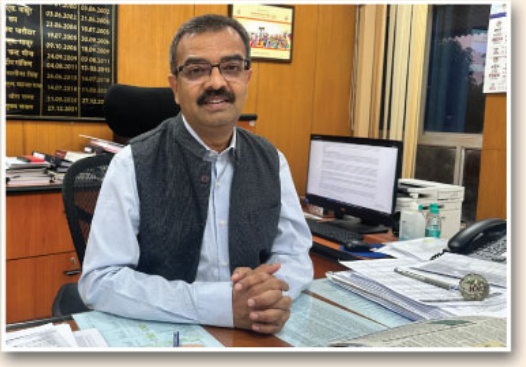

मध्यप्रदेश में 19 अप्रैल को लोकसभा चुनाव के पहले चरण का मतदान होना है। चार चरणों में होने वाले मतदान के लिए प्रदेश में तैयारियां अंतिम चरण में हैं। स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव संपन्न करवाना चुनाव आयोग का लक्ष्य है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदान संपन्न करवाने के लिये गठित निर्वाचन आयोग का यह चुनौतीपूर्ण दायित्व है। राज्य में मतदान की तैयारियों और जागरूकता को लेकर मध्यप्रदेश के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन से "रोज़गार और निर्माण" की संपादक श्रीमती रंजना चितले ने बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के संपादित अंश -

सवाल - लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में चुनाव एक अनिवार्यता है और लोकसभा चुनाव में निष्पक्ष मतदान के लिए आपकी क्या भूमिका रहेगी? इस भूमिका के निर्वहन के लिए चुनाव आयोग की क्या तैयारियां हैं?

जबाव - चुनाव आयोग द्वारा लोकसभा चुनाव की पूरी तैयारियां कर ली गई हैं। मध्यप्रदेश में चार चरणों में चुनाव होना है। पहले चरण का मतदान 19 अप्रैल, दूसरे चरण का 26 अप्रैल, तीसरे चरण में 07 मई को और चौथे चरण का मतदान 13 मई को होना है। मतगणना 4 जून को है। सभी मतदान केन्द्रों का भ्रमण, संबंधित अधिकारियों द्वारा किया जा रहा है। मतदान केन्द्र पर सभी आवश्यक सुविधाएं जैसे रैंप, फर्नीचर, बिजली, पानी, शौचालय आदि की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। मतदान से जुड़े अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण भी कई चरणों में दिलाये जाने की योजना है।

सवाल - विधानसभा चुनाव की तुलना में लोकसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत अधिक बढ़े इसके लिए क्या योजना है?

जबाव - विधानसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत 77.82 था जो वर्ष 2018 के विधानसभा चुनाव की तुलना में ढ़ाई प्रतिशत अधिक था। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में मध्यप्रदेश में 71 प्रतिशत मतदान हुआ था। हम पूरी तरह से प्रयारसत हैं कि वोटिंग प्रतिशत बढ़े। विधानसभा चुनाव के दौरान जिन क्षेत्रों में मतदान कम हुआ था वहां विशेष ध्यान दे रहे हैं। वर्गानुसार चिन्हित कर मतदान प्रतिशत बढ़ाने की योजना पर काम कर रहे हैं। पिछले दिनों जिन क्षेत्रों में कम मतदान हुआ है वहां 75 जागरूकता वाहनों को रवाना किया है, ताकि लोगों को मतदान के लिए जागरूक किया जा सके। यह वाहन चिन्हित जिलों में लोकसभा चुनाव संपन्न होने तक लोगों को मतदान के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

सवाल - आदर्श आचार संहिता का पालन पूरी कड़ाई के साथ हो, इसके लिये चुनाव आयोग ने क्या विशेष तैयारियां की हैं। सी-विजिल ऐप पर अब तक कितनी शिकायतें आईं और कितनी शिकायतों का निराकरण किया जा चुका है?

जबाव - चुनाव कार्यक्रम की घोषणा के साथ ही आदर्श आचार संहिता सक्रिय हो गई है। पुलिस एवं अन्य एन्फोर्समेंट एजेंसियों द्वारा लगातार कार्यवाही की जा रही है। अभी तक 1 करोड़ 58 लाख 76 हजार 450 रुपये नगद राशि सहित 31 करोड़ 92 लाख 54 हजार 401 रुपये मूल्य की सामग्रियां जब्त की गयी हैं। 6 लाख 58 हजार 157 लीटर मदिरा भी जब्त की गयी है, इसका मूल्य 10 करोड़ 56 लाख 21 हजार 800 रुपये है। इसके अलावा पहले चरण के मतदान वाले स्थानों पर ऑब्जर्वर पहुंचकर सक्रिय हो गये हैं। प्रत्याशियों द्वारा किये जा रहे खर्चे पर लगातार नजर है। सी-विजिल ऐप में लगभग 500 से अधिक शिकायतें मिली हैं। ऐप पर मिलने वाली शिकायतों का निराकरण 100 मिनट में किया जा रहा है।

सवाल - क्या आवश्यकतानुसार इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन उपलब्ध हैं, लोकसभा चुनाव की सफलता में कितना अमला लगेगा?

जबाव - प्रदेश में पर्याप्त संख्या में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन उपलब्ध हैं। मशीन की उपलब्धता को लेकर कहीं कोई संदेह नहीं है। लगभग साढ़े पांच लाख कर्मचारी मतदान की इस पूरी प्रक्रिया को सफल बनाने में सहयोग करेंगे।

सवाल - मतदाताओं का भयमुक्त होना जरूरी है, मतदाताओं को सुरक्षा प्रदान करने की दृष्टि से प्रदेश में कितने अतिसंवेदनशील मतदान केन्द्र चिन्हित किये गये हैं? इन क्षेत्रों में सुरक्षा को लेकर क्या व्यवस्था है?

जबाव - क्षेत्रीय अधिकारियों द्वारा लगातार मतदान केन्द्र पर नजर रखी गई है। एक क्षेत्रीय अधिकारी के पास 12 मतदान केन्द्र होते हैं। वल्नेरेबिलिटी मैपिंग के माध्यम से उन स्थानों को चिन्हित किया जाता है जहां पर मतदाता अपने आपको डरा हुआ महसूस कर रहा है। हम ट्रबल मेकर की पहचान कर उनके ऊपर कार्यवाही करते हैं। कलेक्टर, एसपी सहित वरिष्ठ अधिकारी मतदाताओं के बीच जाकर उन्हें मतदान के लिए प्रोत्साहित करते हैं। प्रदेश में कुल 65 हजार मतदान केन्द्र हैं, जिनमें से 15 हजार संवेदनशील मतदान केन्द्र हैं। इन मतदान केन्द्रों पर विशेष सुरक्षा व्यवस्थाएं की जायेंगी।

सवाल - मतदान के लिए वोटर आईडी कार्ड के अलावा कौन से दस्तावेज मान्य होंगे जिन्हें दिखाकर मतदान किया जा सकेगा?

जबाव - वोटर आईडी कार्ड के अतिरिक्त 12 प्रकार के दस्तावेज हैं जिनमें से आप कोई भी एक दस्तावेज लेकर आप मतदान कर सकते हैं, इनमें आधार कार्ड, मनरेगा जॉब कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, भारतीय पासपोर्ट, फोटो सहित पेंशन दस्तावेज, केंद्र एवं राज्य सरकार, पब्लिक लिमिटेड कंपनियों द्वारा कर्मचारियों को जारी किए गए फोटोयुक्त सेवा पहचान पत्र, बैंक, डाकघर द्वारा जारी फोटोयुक्त पासबुक, श्रम मंत्रालय की योजना के तहत जारी स्वास्थ्य बीमा स्मार्ट कार्ड, सांसदों, विधायकों, एमएलसी को जारी किए गए आधिकारिक पहचान पत्र और भारत सरकार के सामाजिक न्याय मंत्रालय द्वारा दिव्यांगजनों को जारी यूनिक डिसेबिलिटी आईडी का उपयोग कर मतदान किया जा सकता है।

(शेष पृष्ठ 9 पर)

टीबी उन्मूलन के लिए चिकित्सा अधिकारियों की प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न

भोपाल, टीबी उन्मूलन के लिए चिकित्सा अधिकारियों का प्रशिक्षण एवं उन्मुखीकरण राज्य क्षय प्रत्यक्षण एवं प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित हुआ। प्रशिक्षण में स्वास्थ्य विभाग, पुलिस, चिकित्सालय, गैस राहत चिकित्सालय, खुशीलाल, कस्तूरबा चिकित्सालय के चिकित्सक शामिल हुए। प्रशिक्षण में क्षय रोग के लक्षणों, जांच, टीबी ट्रीटमेंट प्रोटोकॉल, वयस्क बीसीजी टीकाकरण और टीबी उन्मूलन के लिए भारत सरकार के निर्देशों पर जानकारी दी गई। प्रशिक्षण को संबोधित करते हुए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी ने कहा कि मरीज में टीबी के लक्षणों की पहचान के लिए चिकित्सकों द्वारा स्क्रीनिंग के लिए पर्याप्त समय देना जरूरी है। मरीज से उसके लक्षणों को विस्तारपूर्वक जानना एवं परिवार की हिस्ट्री लेना भी आवश्यक है। दो सप्ताह की खांसी, दो सप्ताह का बुखार, वजन में कमी होना, बच्चों के वजन में बढ़ोतरी न होना, सीने के एक्सरे में असामान्यता होना, कफ के साथ खून आना, लिंफ ग्लैंड जैसे लक्षण दिखने पर स्पूटम टेस्ट करवाकर मरीज का फॉलोअप लेना जरूरी है। डॉ. तिवारी ने कहा कि टीबी मरीजों के साथ रह रहे परिजनों में संक्रमण होने की संभावना 10 प्रतिशत तक रहती है, इसलिए इलाज में लेटेंट टीबी को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए।

जिला क्षय उन्मूलन अधिकारी डॉ. प्रांजल खरे ने बताया कि वर्ष 2025 तक भारत से टीबी उन्मूलन किया जाना है। इसके लिए बीसीजी वैक्सीनेशन की शुरुआत की गई है। उन्होंने बताया कि टीबी वैक्सीनेशन से हर साल टीबी के मामले 17 प्रतिशत तक कम किए जा सकते हैं।

1962 में शुरू हुआ था टीबी कार्यक्रम

भारत में राष्ट्रीय टीबी कार्यक्रम की शुरुआत 1962 में की गई थी। 1997 में भारत सरकार द्वारा नेशनल टीबी प्रोग्राम को पुनरक्षित राष्ट्रीय क्षय नियंत्रण कार्यक्रम के रूप में परिवर्तित किया गया। इसी साल डॉट्स पद्धति की शुरुआत भी की गई। नेशनल स्ट्रैटेजिक प्लान 2017-25 के तहत टीबी उन्मूलन के लिए मरीज देखभाल केंद्रित गतिविधियां की जा रही हैं। जिसमें निजी क्षेत्र में इलाज करवा रहे प्रत्येक टीबी मरीज की जानकारी देना जरूरी किया गया है। प्रत्येक नए मरीज के अनिवार्य नोटिफिकेशन, प्रत्येक नोटिफाइड मरीज का पूरा इलाज, सपोर्टिंग सिस्टम को मजबूत करना शामिल किया गया है।

23 मार्च

ट्रम्प और बाइडेन ने जीते प्राइमरी चुनाव

● अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन और उनके प्रतिद्वंद्वी पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने-अपने दलों के प्राइमरी चुनाव जीत

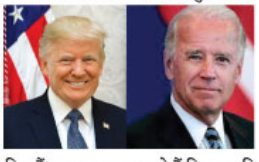

लिए हैं। यह चुनाव तय करते हैं कि राष्ट्रपति चुनाव में उनके बीच मुकाबला होगा। 77 वर्षीय ट्रम्प और 81 साल के बाइडेन ने एरिज़ोना, इलिनोइस, कन्सास और ओहायो में जीत हासिल की। ट्रम्प ने फ्लोरिडा में भी रिपब्लिकन प्राइमरी में जीत हासिल की जहां डेमोक्रेट अपने प्राइमरी चुनाव नहीं करा रहे हैं। अमेरिका में इस वर्ष नवंबर में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव होना है। चुनाव के नतीजों के बाद जनवरी, 2025 में नए राष्ट्रपति पदभार ग्रहण करेंगे।

● राष्ट्रीय पात्रता-सह प्रवेश परीक्षा (NEET PG) स्नातकोत्तर परीक्षा अब 23 जून को आयोजित होगी। पूर्व में यह 7 जुलाई को होने वाली थी। राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के स्नातकोत्तर मेडिकल शिक्षा बोर्ड (पीजीएमईबी) द्वारा आयोजित एक बैठक में यह निर्णय लिया गया। इस परीक्षा के परिणाम 15 जुलाई तक घोषित किए जाएंगे वहीं, काउंसलिंग 5 अगस्त से 15 अक्टूबर के बीच होगी। नया शैक्षणिक सत्र 16 सितंबर से प्रारंभ होगा और इसमें शामिल होने की आखिरी तारीख 21 अक्टूबर है।

● पश्चिमी जापान में यागागुची प्रांत के समुद्री क्षेत्र में केओयोंग सन नामक टैंकर जिस पर कोरियाई ध्वज था पलट गया। इस टैंकर के पलटने से 7 लोगों की मौत हो गई। टैंकर पर 11 गैर-जापानी चालक दल सवार थे। स्थानीय तट रक्षक स्टेशन अधिकारियों का कहना है कि उन्हें एक आपातकालीन फोन आया और जानकारी मिली कि खराब मौसम के कारण उनको मदद की जरूरत है।

24 मार्च

टैंकों के लिए पहला स्वदेश निर्मित इंजन का सफल परीक्षण

● मैसूरु में युद्धक टैंक के लिए पहले स्वदेश निर्मित इंजन का सफल परीक्षण किया गया।

यह इंजन 1500 हॉर्स पावर का है। रक्षा मंत्रालय का कहना है कि यह इंजन सैन्य प्रणोदन प्रणालियों में एक आदर्श बदलाव लाएगा। इस इंजन में शक्ति से वजन अनुपात, अधिक ऊंचाई पर, शून्य से नीचे तापमान में एवं रेगिस्तानी वातावरण सहित चरम स्थितियों में संचालन क्षमता है। नई तकनीक का होने की वजह से यह इंजन विश्व स्तर पर सबसे उन्नत इंजनों के समान है। रक्षा सचिव गिरिधर अरमाने ने कहा कि यह उपलब्धि देश में एक नये युग की शुरुआत है और यह इंजन देश की सैन्य क्षमता को बढ़ाएगा।

● दक्षिण कोरिया और अमेरिका दोनों देशों की सेना उत्तर कोरिया की सीमा से लगे पाजू शहर में इम्जिन नदी पर दो सप्ताह का अभ्यास कर चुकी हैं। इस संयुक्त अभ्यास का उद्देश्य दोनों देशों के सैनिकों की अंतर संचालनीयता को बढ़ाने के लिए एवं दक्षिण कोरियाई तथा अमेरिकी संयुक्त सैन्य उपकरणों तैनाती के माध्यम से परिचालन तरीकों को मजबूत करना है। समाचार एजेंसी योन्हाप की रिपोर्ट अनुसार, दो सप्ताह तक चलने वाले इस अभ्यास में शामिल सैनिकों की संख्या में दक्षिण कोरियाई सेना की 5वीं बख्तरबंद ब्रिगेड और अमेरिका की दूसरी इन्फैंट्री डिवीजन। आरओके-यूएस कंबाइंड डिवीजन के लगभग 470 सैनिक शामिल हैं। इसी रिपोर्ट के मुताबिक अभ्यास में यूएस सीएच-47डी चिनूक हेलीकॉप्टर एएच-64ई अपाचे लड़ाकू हेलीकॉप्टर, दक्षिण कोरिया के 1 ई 1 टैंक और कम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें भी शामिल हैं।

25 मार्च

आईआईटी मद्रास ने विकसित की ई-स्टैंडिंग व्हील चेयर

● आईआईटी मद्रास ने चलने-फिरने में असमर्थ लोगों के लिए विशेष प्रकार की

ई-स्टैंडिंग व्हील चेयर बनायी है। जो उन लोगों को खड़ा होने और बैठने में मदद करेगी, जिनको खड़ा होने और बैठने में परेशानी है। ई-स्टैंडिंग व्हील चेयर स्वदेशी तकनीक पर आधारित है। इस व्हील चेयर को 'नियो स्टैंड' नाम दिया गया है। इसे आईआईटी मद्रास के निदेशक प्रोफेसर वी. कामकोटि ने लॉन्च किया है। ज्ञात रहे कि नियो स्टैंड एक कॉम्पेक्ट स्टैंडिंग, व्हीलचेयर है जिसे मोटराइज्ड स्टैंडिंग मैकेनिज्म के माध्यम से संचालित किया जाता है।

● नीदरलैंड स्थित एम्सटर्डम विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने CRISPR नाम की तकनीक का इस्तेमाल कर एचआईवी के इलाज के लिए बड़ी सफलता पायी है। इस तकनीक को मॉलीक्यूलर सीजर के नाम से भी जाना जाता है। जिसका उपयोग वैज्ञानिकों ने एचआईवी के डीएनए को संक्रमित कोशिकाओं को काटने के लिए किया है। इसके मौजूदा इलाज में सिर्फ इस बीमारी को कंट्रोल किया जा सकता है, लेकिन पूरी तरह खत्म नहीं किया जा सकता है। नई तकनीक से वैज्ञानिकों ने इस बीमारी को पूरी तरह खत्म करने की उम्मीद जतायी है।

● गाजा में अब तक 22 हजार लोगों की मौत के बाद अमेरिका सीज फायर के लिए तैयार हो गया है। इजरायल-हमास पर जंग रोकने के मुद्दे पर अब अमेरिका अपना खुद का रेजोल्यूशन ला रहा है। अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी जॉन ब्लिंकन ने जानकारी दी है। इस रिजोल्यूशन में हमास की कैद से इजराइलियों की रिहाई होना प्रमुखता से रखा गया है। इससे पहले संयुक्त राष्ट्र के 3 प्रस्तावों को अमेरिका ने ठुकरा दिया था। ज्ञात रहे कि जंग रोकने के लिए पहला प्रस्ताव नवम्बर 2023 में माल्टा ने दिया था, दूसरी बार यूएई ने दिसंबर 2023 में और तीसरी बार नॉर्थ अफ्रीकी देश अल्जीरिया ने फरवरी 2024 में दिया था और तीनों बार अमेरिका ने वीटो का इस्तेमाल किया था।

26 मार्च

नियम तोड़ने के कारण एअर इंडिया पर लगा 80 लाख का जुर्माना

● एयर इंडिया द्वारा दो नियमों का उल्लंघन करने पर डीजीसीए (DGCA) ने एयरलाइंस

पर 80 लाख का जुर्माना लगाया है। उड़ान सेवा अवधि सीमित करने और चालक दल के थकान प्रबंधन प्रणाली से संबंधित मानदंडों का उल्लंघन करने की वजह से यह जुर्माना लगाया गया है। डीजीसीए के मुताबिक एयर इंडिया ने कुछ मामलों में 60 साल से अधिक उम्र के फ्लाइट क्रू के साथ उड़ानें भरी थीं। एयरलाइंस फ्लाइट क्रू को पर्याप्त आराम भी नहीं दिया था और लंबी उड़ानों से पहले और बाद में आराम देने में भी कोताही बरती। दरअसल डीजीसीए ने जनवरी में एयर इंडिया का ऑडिट किया था, जिसमें मिले सबूतों के आधार पर जुर्माना लगाया गया।

● दिन प्रतिदिन इलेक्ट्रॉनिक कचरा (ई-वेस्ट) बढ़ता जा रहा है। देखा जाए तो, 2010 से हर साल, ई-वेस्ट में पिछले साल की तुलना में 25 लाख टन की वृद्धि हो रही है और इस कचरे का केवल 20 प्रतिशत ही रिसाइकिल हो रहा है। दरअसल 2022 में दुनिया में 6.8 करोड़ टन ई-वेस्ट निकला था, जिसमें से केवल 1.5 करोड़ टन ही रिसाइकिल किया गया। जो कचरा रिसाइकिल नहीं हुआ, उसमें 7.57 लाख करोड़ की कीमती धातु भी मौजूद थी। संयुक्त राष्ट्र की 'द ग्लोबल ई-वेस्ट मॉनिटर 2024' के अनुसार ई-वेस्ट अगर इसी तरह से बढ़ता रहा तो 2030 तक 8.2 करोड़ टन पर पहुंच सकता है। इस कचरे का सिर्फ 20 प्रतिशत ही रिसाइकिल किया जा सकेगा, जिससे 3.32 लाख करोड़ का मेटल बर्बाद हो जाएगा। बता दें कि आमतौर पर हम अपने घरों, उद्योगों में जिन मोबाइल, लैपटॉप, टीवी, टेबलेट सहित दूसरे इलेक्ट्रॉनिक गैजेट और अन्य उत्पादों को इस्तेमाल के बाद फेंक देते हैं, वही बेकार फेंका हुआ कचरा, ई-वेस्ट कहलाता है।

● पत्रिका नेचर में प्रकाशित परिणाम के अनुसार गूगल का एआई सिस्टम 7 दिन पहले ही आने वाली बाढ़ की सफलतापूर्वक भविष्यवाणी कर सकता है। 2019 में पटना में आई बाढ़ की भी भविष्यवाणी इस एआई सिस्टम ने कर दी थी। यह सिस्टम अब 80 देशों में लगाया जा चुका है। असल में, बाढ़ के पूर्वानुमान के लिए गूगल ने पटना में, एआई प्रोजेक्ट आरंभ किया था। भारत में मिली सफलता के बाद इस प्रोजेक्ट को पहले बांग्लादेश और उसके बाद दुनिया के बाढ़ प्रभावित 79 देशों में शुरू किया गया। उल्लेखनीय है कि, गूगल ने ऐतिहासिक घटनाओं, नदी के स्तर की रीडिंग, ऊंचाई इलाके के डेटा इत्यादि के साथ इस सिस्टम को प्रशिक्षित किया, स्थानीयकृत मानचित्र तैयार किए और प्रत्येक स्थान के कई सिमुलेशन चलाए। इस व्यापक प्रशिक्षण के कारण यह तकनीक उन देशों में भी कामयाब है, जहां बाढ़ से जुड़े आंकड़े बहुत कम उपलब्ध हैं। एआई प्रोजेक्ट के कारण समय रहते मिली बाढ़ की चेतावनियां मौतों की संख्या कम करने में काफी मददगार साबित हो सकती हैं।

27 मार्च

ब्रिटेन की कोर्ट ने असांजे के प्रत्यर्पण पर किया इंकार

● ब्रिटेन की कोर्ट ने विकीलीक्स के संस्थापक जुलियन असांजे को जासूसी के आरोप में तुरंत अमेरिका को सौंपने से

मना कर दिया है। कोर्ट का कहना है कि जब तक अमेरिका यह आश्वासन नहीं दे देता है कि असांजे को मृत्युदंड नहीं दिया जाएगा, कोर्ट असांजे को प्रत्यर्पण से बचने के लिए अपील करने की अनुमति देगा। उल्लेखनीय है कि विकिलीक्स एक नॉन प्रॉफिट ऑर्गेनाइजेशन है, जिसे पत्रकार जूलियन असांजे ने 2006 में शुरू किया था। यह संस्था खुफिया जानकारी, न्यूज लीक और अज्ञात सूत्रों से मिली गोपनीय जानकारी प्रकाशित करने वाली संस्था के रूप में जानी जाती है।

● सीआईएससीई (CISCE) द्वारा पूर्व में 27 मार्च को आयोजित होने वाली 12वीं कक्षा की मनोविज्ञान की परीक्षा को स्थगित कर दिया गया है। अब यह परीक्षा 4 अप्रैल को दोपहर में 2 बजे आयोजित की जाएगी। सीआईएससीई की उपसचिव ने बताया कि एक केन्द्र से प्रश्न पत्र के पैकेट खोने की सूचना प्राप्त होने के कारण यह परीक्षा स्थगित की गई है। केन्द्रों को जल्द से जल्द प्रश्न पत्र संयोजक को सौंप देने को कहा गया है। इससे पहले भी बोर्ड ने 26 फरवरी को अप्रत्याशित परिस्थितियां बताते हुए 12वीं की रसायन विज्ञान की परीक्षा स्थगित कर दी थी।

28 मार्च

स्लोवाकिया में 6 अप्रैल को होगा राष्ट्रपति चुनाव के दूसरे दौर का मतदान

● स्लोवाक गणराज्य के सांख्यिकी कार्यालय के अनुसार स्लोवाकिया के पूर्व विदेश मंत्री इवान कोरकोक ने राष्ट्रपति

चुनाव के पहले दौर में 42.51 प्रतिशत वोट प्राप्त किए। उनके प्रतिद्वंद्वी स्लोवाक संसद के प्रमुख पीटर पेलोगिनी को 37.02 प्रतिशत वोट प्राप्त हुए। किसी भी उम्मीदवार को पूर्ण बहुमत नहीं मिलने के कारण, स्लोवाकिया में अगला राष्ट्रपति चुनने के लिए 6 अप्रैल को दूसरे दौर का मतदान होगा। बता दें कि कोरकोक मुखर रूप से यूक्रेन और एक मजबूत यूरोपीय संघ का समर्थन करते हैं। पेलोग्रिनी स्लोवाक के वर्तमान प्रधानमंत्री रॉबर्ट फिको के करीबी सहयोगी और यूक्रेनी संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान के समर्थक हैं।

● इंटरनेशनल एस्ट्रोनॉमिकल यूनियन (आईएयू) ने चंद्रयान-3 की लैंडिंग साइट को शिव शक्ति प्वाइंट कहलाए जाने की मंजूरी दे दी है। दरअसल, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 26 अगस्त 2023 को कहा था कि चंद्रयान-3 की लैंडिंग साइट को शिव शक्ति प्वाइंट कहा जाएगा। उल्लेखनीय है कि चंद्रयान-3 को श्रीहरिकोटा से 14 जुलाई को लॉन्च किया गया था। विक्रम लैंडर ने 23 अगस्त को शाम 6 बजकर 4 मिनट पर चंद्रमा पर लैंडिंग की और चंद्रमा पर तिरंगा फहराया। इसी उपलक्ष्य में 23 अगस्त को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी।

29 मार्च

स्पेन में टेलीग्राम एप पर लगी रोक

● स्पेन की राष्ट्रीय अदालत ने मीडिया कंपनियों के अनुरोध पर देश में मैसेजिंग

एप टेलीग्राफ को प्रतिबंधित कर दिया है। स्पेन की मीडिया कंपनी वैनगार्डिया द्वारा दी गई जानकारी के अनुरूप प्रमुख स्पेनिश मीडिया समूहों मेडिया सेट, एट्रेस मीडिया और मूविस्टार ने एक प्लेटफार्म पर बिना अनुमति के कॉपीराइट सामग्री छापने का आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज की थी।

● अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने 1.2 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर फंडिंग पैकेज कानून पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। यह हस्ताक्षर संघीय सरकार के आंशिक शटडाउन को टालने की समय-सीमा समाप्त होने के कुछ घंटों बाद किए गए। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा ने इस पैकेज को पारित किया और सीनेट ने इस पर अपनी स्वीकृति की मोहर लगा दी। व्हाइट हाउस ने एक बयान में कहा कि संघीय निधियों को दैनिक आधार पर खर्च और ट्रैक किया जाता है। कहा जा रहा है कि फंडिंग के बाद अब एजेंसियां बंद नहीं होंगी और अपना काम सुचारु रूप से करती रहेंगी।

(स्रोत : संपादकीय टीम द्वारा संकलित
फोटो : गूगल से साभार)

वर्ष 41, अंक 14 01.04.2024 से 07.04.2024

रोज़गार और निर्माण

www rojgaraurnirman.in

● प्रबंध संचालक - संदीप यादव
● सम्पादक - रंजना चितले
● प्रबंधक - वंदना चतुर्वेदी (विज्ञापन एवं प्रसार)
● प्रबंधक - सुभाष चन्द्र जोशी (मुद्रण)
● आकल्पन - अरविन्द टोप्पो
● वेबसाइट - आत्माराम शर्मा

वार्षिक सदस्य बनने के लिये रुपये 500/- (पाँच सौ) का डी.डी., मनीऑर्डर अथवा पोस्टल ऑर्डर रोज़गार और निर्माण, भोपाल के नाम बनवाकर नीचे लिखे पते पर भेजें :-
रोज़गार और निर्माण, मध्यप्रदेश माध्यम, 40 प्रशासनिक क्षेत्र, अरेरा हिल्स, भोपाल (म.प्र.) पिन-462011
फोन- 2760006, 2551330, 4281330, फैक्स - 4228409, **e-mail : madhyam.rojgar@gmail.com**
रोज़गार और निर्माण कार्यालय में नगद राशि जमा कर भी इसकी वार्षिक सदस्यता प्राप्त की जा सकती है। रोज़गार और निर्माण में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद के लिये न्यायालयीन अधिकार क्षेत्र भोपाल रहेगा। रोज़गार और निर्माण में निजी संस्थाओं के विज्ञापन भी प्रकाशित किये जाते हैं, इन विज्ञापनों में किए गए दावे और तथ्य निजी संस्थाओं के अपने होते हैं। इसका समाचार पत्र के प्रबंधन से कोई संबंध नहीं है।

सम्पादकीय

लोकतंत्र में चुनाव आयोग का दायित्व और युवाओं की भूमिका

देश में लोकतंत्र के सबसे बड़े उत्सव का शंखनाद हो गया है। आदर्श आचार संहिता के साथ देश में 19 अप्रैल को पहले चरण का मतदान होगा। इस बार लगभग 21.5 करोड़ युवा अपने मत का प्रयोग करने को लेकर उत्साहित हैं। लोकतंत्र में युवा मतदाताओं की भूमिका काफी अहम एवं निर्णायक होती है। जब तक प्रत्येक युवा मतदाता अपने संवैधानिक अधिकार के साथ-साथ कर्त्तव्य का प्रयोग सजगतापूर्वक नहीं करेगा तब तक किसी भी लोकतान्त्रिक प्रणाली वाले राष्ट्र का सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं है। मतदाता ही प्रजातंत्र का प्राण होता है जिसका जागरूक रहना बहुत जरूरी है। मतदान करने का अधिकार, स्वतंत्र भारत में हमारा बहुत बड़ा अधिकार है। आज के युवा ही कल के भविष्य हैं, उन्हीं पर पूरे देश की तस्वीर और तकदीर दोनों निर्भर करती हैं। जात-पात, सम्प्रदायवाद, लोभ-लालच और भय से ऊपर उठकर सब अपने वोट की ताकत का इस्तेमाल करते हुए प्रजातंत्र के नींव को मजबूत करें। चुनाव लोकतंत्र का आधार होता है, जो नागरिकों को अपना प्रतिनिधि चुनने का महत्वपूर्ण अधिकार देता है। युवाओं का चुनावी प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होना उनका कर्त्तव्य भी है। इतिहास साक्षी है सामाजिक परिवर्तन में युवाओं की बड़ी भूमिका रही है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए, मतदाता पंजीकरण से लेकर जमीनी स्तर पर प्रचार अभियान तक के प्रत्येक चरण में युवाओं की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है। एक युवा मतदाता की ऊर्जा और तकनीक-फ्रेंडली प्रकृति, चुनावी परिदृश्य को मजबूत बनाती है तथा नागरिकों की जरूरतों के अनुरूप पहुंच और उत्तरदायित्व को बढ़ाती है। युवा निर्वाचित प्रतिनिधियों को जवाबदेह बनाने एवं जनता से जुड़े मुद्दों का समर्थन करने तथा आवाज उठाने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा लोकतंत्र के महत्व और इसके प्रति निष्ठा की रक्षा करते हैं।

देश में निर्विघ्न चुनाव की प्रक्रिया को संपन्न कराने में चुनाव आयोग का महत्वपूर्ण योगदान होता है। संविधान सभा ने आयोग को अनुच्छेद 324 के अंतर्गत संवैधानिक दर्जा प्रदान किया है ताकि वह अपने कामकाज और निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकें। संस्था अब तक 18 लोकसभा चुनाव, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव सहित 400 से अधिक चुनाव संपन्न करवा चुकी है। एक जीवंत लोकतंत्र में चुनाव का स्वतंत्र, निष्पक्ष, नियमित और विश्वसनीय होना ही पर्याप्त नहीं है, उन्हें सर्वप्रिय होने के साथ-साथ सहभागी होना चाहिए ताकि शासन व्यवस्था पर उनका पूर्ण प्रभाव दिखे। देश की कुल आबादी में 66.76 फीसदी युवा हैं। चुनाव आयोग के आंकड़ों के मुताबिक 18 से 29 वर्ष आयु वर्ग में ढाई करोड़ से अधिक नए मतदाताओं ने पंजीकरण करवाया है। देश में कुल मतदाताओं का ग्राफ 96.88 करोड़ से अधिक तक जा पहुंचा है। मतदाता सूची के पुनरीक्षण में महिलाएं पुरुषों के मुकाबले मजबूत हैं। 2.63 करोड़ नए मतदाताओं ने रजिस्ट्रेशन करवाया है। उनमें से 1.41 करोड़ मतदाता महिला हैं। अगर वोटर्स के लैंगिक अनुपात की बात करें तो इस साल हजार पुरुषों के मुकाबले 948 महिला वोटर हैं। आयोग के मुताबिक 80 साल से अधिक उम्र के 1 करोड़ 85 लाख 92 हजार मतदाता हैं। जबकि 100 साल से ऊपर की उम्र वाले 2 लाख 38 हजार 791 मतदाता हैं। 1988 में पहले वोट देने की उम्र 21 साल थी, जिसे 1988 को 61वें संविधान संशोधन द्वारा 18 वर्ष कर दिया गया था। मतदान की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 साल इसलिए की गई ताकि देश के अधिक से अधिक युवाओं को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने और राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदार बनाने में मदद करने का अवसर मिले।

टेक्टोनिक शिफ्ट की वजह से अफ्रीकी महाद्वीप के होंगे दो हिस्से, बनेगा छठवां महासागर

देश दुनिया में तकनीक, विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में निरंतर प्रयोग किये जा रहे हैं। खास बात यह है कि इन प्रयोगों और शोधकार्यों के परिणाम भी अब सामने आने लगे हैं। पिछले दिनों महासागर को लेकर वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं की टीम ने बड़ी उपलब्धि प्राप्त की है। वैज्ञानिकों के अनुसार उन्होंने छठवें महासागर के बनने की वजह खोज ली है। यह महासागर अफ्रीका में बनेगा। यह महासागर हमारे ग्रह के भू-विज्ञान की गहराई से पड़ताल करता है। पृथ्वी 71 फीसदी पानी से ढकी हुई है, जिसमें पांच महासागर हैं। भू-वैज्ञानिकों के अनुसार अपने समृद्ध और विविध परिदृश्यों के साथ अफ्रीकी महाद्वीप एक दुर्लभ भूवैज्ञानिक घटना का अनुभव कर रहा है जो एक नए महासागर के निर्माण का कारण बन सकती है। यह प्रक्रिया अफार त्रिभुज में विकसित हो रही है। अफार त्रिभुज एक भू-वैज्ञानिक अवसाद है जहां तीन टेक्टोनिक प्लेटें-न्युबियन, सोमाली और अरब मिलती हैं। यह अफार क्षेत्र से लेकर पूर्वी अफ्रीका तक फैला हुआ है। यहां होने वाली प्रक्रिया टेक्टोनिक प्लेटों के धीरे-धीरे अलग होने का परिणाम है। वर्ष 2005 में एक महत्वपूर्ण घटना ने इस धीमी गति से चलने वाली प्रक्रिया का पता लगाया तब सभी को इसकी जानकारी प्राप्त हुई। इथियोपिया के रेगिस्तान में 35 मील लंबी दरार खुल गई, जो अफ्रीकी महाद्वीप के अलग होने का संकेत है। यह दरार गहराई में काम कर रही टेक्टोनिक ताकतों की सतही अभिव्यक्ति है, क्योंकि सोमाली प्लेट न्युबियन प्लेट से दूर चली जाती है, जिससे पृथ्वी की परत खिंचती और पतली होती जाती है। 2005 में इथोपियाई रेगिस्तान में उभरी दरार इस बात का संकेत थी कि अफ्रीका महाद्वीप विभाजित हो रहा है। भू-वैज्ञानिकों के अनुसार कुछ वर्षों बाद टेक्टोनिक की वजह से अफ्रीकी महाद्वीप दो भागों में विभाजित हो जाएगा, जिससे एक नया महासागर बेसिन बन जाएगा। पानी का यह नया भंडार अफार क्षेत्र और पूर्वी अफ्रीकी दरार घाटी में लाल सागर और अदन की खाड़ी में आने वाली बाढ़ का परिणाम होगा। इससे पूर्वी अफ्रीका का यह हिस्सा अपने अलग महाद्वीप में विकसित हो जाएगा। एक नए महासागर का निर्माण एक जटिल और लंबी प्रक्रिया है जिसमें महाद्वीप टूटने से लेकर मध्य-महासागरीय विकास तक दरार के विभिन्न चरण शामिल हैं।

- विकास तिवारी

(लेखक, प्रतियोगी परीक्षाओं से जुड़े विषयों पर लेखन करते हैं)

विश्व स्वास्थ्य दिवस - 7 अप्रैल

सेहत सबसे बड़ी नियामत है यह कभी मत भूलिये

''सेहत सबसे बड़ी नियामत है
यह कभी मत भूलिए।''

मानवमात्र के स्वास्थ्य को लेकर कही गई यह बात, स्वास्थ्य के महत्व को तो दर्शाती ही है साथ ही स्वस्थ बने रहने को प्रोत्साहित भी करती है। विश्व में स्वास्थ्य के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए, वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य प्रबन्धन को सुगठित करने के लिए और मानवमात्र द्वारा स्वस्थ जीवन को सर्वोच्च प्राथमिकता के रूप में संस्थापित करने के लिए ही प्रतिवर्ष 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। वर्ष 1948 को 7 अप्रैल के दिन विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक महत्वपूर्ण बैठक में यह प्रस्तावित किया गया था कि स्वास्थ्य के प्रति जन-जागरण के लिए एक दिन सुनिश्चित किया जाये। वर्ष 1950 से यह दिवस पूरे विश्व में 7 अप्रैल को मनाया जाने लगा। चूंकि विश्व स्वास्थ्य संगठन का स्थापना दिवस 7 अप्रैल ही है अतः विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विश्व स्वास्थ्य दिवस के लिए भी यही तिथि तय की। विश्व स्वास्थ्य दिवस वैश्विक समुदाय को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करने का वैश्विक अवसर प्रदान करता है। विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर स्वास्थ्य से जुड़ी प्रचार-प्रसार सामग्री पर केन्द्रित कार्यक्रम और विज्ञापन का प्रकाशन और प्रसारण किया जाता है। विश्व स्वास्थ्य दिवस पर मनुष्य के सम्पूर्ण स्वास्थ्य की बात की जाती है। सम्पूर्ण स्वास्थ्य का सम्बन्ध न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कुशलक्षेम से भी जुड़ा हुआ है। अगर किसी व्यक्ति के पास ये तीनों हैं, तो उसे ही स्वस्थ कहा जाएगा। स्वस्थ लोग अधिक उद्यमी होते हैं और लम्बे समय तक जीवित रहते हैं, रोगमुक्त होते हैं। विश्व स्वास्थ्य दिवस लोगों के सामान्य स्वास्थ्य और वेलबीइंग के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है।

प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल व्यापक और जरूरी प्रकल्प है

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर अब विश्व स्वास्थ्य संगठन के अधिकांश सदस्य देश-'प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल' के सूत्र का प्रयोग करते हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल प्रकल्प में व्यक्तियों, परिवार और समुदाय की आवश्यकताओं और परिस्थितियों पर केंद्रित स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं। यह एक व्यापक और अंतर्संबंधित भौतिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य से जुड़ा प्रकल्प है। यह प्रकल्प स्वास्थ्य आवश्यकताओं के लिए व्यक्ति को पूरे जीवन भर देखभाल मुहैया करवाता है। प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल व्यक्ति की व्यापक देखभाल तो सुनिश्चित करती ही है साथ ही प्रकल्प के प्रचार-प्रसार की व्यवस्था, उपचार का प्रबन्धन, पुनर्वास और जितनी सम्भव हो उतनी प्रशामक देखभाल भी करती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने जिन तीन घटकों पर आधारित प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल की निरंतर परिभाषा और उसका विकास किया है उन तीनों घटकों पर विश्व स्वास्थ्य दिवस पर विमर्श होता है। पहला घटक तो पूरे जीवनकाल में लोगों की स्वास्थ्य समस्याओं का व्यापक, निवारणात्मक, उपचारात्मक, पुनर्वासात्मक और प्रशामक देखभाल सुनिश्चित करना है। इसके अंतर्गत व्यक्तियों, परिवारों और जनसंख्या के आधार पर रणनीतिक रूप से मुख्य प्रणाली के कार्यों को सभी स्तरों पर एकीकृत किया जाता है। दूसरा घटक सभी क्षेत्रों में सामाजिक नीतियों के माध्यम से सम्पूर्ण स्वास्थ्य के

लक्ष्यों को स्वास्थ्य के व्यापक निर्धारकों- सामाजिक, आर्थिक वातावरण, लोगों की विशेषताओं और व्यवहार से जोड़ना और उसे प्राप्त करना होता है। तीसरा घटक स्वास्थ्य को महत्तम करने के लिए व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों का सशक्तिकरण करना होता है। इन तीन घटकों के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल पूरे विश्व में वैश्विक स्वास्थ्य कवरेज को प्राप्त करने के लिए सबसे कुशल और प्रभावी पद्धति है।

स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों पर केन्द्रित होती है थीम

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर प्रतिवर्ष एक थीम तय की जाती है। इस थीम का उद्देश्य उस वर्ष स्वास्थ्य से जुड़े किसी खास विषय की ओर सरकारों और स्वास्थ्य प्रशासन का ध्यान केन्द्रित करना होता है। इसे इस बात से समझा जा सकता है कि इस वर्ष 2024 में - ' मेरा स्वास्थ्य, मेरा अधिकार' थीम रखी है जो स्वास्थ्य को अधिकार निरूपित करती है। वर्ष 2023 की थीम- 'सभी के लिये स्वास्थ्य', वर्ष 2022 के लिये- 'हमारा ग्रह- हमारा स्वास्थ्य' और वर्ष 2021 में- 'सभी के लिए एक बेहतर और स्वस्थ दुनिया का निर्माण' थीम रखी गई जो कोरोना संक्रमणकाल में सर्वथा उपयुक्त थी। वर्ष 2020 में स्वास्थ्य विभाग के कार्यकारी ढांचे की सबसे अहम मानी जाने वाली स्वास्थ्य कार्यकर्ता दाई और नर्स पर ध्यान केन्द्रित किया गया। इस वर्ष की थीम थी - 'नर्सों और दाइयों का समर्थन' करें। वर्ष 2018 और वर्ष 2019 में एक ही थीम थी- 'यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज, हर कोई हर जगह'। विश्व स्वास्थ्य दिवस पर हृदय रोग से बचाव पर- 'दिल की धड़कन, स्वास्थ्य की एक लय', पोलियो के उन्मूलन के लिए- 'वैश्विक पोलियो उन्मूलन', बच्चों के स्वास्थ्य पर केन्द्रित- 'जीवन के भविष्य को आकार दें : बच्चों के लिए स्वस्थ वातावरण बनायें' जैसी थीम भी तय की गई हैं। इसके अलावा भी स्वस्थ जीवन, बेहतर जीवन के लिए स्वस्थ शहर, संक्रामक लोगों पर नियंत्रण, सुरक्षित मातृत्व, मानसिक स्वास्थ्य संरक्षण और 'जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से स्वास्थ्य की रक्षा करना' भी इस खास दिवस की थीम रही हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन का एक राष्ट्रीय मुख्यालय दिल्ली में भी है

विश्व स्वास्थ्य संगठन स्वास्थ्य के लिए संयुक्त राष्ट्र की एक विशेषज्ञ एजेंसी है। यह एक अंतर-सरकारी संगठन है, जो आमतौर पर सदस्य देशों के स्वास्थ्य मंत्रालयों के जरिए उनके साथ मिलकर काम करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन दुनिया में स्वास्थ्य संबंधी मामलों में नेतृत्व प्रदान करने, स्वास्थ्य अनुसंधान एजेंडा को आकार देने, नियम और मानक तय करने, प्रमाण आधारित नीतिगत विकल्प पेश करने, देशों को तकनीकी समर्थन प्रदान करने और स्वास्थ्य सम्बन्धी रुझानों की निगरानी और आकलन करने के लिए जिम्मेदार है। भारत में विश्व स्वास्थ्य संगठन का मुख्यालय दिल्ली में है और वह देशभर में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहा है। इस कार्यालय के कार्य क्षेत्र का वर्णन मुख्यालय स्थित विभिन्न देशों में इसकी कंट्री को-ऑपरेशन स्ट्रेटजी (सीसीएस) में दर्ज है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के भारत स्थित मुख्यालय मातृ, नवजात, बाल एवं किशोर स्वास्थ्य, संचारी रोग नियंत्रण, असंचारी रोग एवं स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारक, सार्वभौम स्वास्थ्य सेवा प्रसार, सतत विकास और स्वस्थ पर्यावरण, स्वास्थ्य तंत्रों का विकास, स्वास्थ्य सुरक्षा और आपातस्थितियों में स्वास्थ्य प्रबन्ध पर केन्द्रित है। इस मुख्यालय का नोडल मंत्रालय-भारत शासन का स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय है।

विश्व स्वास्थ्य के लिए जरूरी है यूएचसी का प्रभावी होना

पिछले कुछ सालों से विश्व स्वास्थ्य दिवस पर विश्व की सकल आबादी को बिना वित्तीय संकट के स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया करवाने के संयुक्त राष्ट्र ने वैश्विक स्वास्थ्य कवरेज (वर्ल्ड हेल्थ कवरेज) को और भी प्रभावी बनाने पर सतत विमर्श हो रहा है। यूएचसी का लक्ष्य सभी व्यक्तियों और समुदायों को वित्तीय कठिनाइयों से पीड़ित हुए बिना स्वास्थ्य सेवाएं दिलवाना है। इस कवरेज में स्वास्थ्य संवर्धन, उपचार, पुनर्वसन और पीड़ाहारक देखभाल की आवश्यक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवायें सम्मिलित होती हैं। यूएचसी सभी को स्वास्थ्य सेवाओं को प्राप्त करवाने में सक्षम बनाता है जो रोग और मृत्यु के सबसे महत्वपूर्ण कारणों से सम्बन्धित है और यह सुनिश्चित करता है कि इन सभी सेवाओं की गुणवत्ता उन लोगों के स्वास्थ्य को सुधारने के लिए पर्याप्त हो, जो इन्हें प्राप्त करते हैं। वर्ष 2015 में सतत विकास लक्ष्यों को अपनाते हुए यूएचसी को प्राप्त करना दुनिया के देशों के लक्ष्यों में से एक है। यूएचसी की ओर प्रगति करने वाले देश अन्य स्वास्थ्य संबंधी लक्ष्यों को भी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं अतः इस विश्व स्वास्थ्य दिवस पर भी यूएचसी को प्रभावी बनाने का विमर्श भी जारी रखा जाता है।

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर स्वास्थ्यप्रद जीवनशैली अपनाएं

स्वस्थ और लम्बी उम्र जीने के लिए आपकी जीवन शैली भी स्वास्थ्यप्रद और अच्छी होनी चाहिए। आपके खाने-पीने, उठने-बैठने, व्यायाम आदि करने की आदतें सभी परफेक्ट होनी चाहिए, तभी आप अधिक उम्र तक स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकते हैं। एक अच्छी जीवनशैली के लिए सबसे महत्वपूर्ण है अच्छा स्वास्थ्य लेकिन एक या दो दिन खानपान का परहेज करने या व्यायाम करने से कुछ फायदा नहीं होता है। बेहतर परिणाम के लिए आपको कुछ आदतों को रोजाना अपनाना होगा। अपनी जीवनशैली में कुछ ऐसे आहार को शामिल करना होगा, जो आपके लिए सचमुच काफी फायदेमंद हों। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपकी उम्र कम है या आप बुजुर्ग हैं। आपको हर दिन व्यायाम में कम से कम एक घण्टा तो देना ही पड़ेगा। इस तरह के व्यायाम करने से आपका हृदय मजबूत होता है। एक उपयुक्त व्यायाम में कार्डियो और ट्रेनिंग दोनों ही आते हैं। एक उचित आहार योजना शरीर के आदर्श वजन को प्राप्त करने और मधुमेह, हृदय और अन्य प्रकार के कैंसर जैसी जटिल बीमारियों के जोखिम को कम करने में मदद करती है।

राजा दुबे
(लेखक- जनसंपर्क विभाग से सेवानिवृत्त संयुक्त संचालक हैं।)

लोकसभा निर्वाचन 2024

देश की अखंडता, एकता और लोकतंत्र का जीता जागता प्रमाण हैं चुनाव

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में लोकसभा चुनाव 2024 की घोषणा हो गई है। 7 चरणों में होने वाले इन चुनावों में करीब 96.8 करोड़ मतदाता अपने मत का प्रयोग करेंगे। पहले चरण की वोटिंग 19 अप्रैल और सातवें चरण की वोटिंग 1 जून को होगी। 4 जून को नतीजे आएंगे। निर्वाचन कार्यक्रम की घोषणा के साथ ही देश भर में आदर्श आचार संहिता तत्काल प्रभाव से लागू हो गई है। विविध सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि वाले भारत में चुनाव नई सरकार के गठन की सिर्फ एक प्रक्रिया नहीं, बल्कि यह देश की एकता, अखंडता, लोकतंत्र और पारदर्शिता का जीता जागता प्रमाण है, जो पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचते हैं। अपनी विविधता और सामाजिक-राजनीतिक ताने-बाने के साथ भारत की चुनावी प्रक्रिया पारदर्शिता, निष्पक्षता, विचारधारा, पहचान और आकांक्षा के कई रंगों से बुनी हुई है।

लोकसभा और चुनाव

लोकसभा भारत की संसद का निचला सदन है। इसके सदस्यों को भारत की जनता द्वारा सीधे चुनाव प्रक्रिया के माध्यम

से चुना जाता है। ये चुनाव हर पांच साल में होते हैं। भारत के लोकसभा चुनावों की यात्रा और लोकतंत्र की जड़ें ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से लेकर आजादी के संघर्ष तक में खोजी जा सकती हैं। देश ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की मांग और एक लोकतांत्रिक ढांचे की नींव रखी। यह जाति, पंथ या लिंग से परे हर नागरिक को मताधिकार प्रदान करता है। भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने वाली संविधान सभा ने लोकतंत्र, समानता और न्याय के सिद्धांतों को अपने मार्गदर्शक स्तंभों के रूप में स्थापित किया। अपने उद्घाटन सत्र के बाद से लोकसभा भारत के राजनीतिक विकास की धुरी रही है। यह मतदाताओं की इच्छा को प्रतिबिंबित करती है और जनादेश के माध्यम से देश की नियति को आकार देती है। संविधान सभा द्वारा रखी गई नींव आजादी के इतने साल बाद भी मजबूती के साथ खड़ी है। आजादी के बाद 1952 में हुआ पहला आम चुनाव एक ऐतिहासिक पल था, क्योंकि इस समय भारत स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने वाला दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बना। तब से अब तक कई चुनौतियों के बावजूद लोकसभा चुनाव नियमित रूप से होते रहे हैं।

कब अस्तित्व में आई लोकसभा

भारत में 543 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र हैं। प्रत्येक का प्रतिनिधित्व लोकसभा में एक संसद सदस्य (सांसद) द्वारा किया जाता है। सीटों का आवंटन जनसंख्या पर आधारित होता है। वहीं संसद भारतीय राजनीति का एक निर्णायक स्तंभ है। भारतीय संसद में राष्ट्रपति, लोकसभा और राज्य सभा के सदस्य सम्मिलित होते हैं। लोकसभा को 'हाउस ऑफ द पीपल' भी कहा जाता है। यह कानून बनाने वाली भारत की सबसे बड़ी सभा है। लोकसभा के सदस्य लोकसभा के अध्यक्ष के नेतृत्व में काम करते हैं। यहां सभी जातियों, धर्मों और क्षेत्रों के लोग आते हैं और अपनी बात रखते हैं।

लोकसभा के माध्यम से समाज की समस्याओं, मुद्दों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर नये कानून और योजनाएं बनाई जाती हैं। भारतीय लोकसभा 17 अप्रैल, 1952 को अस्तित्व में आई और इसकी पहली बैठक 13 मई, 1952 को हुई। संसद में सिर्फ नये कानूनों का निर्माण नहीं किया जाता, बल्कि राष्ट्रीय नीतियों, अर्थव्यवस्था, समाज और सामाजिक विकास के हित में भी निर्णय लिए जाते हैं। भारतीय संसद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल एक निर्णायक संस्था है, बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र की आधारशिला है, जो न्याय, स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों को अटल बनाए हुए हैं।

चुनाव कराने की जिम्मेदारी

हर पांच साल में होने वाले लोकसभा चुनाव कराने की जिम्मेदारी भारत निर्वाचन आयोग की होती है। यह एक स्वायत्त संवैधानिक निकाय है, जो पूरी चुनावी प्रक्रिया की निगरानी करता है। आयोग चुनाव की निष्पक्षता, पारदर्शिता और अखंडता सुनिश्चित करता है। लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 14 के तहत चुनाव आयोग को वर्तमान लोकसभा का कार्यकाल खत्म होने से पहले लोकसभा चुनाव संपन्न कराने होते हैं। वर्तमान में जारी 17वीं लोकसभा का कार्यकाल 16 जून, 2024 को समाप्त होने जा रहा है। वहीं देश में लोकसभा चुनावों के साथ ही आंध्र प्रदेश, ओडिशा, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में विधानसभा चुनाव भी होने हैं। चुनाव आयोग ने लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 15 के तहत इन राज्यों में विधानसभा का कार्यकाल समाप्त होने से पहले विधानसभा चुनाव की घोषणा भी की है। चुनावी प्रक्रिया मतदान से कई महीनों पहले से ही शुरू हो जाती है। इसके तहत मतदाता पंजीकरण अभियान, आदर्श आचरण संहिता, प्रचार अभियान, उम्मीदवारों का नामांकन, मतदान केंद्र की तैयारियां आदि शामिल होती हैं।

कैसे तय होती है सीटों की संख्या

लोकसभा की सीटों का आवंटन जनसंख्या के आधार पर किया जाता है। यह प्रक्रिया भारतीय संविधान द्वारा निर्धारित है और यह सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक राज्य और केंद्र शासित प्रदेश को जनसंख्या के अनुसार न्यायसंगत और समान रूप से प्रतिनिधित्व मिले। जनसंख्या के आंकड़े लोकसभा की सीटों के आवंटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिस भी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश की आबादी अधिक होती है, उसे अधिक संख्या में सीटें मिलती हैं। इस प्रकार यह सुनिश्चित किया जाता है कि अधिकांश लोगों की आवाज को सुना जा सके और संवैधानिक प्रक्रिया में समानता बनी रहे। इसके लिए सरकार संविधान के अनुच्छेद 82 के प्रावधानों के अनुसार प्रभावी और निष्पक्ष निर्वाचन प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए परिसीमन अधिनियम पारित करती है। जनगणना के

पश्चात केन्द्र सरकार को संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं का निर्धारित करने के लिए परिसीमन आयोग का गठन करना होता है। यह परिसीमन आयोग केंद्र सरकार के निर्देशन और संविधान के प्रावधानों के अनुसार निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं का सीमांकन करता है। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं को निर्धारित करके निष्पक्ष और न्यायसंगत चुनाव प्रक्रिया को सुनिश्चित किया जाए। 2002 के परिसीमन अधिनियम के अनुसार भारत में वर्ष 2001 की जनगणना के आंकड़ों के आधार पर निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाएं निर्धारित की गई थीं। यह प्रक्रिया प्रत्येक दस वर्षों में नई जनगणना के बाद पुनः दोहराई जाती है, ताकि नए आंकड़ों के आधार पर नए निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाएं तय की जा सकें। हालांकि संविधान में वर्ष 2002 के एक विशेष संशोधन के माध्यम से यह निर्धारित किया गया है कि वर्ष 2026 के बाद होने वाली पहली जनगणना तक निर्वाचन क्षेत्रों का पुनः परिसीमन नहीं किया जाएगा। इसका मतलब है कि वर्तमान निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाएं वर्ष 2026 तक उसी रूप में बनी रहेंगी जैसे कि वर्ष 2001 की जनगणना के आंकड़ों के आधार पर निर्धारित की गई थीं। इस तरह जनसंख्या के आधार पर लोकसभा की सीटों के आवंटन में न्याय और समानता का सिद्धांत निहित है। यह सिर्फ एक सशक्त लोकतंत्र की मौलिक बुनियाद ही नहीं, बल्कि भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों की आवाज को सुनने का माध्यम भी है।

लोकसभा में आरक्षण

लोकसभा भारतीय लोकतंत्र की आधारशिला मानी जाती है। यहां देश के विभिन्न वर्गों की आवाज को सुना जाता है। इसका एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि सभी वर्गों और समुदायों को समान रूप से प्रतिनिधित्व मिले। इसी उद्देश्य को पूरा करते हुए भारतीय संविधान ने अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण का प्रावधान किया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 330 और लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 की धारा 3 के तहत लोकसभा में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए सीटों का आवंटन करने की व्यवस्था की गई है। यह प्रावधान सुनिश्चित करता है कि इन समुदायों को भी समान अवसर मिले और उनकी आवाज स्पष्टता से सुनी जाए। अनुसूचित जातियों के लिए लोकसभा में 84 सीटों का आरक्षण है, जबकि अनुसूचित जनजातियों के लिए 47 सीटों का आरक्षण है। यह सीटों का आरक्षण न केवल उन समुदायों के प्रतिनिधित्व को बढ़ाता है, बल्कि समाज में उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को भी सुधारता है। इस आरक्षण का उद्देश्य समाज में समानता और न्याय को प्राप्त करना है। यह न केवल उन समुदायों को सकारात्मक रूप से शामिल करता है, बल्कि उन्हें भारतीय लोकतंत्र के मूल तत्वों का हिस्सा भी बनाता है। इससे न केवल उनका आत्म-विश्वास बढ़ता है, बल्कि समाज की समृद्धि और विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। इस प्रकार अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए लोकसभा में सीटों का आरक्षण एक महत्वपूर्ण कदम है, जो सामाजिक समानता और न्याय को प्राप्त करने में मदद करता है। यह उनके प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करता है और उन्हें सकारात्मक दिशा में ले जाता है, जिससे भारतीय समाज समृद्धि की ओर प्रगति कर सके।

चुनावी प्रक्रिया

लोकसभा चुनाव एक व्यापक प्रक्रिया है, जिसमें भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई), राजनीतिक दल, सरकारी एजेंसियां, सुरक्षा बलों आदि का समन्वय शामिल होता है। चुनावी प्रक्रिया को मोटे तौर पर कई चरणों में विभाजित किया जा सकता है जैसे -

मतदाता पंजीकरण : योग्य नागरिकों को खुद को मतदाता के रूप में नामांकित करना आवश्यक है। नए मतदाताओं को शामिल करने और अपात्रों को हटाने के लिए मतदाता सूची को लगातार अपडेट किया जाता है।

चुनाव कार्यक्रम : ईसीआई लोकसभा चुनावों के कार्यक्रम की घोषणा करता है, जिसमें नामांकन दाखिल करने, जांच, उम्मीदवारी वापस लेने, मतदान और वोटों की गिनती जैसी विभिन्न गतिविधियों के लिए तारीखें निर्दिष्ट की जाती हैं।

उम्मीदवारों का नामांकन : राजनीतिक दल चुनाव लड़ने के लिए अपने प्रतिनिधियों की घोषणा करते हैं। इसके बाद तय समय तक उम्मीदवारों को अपना नामांकन दाखिल करना होता है। उम्मीदवारों की योग्यता और चुनावी कानूनों के अनुपालन को सत्यापित करने के लिए जांच की जाती है।

प्रचार अभियान : राजनीतिक दल और उम्मीदवार मतदाताओं को लुभाने के लिए रैलियां, रोड शो, सार्वजनिक बैठकें, घर-घर प्रचार और मीडिया विज्ञापनों जैसी विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करके प्रचार करते हैं।

मतदान : तय दिनांक पर मतदाता मतदान केंद्रों पर जाकर अपना मत डालते हैं। ईसीआई चुनाव अधिकारियों और सुरक्षाकर्मियों की सहायता से मतदान प्रक्रिया की निगरानी और कानून व्यवस्था सुनिश्चित करता है।

वोटों की गिनती : मतदान के समापन के बाद डाले गए वोटों की गिनती उम्मीदवारों या उनके एजेंटों की उपस्थिति में की जाती है। परिणाम निर्वाचन क्षेत्रवार घोषित किए जाते हैं। सबसे अधिक वोट हासिल करने वाले उम्मीदवार को उस निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले संसद सदस्य (सांसद) के रूप में निर्वाचित घोषित किया जाता है।

परिणामों की घोषणा

लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 भारतीय लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह निर्वाचन प्रक्रिया को व्यवस्थित और सुचारू बनाए रखता है। इस अधिनियम की धारा 64 के प्रावधानों के तहत मतों की गणना और परिणामों की घोषणा निर्वाचन क्षेत्र के रिटर्निंग ऑफिसर या उसके पर्यवेक्षण और निर्देशन के अधीन की जाती है। गणना के बाद रिटर्निंग ऑफिसर लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के उपबंधों के अनुसार परिणाम की घोषणा करता है। यह प्रक्रिया न केवल निर्वाचन प्रक्रिया की सख्ती और सुरक्षा को सुनिश्चित करती है, बल्कि लोकतंत्र के स्थायित्व और विश्वसनीयता को भी बनाए रखती है। गणना और परिणामों की घोषणा निष्पक्षता और विश्वसनीयता के मानकों के अनुसार की जाती है। इस प्रकार लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के प्रावधान निर्वाचन प्रक्रिया को संवेदनशीलता, निष्पक्षता और मजबूत आधार प्रदान करते हैं। यह न केवल लोकतंत्र की मजबूती को सुनिश्चित करता है, बल्कि लोगों को भी विश्वास दिलाता है कि उनके वोट का महत्व और प्रभाव हमेशा मायने रखता है।

राजपत्र में अधिसूचना

लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 73 एक ऐसी महत्वपूर्ण धारा है जो भारतीय लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करती है। इसे लोकसभा का गठन करने के लिए जिम्मेदार माना जाता है। जब सभी निर्वाचन क्षेत्रों के परिणाम घोषित हो जाते हैं। तब यह धारा अपनी महत्ता साबित करती है। धारा 73 के अनुसार, जब निर्वाचन प्रक्रिया पूरी होती है और सभी नतीजे घोषित होते हैं, तो भारत निर्वाचन आयोग के द्वारा चुने गए सदस्य के नामों को सरकारी राजपत्र में अधिसूचित किया जाता है। इससे यह पुष्टि होती है कि संविधान के अनुसार चुने गए प्रतिनिधियों को सरकारी मान्यता प्राप्त है और वे लोकसभा के सदस्य के रूप में कार्य कर सकते हैं। इस धारा का अनुपालन करने से न केवल नई सरकार का गठन संभव होता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि लोकतंत्र के मूल तत्वों को पूरा किया जाए।

- निशा त्यागी
(लेखिका, प्रतियोगी परीक्षाओं और समसामयिक मुद्दों पर लेखन करती हैं)

कैसे करें साक्षात्कार की तैयारी

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा राज्य सेवा परीक्षा 2021 के साक्षात्कार आगामी 18 अप्रैल से शुरू हो रहे हैं। इसके अलावा राज्य वन सेवा परीक्षा, कुलसचिव आदि पदों के लिए भी साक्षात्कारों के आयोजन प्रस्तावित हैं। इन परीक्षाओं में साक्षात्कार अंतिम और महत्वपूर्ण चरण होता है, जो आपके चयन में निर्णायक भूमिका निभाता है। आइये जानते हैं साक्षात्कार के लिए किन प्रमुख बिंदुओं पर ध्यान देकर सफलता सुनिश्चित की जा सकती है।

क्या होता है साक्षात्कार

साक्षात्कार अर्थात इंटरव्यू, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, इंटर यानी 'आतंरिक' और व्यू का मतलब 'मूल्यांकन'।

अतः यहाँ सिर्फ आपके ज्ञान को ही नहीं परखा जाता, बल्कि उस ज्ञान का आपके व्यक्तित्व निर्माण में कितना असर है इसकी भी जांच की जाती है। ज्ञान की कसौटी पर आप स्वयं को लिखित परीक्षा में पूर्व में ही साबित कर चुके होते हैं। राज्य सेवा परीक्षा में 175 अंकों का साक्षात्कार होता है, जिसे नवीन पाठ्यक्रम में बढ़ाकर 185 अंकों का कर दिया गया है, जो कि वर्ष 2024 की परीक्षाओं से लागू होगा।

जबकि आयोग द्वारा लिए जाने वाले अधिकांश अन्य परीक्षाओं के साक्षात्कार 50 अंकों के होते हैं, जिनमें राज्य वन सेवा, सहायक लोक अभियोजन अधिकारी, कुलसचिव, सहायक संचालक आदि शामिल हैं।

आवश्यक दस्तावेज

आयोग द्वारा साक्षात्कार तिथियों की घोषणा के साथ ही सत्यापन हेतु कुछ दस्तावेजों एवं प्रपत्रों की सूची आयोग की वेबसाइट पर जारी की जाती है, जिसे भरकर निर्धारित दिनांक तक आयोग कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से अथवा स्पीड पोस्ट के माध्यम से भेजना होता है। इन दस्तावेजों में हाईस्कूल, हायर सेकेंडरी स्कूल तथा ग्रेजुएशन की अंकसूची व डिग्री की छायाप्रति, व्यक्तिगत विवरण पत्रक, उपस्थिति पत्रक तथा अनुप्रमाण पत्रक प्रमुख होते हैं।

अभ्यर्थियों को इन्हें बड़ी सावधानीपूर्वक भरना चाहिए क्योंकि बोर्ड पैनल के समक्ष आपके यही प्रपत्र (विशेषकर व्यक्तिगत विवरण) रखे जाते हैं। इसके अलावा साक्षात्कार के दिन अभ्यर्थियों को अपने साथ सभी मूल दस्तावेजों को भी ले जाना होता है, जहाँ सबसे पहले उनका सत्यापन किया जाता है तदुपरांत आगे की प्रक्रिया होती है।

कैसा हो अपीयरेंस

यहाँ आपके पहनावे और दिखने का भी महत्व होता है। पुरुष अभ्यर्थियों को फॉर्मल शर्ट-पेंट टाई- बेल्ट, शूज और मैचिंग सॉक्स पहनने चाहिए।

सिर के बाल अच्छी तरह से सेट हों और क्लीन शेव लुक को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। वहीं महिला अभ्यर्थियों को खादी या सूती साड़ी अथवा सूट पहनना चाहिए। गले या हाथ में पहने जाने वाले किसी भी प्रकार के रत्न, आभूषण आदि से बचना चाहिए। फिर भी यदि उन्हें धारण करना आवश्यक हो तो उनसे सम्बंधित प्रश्नों के लिए खुद को तैयार रखें।

क्या हो रणनीति

प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा से इतर साक्षात्कार का दायरा कहीं अधिक विस्तृत और खुला हुआ होता है। अतः किसी निश्चित पाठ्यक्रम में बंधकर इसकी तैयारी नहीं की जा सकती। वस्तुतः यह आपके व्यक्तित्व का परीक्षण अधिक होता है, जिसमें आपके अंदर प्रशासनिक अभिक्षमता, निर्णय निर्माण योग्यता और आपके संचार कौशल का अवलोकन किया जाता है। हालांकि व्यक्तित्व निर्माण कुछ दिनों में या किसी तैयारी से नहीं होता, बल्कि इसकी प्रक्रिया तो आपके समाजीकरण के साथ ही शुरू हो जाती है, किन्तु फिर भी, सिविल सेवा परीक्षा के लिए अध्ययन के दौरान विभिन्न

आयामों के बारे में जानकारी हो जाने के उपरान्त गंभीर अभ्यर्थी में परिपक्वता का बीजारोपण तो हो ही जाता है। इसलिए पाठ्यक्रम में दिए गए सामान्य अध्ययन के कुछ महत्वपूर्ण टॉपिक्स के अतिरिक्त हाल-फिलहाल में चल रहे ज्वलंत मुद्दों पर अपनी मजबूत पकड़ बनायें। इसके लिए आप पिछले करीब एक महीने के समाचार-पत्रों को बहुत अच्छी तरह से पढ़ें, इसमें भी सम्पादकीय और अच्छे आलेखों को पढ़ कर उन मुद्दों पर अपनी समझ को विकसित कर रचनात्मक विश्लेषण क्षमता को बढ़ाने का प्रयास करें।

आपसे इन विषयों पर आपका दृष्टिकोण, राय या सुझाव भी पूछे जा सकते हैं, ऐसे में यह जरूरी है कि आपके द्वारा दिए जाने वाला उत्तर सृजनात्मक, संतुलित और सकारात्मक हो। वर्तमान परिदृश्य में देखा जाए तो लोकसभा चुनाव तथा इससे जुड़े विषय जैसे एक राष्ट्र एक चुनाव, ईवीएम की विश्वसनीयता, इलेक्टोरल बांड आदि, आत्मनिर्भर भारत 2047, आर्थिक सर्वेक्षण और बजट तथा लेखानुदान, आई.पी.एल.डब्ल्यू.पी.एल. आदि ऐसे कुछ प्रमुख घटनाक्रम हैं जिन पर अभ्यर्थी को अवश्य संभावी रूप से प्रश्नों के लिए तैयार रखना चाहिए।

इसके अतिरिक्त अपने व्यक्तिगत विवरण पत्रक पर भी अनिवार्य रूप से काम करें। अपने नाम, जन्मतिथि (यदि कोई विशेष तिथि या वर्ष हो तो), जन्मस्थान, गृह जिले व स्कूल-कॉलेज से सम्बंधित पूछे जा सकने वाले प्रश्नों की सूची बनाकर उन्हें तैयार कर लें। एक और क्षेत्र जहाँ से प्रश्नों के पूछे जाने की प्रबल सम्भावना रहती है वो है व्यक्तिगत विवरण में आपके द्वारा बताई गई अपनी अभिरुचि या 'हॉबी'।

वस्तुतः यह शायद एकमात्र ऐसा विषय है जिस पर पूछे जा सकने वाले प्रश्नों का निर्धारण आप स्वयं कर सकते हैं। यदि आप चाहते हैं कि इस सन्दर्भ में बोर्ड आपसे ज्यादा बात करें तो आप एक से अधिक हॉबी लिख सकते हैं। लेकिन ऐसा करते समय यह सावधानी जरूर बरतें कि उस विधा में वास्तव में आप पारंगत हैं और उससे जुड़े लगभग प्रत्येक पहलू पर जानकारी रखते हैं, अन्यथा आपको यह भारी भी पड़ सकती है।

राज्य व गृह जिले विशेष से सम्बंधित तथ्यों को अधिक महत्व देते हुए इनसे जुड़े आंकड़ों, डाटा, रिपोर्ट्स, जननांकिकी व प्रमुख सूचकांकों की जानकारी आपके पास होनी चाहिए। इसके लिए आप भारत सरकार के नीति आयोग, पत्र सूचना कार्यालय (PIB) तथा मंत्रालयों की आधिकारिक वेबसाइट की सहायता ले सकते हैं। इसी प्रकार मध्यप्रदेश से जुड़ी प्रामाणिक जानकारी के लिए जनसम्पर्क कार्यालय तथा NIC वेबसाइट का उपयोग किया जा सकता है।

अपनी तैयारी के सतत मूल्यांकन तथा कमजोर पक्ष को जानने के लिए आपको कुछ मॉक इंटरव्यू भी देने चाहिए। इसके लिए आप शुरुआती दौर में अपने सहपाठियों, दोस्त, रिश्तेदारों या परिवार के सदस्यों के समक्ष भी अभ्यास कर सकते हैं। साक्षात्कार के लिए 'मिरर टेक्निक' काफी कारगर मानी जाती है, जिसमें आप स्वयं को दर्पण के सामने प्रस्तुत कर अपनी भाव-भंगिमाओं को अपने उत्तर के अनुरूप बनाने का अभ्यास कर सकते हैं। यूट्यूब पर भी अच्छे मॉक इंटरव्यूज को देखकर आप इससे जुड़ी बारीकियों को सीख सकते हैं। अंतिम दिनों में यदि संभव हो तो किसी संस्थान विशेष से जुड़कर विषय विशेषज्ञों से मार्गदर्शन लिया जा सकता है।

साक्षात्कार के दिन

चूँकि राज्य लोक सेवा आयोग से जुड़े समस्त साक्षात्कारों का आयोजन आयोग के मुख्यालय यानी इंदौर में होता है, इसलिए यदि आप अन्यत्र कहीं से आ रहे हैं तो बेहतर होगा कि 1-2 दिन पूर्व ही इंदौर पहुँच जाएँ। उक्त दिन पहने जाने वाले कपड़े और साथ में ले जाने वाले दस्तावेजों की फाइल को एक रात पहले ही अच्छे से क्रॉस चेक करके तैयार कर लें। रात को ज्यादा न पढ़कर पर्याप्त नींद लें और सुबह समय से तैयार होकर हल्का नाश्ता करें।

उस दिन के समाचार-पत्र को जरूर पढ़ें और मुख्य पृष्ठ की कम से कम 5 प्रमुख खबरों को याद रखने का प्रयास करें। कई बार देखा गया है कि पैनल शुरू में ही उस दिन के अखबार के बारे में प्रश्न पूछ लेते हैं। निर्धारित समय पर पहुंचने के बाद सबसे पहले आयोग द्वारा बताये गए दिशा-निर्देशों का पालन करें। दस्तावेजों के सत्यापन के उपरान्त अपनी बारी आने तक शांत चित्त होकर स्वयं को ऊर्जावान बनाये रखें। साथीगणों से ज्यादा वार्तालाप या पूछे जा रहे प्रश्नों पर चर्चा करने से बचें क्योंकि ऐसा करने पर आप बेवजह तनाव का अनुभव कर सकते हैं। अपना नाम पुकारे जाने पर आराम से बोर्ड कक्ष की ओर आगे बढ़ें और एंट्री लेते वक़्त अनुमति लें। अंदर जाने पर सर्वप्रथम बोर्ड अध्यक्ष का अभिवादन करें, यदि बोर्ड में कोई महिला सदस्य हैं तो आप उनको पहले अभिवादन भी कर सकते हैं। तदनुपरांत अन्य सभी सदस्यों का अभिवादन करें। जब आपको बैठने के लिए कहा जाये, तभी कुर्सी पर बैठें। बैठने की अनुमति मिलने के पश्चात् धन्यवाद देते हुए कमर को सीधा रखकर आराम से बैठने का प्रयास करें। यदि आपको कोई असुविधा हो रही है तो आप इसके लिए अपना समय ले सकते हैं। साक्षात्कार के दौरान प्रश्नकर्ता से 'आई कांटेक्ट' बनाये रखते हुए अपने उत्तर दें, यह आपके आत्म-विश्वास को दर्शाता है। साथ ही, यदि संभव हो तो बीच-बीच में अन्य सदस्यों को भी देखकर अपना उत्तर देने का प्रयास करें, हालांकि यह जरूरी नहीं है। प्रश्नोत्तर के दौरान किसी भी प्रश्न का उत्तर न आने पर आपको विनम्रतापूर्वक क्षमा मांगनी चाहिए। आपके इस व्यवहार में यह दिखना भी चाहिए कि आपने इसके लिए प्रयास किया किन्तु इस वक्त रिकॉल करने में असमर्थ हैं।

किसी भी प्रकार की अस्पष्टता होने पर आप पैनल से माफी मांगते हुए अपने प्रश्न को दोहराने का अनुरोध भी कर सकते हैं। साक्षात्कार की यह प्रक्रिया सामान्यतः 20-30 मिनट चलती है। हालाँकि इससे कम या अधिक समय भी लग सकता है। अंत में आपको जाने के लिए कहे जाने पर आपको खड़े होकर एक बार फिर से सभी बोर्ड सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए अभिवादन करना चाहिए तथा बिना पीछे मुड़े दरवाजे की ओर बढ़कर बाहर आ जाना चाहिए।

किन बातों पर ध्यान नहीं देना है

1. कई बार बोर्ड के सम्बन्ध में अनेक पूर्वाग्रह व भ्रांतियां बनी होती हैं, जिन पर ध्यान न देते हुए अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास करें।
2. पैनल को प्रभावित करने के लिए अति-आदर्शवादी न बनें। कोशिश करें कि आपका उत्तर व्यावहारिक, वास्तविक, मध्यमार्गी और सकारात्मक हो।
3. यदि साक्षात्कार अच्छा नहीं भी जा रहा हो तो घबरायें नहीं और न आने वाले उत्तरों पर 'सॉरी' बोलने से भी न हिचकें। गलत उत्तर देने से अच्छा अपनी कमी को स्वीकारते हुए उस पर आगे ध्यान देने का आश्वासन देना कहीं बेहतर है। हर प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक नहीं है, लेकिन दिए गए हर उत्तर पर आपका विश्वास झलकना चाहिए।

कई बार देखा जाता है कि लिखित परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने के बावजूद साक्षात्कार में कम अंक मिलते हैं और कई बार कुछ अंकों की कमी के चलते अपेक्षाकृत निम्न पद पर चयन होने पर संतोष करना पड़ता है। अतः इस चरण को अत्यंत गंभीरता से लें। अति आत्मविश्वास से बचें, नेचुरल रहें और विनम्रतापूर्वक अपना पक्ष रखें।

अंत में कुंवर नारायण की प्रसिद्ध कविता **'अंतिम ऊंचाई'** की इन पंक्तियों के साथ शुभकामनाओं सहित.....

दुर्गम वनों और ऊँचे पर्वतों को जीतते हुए
जब तुम अंतिम ऊँचाई को भी जीत लोगे
जब तुम्हें लगेगा कि कोई अंतर नहीं बचा अब
तुममें और उन पत्थरों की कठोरता में
जिन्हें तुमने जीता है
जब तुम अपने मस्तक पर बर्फ का पहला
तूफान झेलोगे
और काँपोगे नहीं
तब तुम पाओगे कि कोई फर्क नहीं
सब कुछ जीत लेने में
और अंत तक हिम्मत न हारने में

● शशांक त्रिपाठी
(लेखक, प्रतियोगी परीक्षाओं और समसामयिक मुद्दों पर लेखन करते हैं।)

इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक

पद का नाम - एग्जीक्यूटिव
पदों की संख्या - 47
योग्यता - किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से ग्रेजुएशन की डिग्री।
अंतिम तिथि - 05 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://www.ippbonline.com/hi/web/ippb/

ओडिशा आदर्श विद्यालय संगठन

पद का नाम - प्राचार्य, पीजीटी फिजिक्स, पीजीटी केमिस्ट्री, पीजीटी बायोलॉजी, पीजीटी मैथमेटिक्स, पीजीटी कॉमर्स, पीजीटी कंप्यूटर साइंस, टीजीटी अंग्रेजी, टीजीटी मैथमेटिक्स, टीजीटी साइंस, टीजीटी सोशल स्टडी, आर्ट टीचर, पीईटी, कंप्यूटर टीचर
पदों की संख्या - 1342
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 30 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://www.oav.edu.in/

ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

पद का नाम - एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर
पदों की संख्या - 100
योग्यता - संबंधित फील्ड में ग्रेजुएशन की डिग्री।
अंतिम तिथि - 12 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://orientalinsurance.org.in/

राजस्थान लोक सेवा आयोग

पद का नाम - सहायक अभियोजन अधिकारी
पदों की संख्या - 181
योग्यता - लॉ (प्रोफेशनल) में डिग्री या इंटीग्रेटेड लॉ कोर्स किया होना चाहिए।
अंतिम तिथि - 12 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://rpsc.rajasthan.gov.in/

प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद

पद का नाम - पर्यवेक्षक (मुद्रण), पर्यवेक्षक (त. नियंत्रण), पर्यवेक्षक (सभा), कनि. कार्यालय सहायक, कनि. तकनीशियन (मुद्रण/नियंत्रण, फिटर, वेल्डर, इलेक्ट्रॉनिक्स/इंस्ट्रूमेंटेशन), अग्निशामक (आरएम)
पदों की संख्या - 96
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 15 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://spphyderabad.spmcil.com/hi/

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान

पद का नाम - लेखा अधिकारी, अनुभाग अधिकारी - ग्रेड II, कार्मिक सहायक, संपदा सहायक, सहायक अनुभाग अधिकारी, वरिष्ठ सचिवालय सहायक (एसएसए)
पदों की संख्या - 20
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 18 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://nitttrchd.ac.in/

भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान, पुणे

पद का नाम - आईआईटीएम अनुसंधान सहयोगी, आईआईटीएम अनुसंधान अध्येता
पदों की संख्या - 30
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 15 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://www.tropmet.res.in/

राष्ट्रीय पौध स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान

पद का नाम - संयुक्त निदेशक (पौध संरक्षण)
पदों की संख्या - 01
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 08 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://niphm.gov.in/

भारतीय सांख्यिकी संस्थान

पद का नाम - ड्राइवर, बाइंडर, सहायक (पुस्तकालय)
पदों की संख्या - 06
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 16 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://www.isical.ac.in/hi/home

उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग

पद का नाम - स्केलर
पदों की संख्या - 200
योग्यता - विधि द्वारा स्थापित बोर्ड/परिषद् या उत्तराखंड राज्य स्थित मान्यता प्राप्त विद्यालय से 12वीं या समकक्ष स्तर की परीक्षा (विज्ञान या गणित विषय के साथ) पास होना चाहिए। आयु 18 वर्ष से 28 वर्ष तक।
अंतिम तिथि - 08 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://sssc.uk.gov.in/

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

पद का नाम - अप्रेंटिस (कारपेंटर, कोपा, ड्राफ्ट्समैन, इलेक्ट्रीशियन, इलेक्ट्रॉनिक/मैकेनिक, फिटर, मशीनिष्ट, पेंटर, प्लंबर, शीट मेटल वर्कर, स्टेनोग्राफर, डीजल मैकेनिक, टर्नर, वेल्डर, वायरमैन आदि)
पदों की संख्या - 700
योग्यता - 10वीं/12वीं पास होने के साथ संबंधित ट्रेड में आईटीआई किया होना चाहिए। न्यूनतम आयु 15 साल और अधिकतम आयु 24 साल।
अंतिम तिथि - 12 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://www.apprenticeshipindia.gov.in/

एडमिशन अलर्ट

सेंटर फॉर एडवांस्ड मैनेजमेंट एंड पावर स्टडीज

पाठ्यक्रम का नाम - पॉवर मैनेजमेंट में एमबीए
योग्यता - वैध CAT/CMAT/MAT/XAT/GMAT स्कोर कार्ड हो, मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से कम से कम 60% अंक के साथ स्नातक
अंतिम तिथि - 10 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://npti.gov.in/

प्रतियोगिता

माइक्रो स्टोरी कॉन्टेस्ट 2024

किनके लिए - 18 वर्ष से अधिक उम्र के उम्मीदवार आवेदन कर सकते हैं।
योग्यता - किसी भी थीम पर स्टोरी लिखी जा सकती है। आवेदक अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रेंच या पुर्तगाली भाषा में स्टोरी भेज सकते हैं।
क्या मिलेगा - विजेता को 750 यूरो (67 हजार रुपये) दिए जाएंगे। दूसरे स्थान पर आने वाले उम्मीदवार को 375 यूरो (34 हजार रुपये) और तीसरे स्थान पर आने पर 225 यूरो (20 हजार रुपए) दिए जाएंगे।
अंतिम तिथि - 16 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://www.casafrica.es/en/event/purorrelato-2024-concurso-de-microrrelatos

(स्रोत : संपादकीय टीम द्वारा संकलित)

सृष्टि संरचना में जल का महत्व और जल संरक्षण के प्रयास

जल हमारी प्रकृति की अनमोल धरोहर है। जल के बिना न सृष्टि की संरचना संभव है और न ही प्राणियों का अस्तित्व। जीवन के मूल में जल है। जल से ही जीवन का उद्भव हुआ है। समूची सृष्टि में, पर्यावरण में जीवन का आधार जल ही है। प्रत्येक प्राणी के स्थूल शरीर में 70 प्रतिशत भाग जल का ही है। यह जल धरती पर पाये जाने वाले पदार्थों में सबसे साधारण है, लेकिन गुणों में असाधारण और सर्वश्रेष्ठ है। हम सभी जल की आवश्यकता और जल के महत्व को जानते हैं और मायने भी समझते हैं लेकिन जल के मूल्यों को लेकर अभी भी अनभिज्ञ हैं।

जल संरक्षण पर हो रही चर्चा

यहां जल के मूल्य से मतलब जल के संबंध में हमारी सोच से है। आज भले ही जल की उपलब्धता में कमी नहीं है लेकिन भविष्य की तस्वीर को देखते हुए हमारा निश्चिंत होना हमारी नाकामी जाहिर करता है। आज विश्वभर में जल संरक्षण को लेकर बड़ी-बड़ी बहस और चिंता की लकीरें खींची जा रही हैं। कुछ कदम भी उठाए जा रहे हैं। जल संरक्षण को लेकर हमारा एक पक्ष और मजबूत करने की आवश्यकता है वह है हमारा व्यावहारिक पक्ष। यही वह पक्ष है जिससे हम और हमारा समाज ग्रास लेवल से जल संरक्षण की पहल और प्रयास कर सकता है।

मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता

वर्तमान में व्यावहारिक पक्ष में ही अधिक जोर देने की आवश्यकता है। यह पक्ष देश के हरेक नागरिक से जुड़ा है। छोटे-छोटे स्तर से ही जल संरक्षण करके हम अपने प्रभावी कर्तव्यों का पालन कर सकते हैं। यह हर एक घर से, हर गाँव से, हर वर्ग से जुड़ा है। जिस पर अमल होते ही जल की समस्या से काफी हद तक काबू पा सकते हैं। जल संरक्षण का हरेक के साथ-साथ सामुदायिक संबंध भी है। सहभागिता, सामूहिकता से किए जाने वाले कार्य ही हमारे व्यावहारिक पक्ष की प्रबल और प्रभावी कड़ी हैं। इस पर ही विशेष ध्यान देने की जरूरत है। हम देखते हैं कि गांवों में बड़ी से बड़ी समस्या का हल गांव के लोग सहभागिता से करते हैं। यदि यही सहभागिता जल संरक्षण को लेकर की जाए तो गांव की समस्या गांव वालों के हाथों ही हल हो सकती है। हालांकि ऐसी पहल प्रारंभ भी हो चुकी है। लोगों की मानसिकता में बदलाव आ रहे हैं लेकिन अभी भी बहुत काम करने की आवश्यकता है। समाज के हर वर्ग को शामिल करने की आवश्यकता है। जल संरक्षण और जल संवर्धन के केन्द्र-बिन्दु में, आवश्यक तत्वों में हम सबको जुड़ना होगा। एक लक्ष्य को लेकर कार्य करना होगा तब ही उद्देश्य को पूर्ण कर पाएंगे। गांवों की समस्या को गांव के लोग ही हल करें। लोग एक मंच पर आकर, समस्या का हल ढूंढें और जो सीमित संसाधन हैं उनके भरोसे स्वयं हल निकालें। यही हमारी जल संरक्षण की दिशा में व्यावहारिक पहल होगी जो आज की आवश्यकता है। इसके साथ ही निम्न कई कदम हैं, जिन्हें आगे बढ़ाकर हम अपने स्तर पर जल संरक्षण की दिशा में चल सकते हैं। ये सार्थक भी हैं और उपयोगी भी।

जल संरक्षण की प्रभावी पहल

बोरी बंधान - गांव में बहते जल नदी-नालों पर जल संरक्षण का सबसे प्रभावी और प्रबल कार्य है बोरी बंधान। बोरी बंधान का सम्पूर्ण कार्य जनभागीदारी पर ही निर्भर होता है। जितनी अधिक जनभागीदारी, उतनी अधिक कार्य की सार्थकता। जल के अधिकतम स्रोतों में बोरी बंधान बनाए जाएं तो जल की समस्या से निजात पाया जा सकता है। बोरी बंधान जल संरक्षण की वह दिशा है जिसमें न धन की आवश्यकता होती है और न ही शासकीय अन्य औपचारिकताओं की इस कार्य में सबसे महत्वपूर्ण है श्रमदान। श्रमदान के माध्यम से ही हम अपनी जरूरतों को पूर्ण कर सकते हैं। एक छोटा-सा प्रयास ही बड़ी समस्या का हल होता है।

स्वैच्छिक संगठन की पहल

पानी की समस्या का हल ढूंढने के लिए हमें बोरी बंधान का निर्माण करना चाहिए। कम मेहनत और न के बराबर लागत में इसके सफल परिणाम हमारे सामने होंगे। बोरी बंधान के लिए हमें सबसे पहले नदी के उस स्थान का चयन करना चाहिए जहां कम बोरी बंधान से अधिक से अधिक पानी एकत्रित किया जा सकता है। उसके बाद गांव के प्रत्येक घर से खाली बोरियों को इकट्ठा किया जाए। फिर एक निश्चित दिन गांव के अधिक से अधिक लोग एकत्रित होकर खाली बोरियों में रेत, मिट्टी, गिट्टी भरकर नदी के उस स्थान पर रखें जहां से पानी की निकासी हो रही हो। बोरियों को रखने से नदी नाले का जो पानी व्यर्थ बह रहा था वह एकत्रित होना प्रारंभ हो जाएगा। देखते ही देखते एक बड़े क्षेत्र में पानी का भराव हो जाएगा और लोगों को अपनी आवश्यकतानुसार जल मिलने लगेगा। यह कार्य गर्मियों के दिनों में ज्यादा उपयुक्त माना जाता है, क्योंकि इन दिनों में नदी नाले सूख जाते हैं या सूखने की कगार पर होते हैं। यही रुका हुआ पानी आगामी दिनों तक लोगों को, पशुओं को मिलता रहता है। सामूहिक जन भागीदारी से किए जाने वाले कार्य में ज्यादा श्रम की आवश्यकता नहीं पड़ती।

चैकडेम और नाला बंधान - जल संरक्षण की दिशा में चैकडेम और नाला बंधान भी उपयोगी कदम है। नदी नालों पर चैकडेम बनाकर पानी को रोका जा रहा है। इससे न केवल लोगों को अपनी जरूरत का पर्याप्त पानी मिल रहा है, बल्कि कृषि कार्यों के लिए भी पानी उपलब्ध हो रहा है। चैकडेम बनाने की प्रक्रिया भी बोरी बंधान जैसी ही है। नदी नालों की मोटी दीवार बनाई जाती है जिससे कि पानी की निकासी न हो सके। यह वृहद स्तर पर भी होता है। यह कार्य अस्थायी होता है। चैकडेम बनाते समय हमें यह भी ध्यान रखना होता है कि पानी का अधिक ठहराव होने पर वह कहीं से टूटे फूटे नहीं। इसलिए इसकी मजबूती पर विशेष ध्यान दिया जाता है। चैकडेम से रुके पानी से अनेक क्षेत्रों में सिंचाई की जाती है। यह पानी रोकने का सबसे कारगर उपाय माना जाता है। इसके निर्माण में भी धन की आवश्यकता नहीं होती। इसे सामूहिक श्रमदान से आसानी से बनाया जा सकता है।

नदी तथा तालाब गहरीकरण - हाल ही के कुछ वर्षों से प्रदेश भर में नदी, तालाब गहरीकरण का कार्य प्रमुखता से किया जा रहा है। गर्मियों के मौसम में एक लक्ष्य को लेकर हर एक नदी में जनभागीदारी से गहरीकरण का कार्य किया जाता है। इस कार्य में सभी की सामूहिक भागीदारी सुनिश्चित होती है। नदी, तालाब गहरीकरण से जहां जल स्रोतों का गहरीकरण होता है वहीं इससे निकलने वाली मिट्टी भी कृषि के लिए लाभकारी सिद्ध होती है। जल भराव की क्षमता बढ़ती है। हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम अपने आसपास के नदी, नाले, तालाबों का गहरीकरण करें और अधिक से अधिक स्रोतों को गहरा करें ताकि इनमें अधिक से अधिक पानी जमा हो सके। बढ़ा हुआ यही जल कल हमारे लिए काम आएगा।

पोखरों का निर्माण - हम देखते हैं कि गर्मियों के दिनों में अनेक क्षेत्रों में पानी की विकराल समस्या उत्पन्न हो जाती है। त्राहि-त्राहि मचने लगती है। ऐसे समय में हम थोड़ी सी मेहनत करके अपनी समस्या को हल कर सकते हैं। इसका सरल और सटीक हल है पोखर का निर्माण। पोखर तात्कालिक जल स्रोत का जरिया है। कम मेहनत से हम जल की पूर्ति कर सकते हैं। हमारे आसपास ऐसे अनेक क्षेत्र होते हैं जहां से थोड़ी मेहनत से पानी निकाला जा सकता है। थोड़ी सी गहराई में पानी आसानी से उपलब्ध हो सकता है। यह तालाब का छोटा रूप और झिरिया का बड़ा रूप है।

जल स्रोतों की साफ-सफाई - पानी की उपलब्धता के लिए हमारे पास अनेक स्रोत हैं। जैसे- तालाब, नदी, नाले, बावड़ी, पोखर आदि। हमें इन जल स्रोतों की समय-समय पर साफ सफाई करती रहनी चाहिए ताकि जरूरत पड़ने पर हम इन स्रोतों का उपयोग कर सकें।

सोख्ता गड्ढों का निर्माण- जमीन में गिरता जल स्तर हमारे सामने बड़ी समस्या है। प्रत्येक वर्ष पानी का स्तर गिरता जा रहा है जो गंभीर चिंता का विषय है। इस गंभीर समस्या का हल भी हमारे पास है। यदि हम अपने घर में हैण्डपंपों के पास सोख्ता गड्ढों का निर्माण करें तो जमीन में जल स्तर गिरने से बचा सकते हैं। हमें अधिक से अधिक सोख्ता गड्ढों का निर्माण करना चाहिए। इन सोख्ता गड्ढों के माध्यम से जो पानी व्यर्थ बहता है वह जमीन के अंदर रिसकर जाएगा जिससे जमीन के अंदर जल के स्तर को स्थिर बनाए रखने में मदद मिलेगी।

खेत का पानी खेत में - हमारा प्रदेश कृषि प्रधान प्रदेश है। लेकिन आज भी अनेक क्षेत्रों में सिंचाई के साधन मौजूद नहीं हैं। नहरों नलकूपों, कुओं, नदियों और तालाबों से सिंचाई होती है। उसके बावजूद कृषि का बहुत बड़ा क्षेत्र सिंचाई से वंचित है। यदि 'खेत का पानी खेत में' की परंपरा को अपनाया जाए तो काफी बड़े भू-भाग को सिंचित किया जा सकता है। इसके दो बड़े लाभ होंगे- पहला खेतों की सिंचाई होने से कृषि उत्पादकता में बढ़ोतरी होगी वहीं दूसरी ओर जल स्तर बढ़ जाएगा। यह कार्य भी काफी सरल है। कृषक अपने खेत के कुछ भाग में पाल बंधान करके बरसाती पानी को रोक सकते हैं फिर उसी पानी से खेत की अन्य फसलों की सिंचाई कर सकते हैं। उसके बाद जब पानी खत्म हो जाए, जगह खाली हो जाए तो उसमें भी कुछ फसलें बोई जा सकती हैं। इस तरह थोड़ी सी मेहनत में भरपूर पैदावार ली जा सकती है।

- हितेश शर्मा
(लेखक सम-सामयिक विषयों पर लेखन करते हैं।)

मध्यप्रदेश : हमारा जिला विदिशा

प्राचीन, ऐतिहासिक और कलाओं से समृद्ध

मध्यप्रदेश विविधता से समृद्ध है। प्रदेश के हर क्षेत्र की अपनी विशेषता है, क्षमता है और दक्षता है। यहां का प्रत्येक जिला अपना इतिहास, कला, संस्कृति, परंपरा, उपज और अन्य क्षेत्रीय विशेषताएं लिए हुए है। ''रोज़गार और निर्माण'' के ''हमारा जिला'' स्तम्भ में हम मध्यप्रदेश के प्रत्येक जिले से आपको परिचित करवायेंगे। इस अंक में प्रस्तुत है विदिशा जिले का परिचय -

मध्यप्रदेश का विदिशा जिला ऐतिहासिक महत्व के साथ वन संपदा और प्राकृतिक सौंदर्य से समृद्ध है। जिले का अपना पुरातात्विक वैभव है। भारत के मध्य में स्थित यह जिला पुरातात्विक, सांस्कृतिक तथा दर्शनीय स्थलों की विशेषता के कारण उत्कृष्ट पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। विदिशा जिला मध्यप्रदेश के पश्चिम में तथा मालवा के पठार के उत्तरी छोर पर बसा है।

यह जिला मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से सड़क मार्ग से करीब 56 किलोमीटर तथा विश्व धरोहर सांची से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। विदिशा भारतवर्ष के प्रमुख प्राचीन नगरों में से एक है। यह ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। महिष्मती (महेश्वर) के बाद विदिशा ही सबसे पुराना नगर माना जाता है। महिष्मती नगरी का ह्रास होने के बाद विदिशा को ही पूर्वी मालवा की राजधानी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसकी चर्चा वैदिक साहित्य में भी मिलती है।

मान्यता है कि वैदिककाल में किसी आर्य देवी ने यहाँ के महिष नामक राजा को पराजित किया था, अतः आज भी यहाँ के सभी गाँवों में महिषासुर या भैंसासुर की पूजा होती है। कहा जाता है कि भगवान श्रीराम के अनुज शत्रुघ्न ने अश्वमेध यज्ञ के उपरांत यह क्षेत्र अपने पुत्र को सौंप दिया।

स्कंद पुराण के अनुसार वाल्मीकि ऋषि, इसी क्षेत्र के निवासी थे। 5वीं से 6वीं सदी में महात्मा बुद्ध के समय विदिशा का विकास चरमोत्कर्ष पर था। भारत के मध्य में स्थित होने के कारण यह चारों तरफ से अनेक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्रों को जोड़ता था। जहाँ पूर्व में कौशाम्बी, काशी तथा पाटलिपुत्र जैसे नगरों से जुड़ा था, वहीं पश्चिम की ओर से भरुकच्छ (भरूच) व सुर्पारक (सोपारा) जैसे बंदरगाहों से संबद्ध था। दक्षिण की तरफ यह तत्कालीन प्रतिष्ठित नगर पैठ से जुड़ा था। यहाँ के समृद्ध व्यापारियों ने भी यहाँ के स्तूप व अन्य छोटे- बड़े भवनों के निर्माण में योगदान दिया।

मौर्य शासक अशोक ने विदिशा के व्यापारी की पुत्री से विवाह किया। उनका इस नगर के प्रति विशेष सम्मान था। मौर्यों के बाद शुंग शासकों ने इस पर अधिपत्य किया। उनकी एक शाखा ने विदिशा पर राज्य किया। इसके बाद नाग तथा सातवाहन वंश का यहाँ शासन रहा। उनके काल में भी यह शुंगों की तरह हिंदू धर्म का केंद्र रहा। गुप्तकाल तक विदिशा का उत्कर्ष बना रहा, उसके बाद पतन शुरू हो गया। कहा जाता है कि कुछ प्राकृतिक कारणों से नगर के समीप बहती नदी बेतना सूख गई या फिर कुछ राजनैतिक समस्या हो गई, जिससे वहाँ की आबादी नदी के दक्षिणी किनारे की तरफ बस गयी, जो बाद में भीलसा के नाम से जानी जाने लगी।

11वीं शताब्दी का गडरमल मंदिर

विदिशा के प्रमुख आकर्षणों में से एक है गडरमल मंदिर जो विजय मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। 11वीं शताब्दी में बने इस मंदिर में परमारकाल के एक बड़े मंदिर के अवशेष देखे जा सकते हैं। इसकी आधी अधूरी बनावट और आधारशिला को देखकर यह समझा जा सकता है कि इसका निर्माण कार्य पूरा नहीं हो पाया। मंदिर के पास ही एक मस्जिद है, जिसे आलमगीर मस्जिद कहा जाता है। इस परिसर में सातवीं शताब्दी की एक सीढ़ी वाली बावड़ी भी है, जो इस मंदिर को और भी समृद्ध बना देती है। बावड़ी में दो लंबे स्तंभ हैं, जिन पर श्रीकृष्ण के जीवन दृश्यों का वर्णन किया गया है। माना जाता है कि श्रीकृष्ण के यह जीवन दृश्य मध्य भारत की प्रारम्भिक कला का प्रमाण है।

प्रमुख क्षेत्र

राजधानी भोपाल से 56 किलोमीटर दूर स्थित विदिशा एक प्राचीन और ऐतिहासिक शहर है। कहा जाता है कि लगभग 2600 साल पहले यह जगह व्यापार का प्रमुख केन्द्र थी। अगर इतिहास के पन्नों को पलटकर देखा जाए तो 1000 साल पहले सम्राट अशोक विदिशा के प्रमुख हुआ करते थे।

उत्पादन

गेहूं - शरबती गेहूं का विदिशा क्षेत्र में बड़ी मात्रा में उत्पादन होता है। यहां का शरबती गेहूं देश में उपलब्ध गेहूं की सबसे प्रीमियम किस्म है।

उड़द - जिले में उड़द यहां का तृतीय उच्च उत्पादक है यह एक महंगा उत्पादक है। इससे यहाँ के किसानों को आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। उड़द की फसल सितम्बर से अक्टूबर माह में आती है।

चना - जिले में चना तृतीय उच्च उत्पादक है। इससे किसानों को अच्छा लाभ मिलता है। यह रवि मौसम की फसल है जो मार्च से अप्रैल माह में आती है।

सोयाबीन - जिले में सोयाबीन दूसरा उच्च उत्पादक है। यहां सोयाबीन का विपुल उत्पादन होता है। सोयाबीन की खेती किसानों की आर्थिक समृद्धि का आधार है। यह खरीफ मौसम की फसल है जो सितम्बर से अक्टूबर माह में आती है।

उत्सव

श्रीराम लीला मेला - श्रीराम लीला मेला की स्थापना का कार्य सन् 1901 में प्रारंभ हो गया था। श्रीराम लीला का लीला कार्यक्रम, समय, लीला प्रांगण, अयोध्या लंका की स्थिति, लीला के संवादों की रचना, युद्ध प्रक्रिया, चरित्रों के अनुरूप वेशभूषा, दृश्यों का निर्माण, स्थान रचना तथा आवश्यक वस्तुओं आदि की रूपरेखा विदिशा के प्रथम धर्माधिकारी एवं संस्कृतज्ञ पंडित श्री विश्वनाथ जी शास्त्री जी के मार्गदर्शन में तैयार हुई एवं श्रीराम लीला को मूर्त रूप सन् 1902 में दिया गया। श्रीराम लीला के लिए मकर संक्रांति का समय उपयुक्त माना गया क्योंकि इस समय चरण तीर्थ मंदिर पर मेला लगता है, जिससे अधिक से अधिक श्रद्धालु श्रीराम लीला का लाभ ले सकें। यह समय खेतीहर किसानों के लिए भी अनुकूल था।

श्री मनोरा मेला - मिनी जगन्नाथपुरी के रूप में विख्यात विदिशा जिले के मनोरा गांव में 25 जून को मनोरा मेला लगता है। लाखों लोग रथ में आरूढ़ भगवान जगदीश स्वामी, देवी सुभद्रा और बलभद्र के दर्शन करने आते हैं। मीलों दूर से श्रद्धालु एक दिन पहले से पिण्ड भरते हुए दंडवत् करते हुए मिनी जगन्नाथपुरी कहलाने वाले मनोरा गांव में पहुचते हैं।

विदिशा भारत के प्राचीन नगरों में से एक है। यहां कई प्रसिद्ध मूर्तियां, शिलालेख, खंडहर और पुरातात्विक महत्व के स्थल हैं। इसके अलावा यहां कुछ महत्वपूर्ण मंदिरों में गिरधारी मंदिर, उदयेश्वर मंदिर, दशावतार मंदिर, मालादेवी मंदिर के साथ प्रमुख तीर्थ स्थल बीजामंडल भी स्थित है।

ऐतिहासिक महत्व

नीलकंठेश्वर शिव मंदिर - यहां परमार राजा उदयादित्य द्वारा निर्मित नीलकंठेश्वर शिव मंदिर विदिशा जिले के गंज बासौदा तहसील के उदयपुर ग्राम में स्थित है। यहां सूर्य की पहली किरण महादेव जी का अभिषेक करती है। मंदिर की प्रत्येक कला में भिन्नता है, कोई भी कला एक जैसी नहीं है। यहां महाशिवरात्रि पर पांच दिवसीय मेला भी आयोजित होता है। मंदिर की बाहरी दीवार पर देवी-देवताओं की मूर्तियां उकेरी गई हैं। इसमें भगवान गणेश, भगवान शिव की नटराज तथा अन्य स्वरूप, महिषासुर मर्दिनी, कार्तिकेय आदि मूर्तियां हैं।

सोला खंबी मंदिर- बदोह कस्बे के कुरवाई में स्थित सोला खंबी मंदिर का संबंध गुप्तकाल से है। एक स्थानीय झील के उत्तरी छोर पर स्थित यह मंदिर बेहद खूबसूरत दिखता है। इस मंदिर का नाम इसके 16 खम्भों के कारण मिला है। करीब 8 वर्ग मीटर में फैला यह मंदिर 1.5 मीटर के आधार पर टिका है।

हिलयोडोरस - विदिशा में नदी के उत्तरी तट पर एक पाषाण निर्मित 20'7" ऊंचा स्तम्भ है, जिसे खाम्बाबाबा के नाम से जाना जाता है। इसके लेख में लिखा है कि हेलियोडोरस नामक एक यूनानी ने वासुदेव (विष्णु) के सम्मान में इस स्तम्भ को स्थापित किया था। हिलयोडोरस शुगवंश के 9वें शासक भागभद्र के दरबार में तक्षशिला शासक एण्टियोकस के राजदूत के रूप में आया था। सन् 1963-65 के पुरातात्विक उत्खनन में स्तम्भ के समीप चौथी शताब्दी ई.पू. में विष्णु मंदिर के होने की पुष्टि हो चुकी थी। इतिहासकार माहेश्वरी दयाल खरे ने लिखा है कि "संसार के सर्व प्रसिद्ध स्मारकों में स्तम्भ की गणना की जाती है।

लोहांगी पहाड़ी - विदिशा नगर में ऐतिहासिक तथा पर्यटक रुचि की दृष्टि से रेलवे स्टेशन के पास एकाकी रेतीले पत्थर का शिखर है। लगभग 6,086 मीटर की ऊंचाई तथा 9121 मीटर व्यास के अपेक्षाकृत चपटे शीर्ष वाली लुहांगी का ऊपरी भाग सीधी कगार है, किन्तु उसके ऊपर समतल भाग है। यही कारण है कि यहां लगभग 100 मीटर व्यास के भीतर स्मारक हैं। इसके अतिरिक्त शुंगकालीन स्तम्भ शीर्ष भी किसी अन्य स्थान से लाकर यहां रख दिया गया है। लोहांगी पहाड़ी के संबंध में स्थानीय लेखक गोविन्द देवलिया ने लिखा है कि, 1456 में खिलजी सुल्तान मोहम्मद शाह प्रथम ने लुहांगी पर कई इमारतें बनवाई । जिन पर बीजक खड़े हुए हैं। इन इमारतों में स्वास्तिक चिन्ह तथा कारीगरी अभी तक स्पष्ट दिखाई देती है।

बीजामण्डल विजय मंदिर - प्राचीन विदिशा नगर की स्थानान्तरित बस्ती (भेलसा) के मध्य एक विशाल परमार कालीन मंदिर के भग्नावशेष हैं, जिसे बीजामण्डल के नाम से जाना जाता है। वास्तु शिल्प के आधार पर इसका निर्माण 11वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना गया है। वहां कई प्रकार की देवी मूर्तियां हैं। अग्नि पुराण में विजया देवी को चण्डी या दुर्गा का ही रूप बताया गया। संभव है कि नरवर्मन ने रानी विजया की स्मृति में इसका निर्माण किया हो और कालान्तर में विजया मंदिर का अपभ्रंश बीजामण्डल कहलाने लगा।

इस मंदिर को उस सूर्य मंदिर से भी जोड़ा जाता है जिसका नाम भेल्लस्वामिन मंदिर था और जिनके नाम पर शताब्दियों तक इस नगर का नाम भेलसा कहलाया। बीजामण्डल नाम मूलतः सूर्य मंदिर को इंगित करता है। मलबे से ऐसे अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिन्हें देखने से लगता है कि वह शिवमंदिर रहा होगा, वहां शिवपरिवार की अनेक मूर्तियां, गणेश, गौरी, उमा महेश्वर, आदि प्राप्त हुई हैं। सिहंमुख कार्तिमुख का अलंकरण वहां की विशेषता है। 13वीं शताब्दी में यह मंदिर ध्वस्त हो गया था।

इस मंदिर की कला के संबंध में श्री राजकमल जैन ने लिखा है- *"इस परम पवित्र विदिशा नगर में दर्शनीय स्थान हिंदू धर्म के प्रमुख मंदिर हैं जिनमें उत्कृष्ट सांस्कृतिक कला और विज्ञान की दृष्टि से.. लोगों को आश्चर्य में डालने वाली बालाजी मंदिर की छत है।"*

मंदिर के निकट एक उत्तम श्रेणी की प्राचीन बावड़ी है। इसमें दो अलंकृत स्तंभ हैं जो 8वीं से 9वीं शती के प्रतिहारकालीन कला के प्रतीक हैं। इन पर कृष्ण लीला के सुन्दर चित्रों का अंकन है। स्थापत्य की दृष्टि से वह भुमिज शैली का पूर्वाभिमुख पंचावतन प्रकार का मंदिर रहा है। मंदिर के ध्वस्त मलबे से शैव एवं शाक्त सम्प्रदाय की बहुसंख्यक मूर्तियां स्थापत्य खंड प्राप्त हुए हैं जो परमार कला स्थापत्य को दर्शाते हैं।

गुम्बज का मकबरा- बीजामण्डल के समीप पत्थर से निर्मित एक छोटा सा मकबरा है। जिसमें दो समाधियां हैं। छत पर गुम्बद होने से इसका नाम गुम्बद का मकबरा हो गया। एक समाधि पर 1487 ई.सन का एक फारसी लेख है जिससे ज्ञात होता है कि वह एक व्यवसायी की कब्र थी।

बेसनगर - विदिशा का यह छोटा सा गांव विदिशा रेलवे स्टेशन से लगभग तीन किलोमीटर पश्चिम में है और उसे सड़क द्वारा जोड़ा गया है। यह बेतवा तथा वेस नदी के बीच द्विसाख में है। माना जाता है कि इस गांव का सम्बन्ध अशोक से है। 16 बौद्धों के पालीग्रंथों जिसका नाम बेस नगर और संस्कृत पुस्तकों में विदिशा है। अनेक टीले और चाहर दीवारी शहर की सीमा रही हैं। सांची का स्तूप इससे संबद्ध था। यहां ईसा पूर्व तीसरी से 11वीं शताब्दी के भग्नावशेष मिलते हैं। एक कोने में वेश गांव में अब बेसनगर (विदिशा) की स्मृतियां ही शेष हैं।

उदयगिरि - प्रदेश के विदिशा जिले के रेलवे स्टेशन से चार मील छोटी पहाड़ी के पूर्व की ओर उदयगिरि की बीस गुफाएं हैं। यह बहुत छोटी कोठरियों जैसी हैं जिन्हें मूर्तियों की स्थापना के लिए बनाया था। इन्हें उदयगिरि की पहाड़ियों के पूर्वी ढाल को खोदकर तराशा गया है। उदयगिरि की गुफाएं ईसा की चौथी तथा पांचवीं शताब्दी की हैं जो गुप्त वंश की अदभुत, अनुपम निर्माण कला का सुन्दर उदाहरण है। उदयगिरि में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा निर्मित मंदिरों के बाहर पृथ्वी का उद्धार करते हुए वराह की विशाल मूर्ति है, जो अनुपम है। इसके अतिरिक्त पौराणिक कथाओं का शिल्प है तो कुछ में जैन धर्म सम्बन्धी कथाओं का चित्रण भी है।

मध्य भाग गुफा क्रमांक 6,7 के निकट अत्याधिक अवनत है। जहां 12 फुट गहरा तथा 100 फुट लम्बा एक संकरा मार्ग काटकर बनाया था, जिसका ऊपरी द्वार स्तम्भ कनिंघम ने देखा था, किन्तु अब अवशेष मात्र ही है। यह पहाड़ी नरम खेत बालुकारम की है जिसमें समतल परतें हैं जिसके कारण इसके पूर्वी भाग में अनेक शैलकृत गुफाओं का निर्माण हो सका है। किन्तु प्रत्येक के सम्मुख मौलिक रूप मे मंडप रहे होंगे। गुफाओं मे गुप्तकालीन कला का क्रमबद्ध विकास देखने को मिलता है।

प्रातःकालीन सूर्य रश्मियां सीधी गुफाओं को प्रकाशित करती हैं। यही वजह है कि इस स्थल का नाम उदयगिरि पड़ा। इन गुफाओं में दो जैन धर्म तथा शेष हिन्दू धर्म की हैं। इस पहाड़ी पर मौर्य, शुंग तथा नागकालीन अवशेष भी देखे गये हैं। जिसमें बौद्ध स्तूप भी हैं।

- देवेन्द्र गोरे
(लेखक, समसामयिक विषयों पर लेखन करते हैं)

कॅरियर की राहें

विदेश व्यापार और आयात-निर्यात व्यापार में कॅरियर

'रोज़गार और निर्माण' के पाठकों के लिये 'कॅरियर की राहें' नाम से उपयोगी स्तंभ लगातार प्रकाशित किया जा रहा है। अच्छे कॅरियर के लिये जरूरी है कि युवा कॅरियर की विभिन्न विधाओं से परिचित हों और अपनी रुचि, योग्यता और क्षमताओं के अनुरूप अपने लिये उपयुक्त कॅरियर का निर्धारण करें। पिछले 40 वर्षों से नई पीढ़ी के लिये कॅरियर संबंधी विषयों पर नियमित लेखन कर रहे डॉ. जयंतीलाल भंडारी युवाओं को कॅरियर के विभिन्न अवसरों से परिचित कराते हुए आगे बढ़ने का मार्गदर्शन दे रहे हैं।

यकीनन दुनिया में जैसे-जैसे वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन) आगे बढ़ा है और विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के सदस्य देशों की संख्या बढ़ती गई है, वैसे-वैसे विदेश व्यापार और आयात-निर्यात व्यापार की ऊंचाई बढ़ती गई है। दुनिया में डिजिटलीकरण ने विदेश व्यापार को पंख लगा दिए हैं। वस्तुतः अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और आयात-निर्यात व्यापार में राष्ट्रीय सीमाओं के पार का व्यापार है। इसमें दुनिया के विभिन्न देशों में वस्तुओं और सेवाओं की खरीद या बिक्री शामिल है। यह विदेश व्यापार महज पैसे या भौतिक उत्पादों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें कई अन्य संसाधनों का हस्तांतरण भी शामिल है, जिसे सेवा निर्यात (सर्विस एक्सपोर्ट) कहते हैं। इसमें आईटी सेवाएं, बौद्धिक संपदा, पेटेंट, कॉपीराइट, ब्रांड ट्रेडमार्क आदि शामिल हैं।

विदेश व्यापार के उभरते तीन क्षेत्रों में कॅरियर

विदेश व्यापार के तहत प्रमुखतया तीन कॅरियर सेक्टर ऊंचाई पर हैं एक, आयात-निर्यात में सोर्सिंग पार्टनर दो, विदेश व्यापार मार्केटिंग और तीन, विदेश व्यापार रिलेशनशिप एक्सपर्ट। भारत में निर्यात व्यवसाय के सबसे महत्वपूर्ण चरणों में से एक है विदेश व्यापार माल का स्रोत बनाना, दूसरे के माल का निर्यात करने वाले निर्यातकों का प्रतिशत अपने स्वयं के उत्पादित तथा निर्मित माल का निर्यात करने वाले निर्यातकों के प्रतिशत से कहीं अधिक है। भारत में निर्यात की सामान्य प्रथा में निर्यातक सीधे अच्छे उत्पादकों से सोर्सिंग करता है या सोर्सिंग पार्टनर्स से प्राप्त करता है। सोर्सिंग पार्टनर की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें संभावित निर्यातकों को निर्माताओं या डीलरों या गुणवत्ता वाले सामान के उत्पादकों से जोड़ना शामिल है।

विदेश व्यापार मार्केटिंग में मौके

विदेश व्यापार में कॅरियर का दूसरा महत्वपूर्ण सेक्टर मार्केटिंग के रूप में है। किसी विशेष उत्पाद को निर्यात करने के लिए विस्तृत ज्ञान और अध्ययन होना महत्वपूर्ण है। किसी उत्पाद की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में क्या मांग है, उस उत्पाद की मांग किन देशों में सबसे ज्यादा है, किस गुणवत्ता की उम्मीद है, हर देश में कीमतें क्या हैं आदि जानना निर्यात व्यवसाय के शुरुआती स्तर को स्थिर करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण पैरामीटर हैं। विदेश व्यापार विपणन विशेषज्ञ से तात्पर्य एक ऐसे विशेषज्ञ से है जिसने निर्यात की सही नब्ज पकड़ ली है।

विदेश व्यापार रिलेशनशिप एक्सपर्ट के क्षेत्र में कॅरियर

विदेश व्यापार में कॅरियर का तीसरा अहम सेक्टर रिलेशनशिप एक्सपर्ट के रूप में है। अंतर्राष्ट्रीय खरीददारों के साथ-साथ निर्यात भागीदारों के साथ अच्छे संबंधों और दीर्घकालिक संबंधों वाले निर्यातकों को सुविधा प्रदान करना एक दुर्लभ कौशल है जिसकी भारतीय बाजार में बड़ी मांग है।

अंतर्राष्ट्रीय खरीदारों के साथ मजबूत संबंध बनाने के लिए एक कुशल रिलेशनशिप विशेषज्ञ निर्यातकों की मदद कर सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भारत की स्थिति और बढ़ते मौके

यद्यपि दुनिया में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भारत का योगदान अभी कम है, लेकिन भारत का वैश्विक व्यापार बढ़ने का परिदृश्य स्पष्ट रेखांकित हो रहा है, जहां भारत ने वित्त वर्ष 2021-22 में 676 अरब डॉलर मूल्य का रिकॉर्ड निर्यात किया था, वहीं वित्त वर्ष 2022-23 में भारत से निर्यात 770 अरब डॉलर से अधिक मूल्य की ऊंचाई पर पहुंच गया है। वर्ष 2030 तक भारत का गुड्स एंड सर्विस एक्सपोर्ट 2,000 अरब डॉलर यानी 2 लाख करोड़ डॉलर के पार तक पहुंच सकता है।

भारत से निर्यात में नए कॅरियर अवसर

निःसंदेह देश निर्यात आधारित अर्थव्यवस्था की डगर पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। यह कोई छोटी बात नहीं है कि वैश्विक आर्थिक संकट और वैश्विक निर्यात चुनौतियों के बीच भी भारत से निर्यात बढ़ रहे हैं। इस समय भारत के तेजी से बढ़ते निर्यातों का ग्राफ इस बात का प्रतीक है कि भारतीय उत्पादों की मांग दुनियाभर में बढ़ रही है। यदि हम उत्पाद निर्यात के नए आंकड़ों का विश्लेषण करें तो पाते हैं कि प्रमुख रूप से अमेरिका, यूएई, चीन, बांग्लादेश व नीदरलैंड को भी बड़े पैमाने पर निर्यात किए गए हैं। निर्यात उत्पादों के महेनजर पेट्रोलियम उत्पादों, इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद, इंजीनियरिंग उत्पाद, चमड़ा, कॉफी, प्लास्टिक, रेडीमेड परिधान, मांस एवं दुग्ध उत्पाद, समुद्री उत्पाद और तंबाकू की निर्यात वृद्धि में अहम भूमिका रही है। साथ ही उच्च इंजीनियरिंग निर्यातों, परिधान और वस्त्र निर्यात आदि से संकेत मिलते हैं कि यह धारणा धीरे-धीरे बदल रही है कि भारत प्राथमिक जिंसों का ही बड़ा निर्यातक है। अब भारत के द्वारा अधिक से अधिक मूल्यवर्धित और उच्च गुणवत्ता वाले सामानों का निर्यात भी किया जा रहा है।

भारत से कृषि निर्यात में मौके

यह भी महत्वपूर्ण है कि भारत विश्व पटल पर कृषि निर्यात के नए उभरते हुए देश के रूप में उपस्थिति दर्ज करते हुए मानवता के आधार पर दुनिया के जरूरतमंद देशों के लिए खाद्यान्न की आपूर्ति भी सुनिश्चित कर रहा है। भारत से खाद्य पदार्थों अनाज, गैर-बासमती चावल, गेहूं, बाजरा, मक्का और अन्य मोटे अनाज के अलावा फलों एवं सब्जियों के निर्यात में भारी वृद्धि देखी गई है। कृषि एवं प्रसंस्करण खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) के मुताबिक खाद्य उत्पादों का निर्यात 30 अरब डॉलर से अधिक है, कृषि क्षेत्र में ज्यादा मूल्य और मूल्यवर्धित कृषि निर्यात को बढ़ावा दिया गया है। गहराई से कृषि निर्यात परिदृश्य का अध्ययन करने के बाद कृषि निर्यात में सुधार के लिए रणनीतिक कदम उठाए गए हैं। कृषि निर्यात रिकॉर्ड स्तर पर दिखाई दे रहा है। वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन के द्वारा प्रकाशित वैश्विक कृषि व्यापार में रुझान रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में कृषि निर्यात में भारत ने नौवां स्थान हासिल किया है। देश के कुल निर्यात में कृषि की हिस्सेदारी 11 प्रतिशत से अधिक हो गयी।

भारत से सेवा निर्यात में कॅरियर की ऊंचाई

खास बात यह है कि कोविड-19 के कारण भारत के सेवा निर्यात में महत्पूर्ण वृद्धि हुई है। कोविड-19 के बाद कुल आईटी सेवाओं के निर्यात में भी वृद्धि हुई है। कोविड-19 ने अधिकांश उद्योगों को डिजिटल निवेश और मल्टी-चैनल व्यवसाय में तेजी लाने के लिए प्रेरित किया और कंपनियों के बैक-एंड प्रौद्योगिकी बुनियादी ढांचे को ज्यादा बेहतर और अनुकूल बनाने के लिए प्रवृत्त किया है। आईटी सेवाओं की कुल सेवा निर्यात में सबसे अधिक हिस्सेदारी है। इसमें कम्प्यूटर सेवाओं की हिस्सेदारी सबसे अधिक है। फिर पेशेवर और प्रबंधन परामर्श सेवाएं, तकनीकी और व्यापार से संबंधित सेवाएं और अनुसंधान और विकास क्षेत्रों में भी सेवा निर्यात में प्रभावी वृद्धि हुई है।

शोध एवं नवाचार से विदेश व्यापार में मौके

जिस तेजी से देश में ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स (जीसीसी) की संख्या बढ़ी है, उतनी ही तेजी से आईटी सेवाओं के निर्यात में भी वृद्धि हुई है। ज्ञातव्य है कि भारत के नवाचार दुनिया में सबसे प्रतियोगी, किफायती, टिकाऊ, सुरक्षित और बड़े स्तर पर लागू होने वाले समाधान प्रस्तुत कर रहे हैं। भारत में इंटरनेट ऑफ थिंग्स, कृत्रिम बुद्धिमता और डेटा एनालिटिक्स जैसे क्षेत्रों में शोध और विकास और जबरदस्त स्टार्टअप माहौल के चलते ख्याति प्राप्त वैश्विक फार्मेसी कंपनियां, वैश्विक फायनेंस और कॉमर्स कंपनियां अपने कदम तेजी से बढ़ा रही हैं। अमेरिका, यूरोप और एशियाई देशों की बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में जीसीसी स्थापित किए हैं। यह संख्या वित्त वर्ष 2015-16 में करीब 1000 से अधिक थी, वहीं यह बढ़कर वित्त वर्ष 2023-24 में 1500 से अधिक हो गई है। वास्तव में भारत में लगभग 40 प्रतिशत से अधिक वैश्विक जीसीसी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि देश से निर्यात और विदेशी व्यापार बढ़ाने में भारत के द्वारा यूएई और ऑस्ट्रेलिया के साथ किए गए मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) की भारत के विदेश व्यापार को बढ़ाने में भी प्रभावी भूमिका रही है।

मुक्त व्यापार समझौतों से आयात-निर्यात में कॅरियर की बढ़ी अहमियत

जहां यूएई और ऑस्ट्रेलिया के साथ हुए एफटीए भारत में नई पीढ़ी के लिए कॅरियर के मौके बढ़ा रहे हैं, वहीं हाल ही में 10 मार्च को भारत और चार यूरोपीय देशों के बीच निवेश और वस्तुओं एवं सेवाओं के दोतरफा व्यापार को बढ़ावा देने के लिए किया गया मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसे व्यापार और आर्थिक समझौता (टीईपीए) कहा गया है। इस व्यापार समझौते के बाद भारत के साथ पेरू, ओमान, ब्रिटेन और यूरोपीय यूनियन (ईयू) सहित कई देश व्यापार समझौते की बातचीत अंतिम दौर की ओर आगे बढ़ाते हुए दिखाई दे रहे हैं। नए एफटीए के तहत ईएफटीए ने भारत में 100 अरब डॉलर के निवेश की प्रतिबद्धता जताई है। यह भारत का ऐसे समूह के साथ पहला व्यापार करार है, जिसमें विकसित देश शामिल हैं। ईएफटीए के सदस्य देशों में आइसलैंड, स्विट्जरलैंड, नॉर्वे और लिस्टेंस्टीन शामिल हैं। इससे भारत में 10 लाख प्रत्यक्ष नौकरियां निर्मित होंगी। इस समझौते से डिजिटल व्यापार, बैंकिंग, वित्तीय सेवा, फार्मा, टेक्सटाइल जैसे सेक्टर में इन चार देशों के बाजार में भारत की पहुंच आसान होगी। इस समझौते से भारतीय निर्यातकों के लिए यूरोप के बड़े बाजार में पहुंच आसान हो जाएगी। इस समझौते से भारत के साथ ईएफटीए देशों को वृद्धि के लिए भारत के बड़े बाजार तक पहुंच मिली है।

गौरतलब है कि मुक्त व्यापार समझौता दो या दो से अधिक देशों के बीच एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ वे साझेदार देशों से व्यापार की जाने वाली वस्तुओं पर सीमा शुल्क को खत्म कर देते हैं या कम करने पर सहमत होते हैं। इन संधियों के अंतर्गत 10 से 30 विषय शामिल होते हैं। दुनिया में 350 से अधिक एफटीए वर्तमान में लागू हैं। इन विभिन्न एफटीए के बीच हाल ही में भारत के द्वारा ईएफटीए देशों के साथ जो एफटीए किया है, वह दुनिया में रेखांकित हो रहा है। 2022-2023 के दौरान ईएफटीए देशों को भारत का निर्यात 1.92 अरब डॉलर रहा था। वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान इन देशों से भारत का कुल आयात 16.74 अरब डॉलर था। ऐसे में ईएफटीए देशों से किया गया एफटीए भारत के निर्यात बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएगा।

विदेश व्यापार के कॅरियर की शैक्षणिक योग्यताएं

किसी भी स्ट्रीम की डिग्री के साथ विदेश व्यापार में कॅरियर के लिए आगे बढ़ सकते हैं। बीबीए के साथ विदेश व्यापार की विशेषज्ञता लाभप्रद है। विदेश व्यापार में स्नातक (बीएफटी) की डिग्री भी अहम है। फिर विदेश व्यापार में मास्टर (एमएफटी) या एमबीए के साथ विदेश व्यापार का कोई पोस्ट ग्रेजुएट, डिप्लोमा लाभप्रद है। इंटरनेशनल ट्रेड में पीजी डिप्लोमा के साथ आगे बढ़ सकते हैं।

विदेश व्यापार के कॅरियर के लिए स्किल्स

विदेश व्यापार में कॅरियर के लिए कई प्रमुख कौशल आवश्यक हैं। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अनुपालन, निर्यात अनुपालन, मौखिक संवाद, नेतृत्व कौशल, संगठन का कौशल, जनसंपर्क। आयात निर्यात पाठ्यक्रम पूरा करना, क्रेता-विक्रेता बैठकों में भाग लेना, व्यावसायिक दौरों में भाग लेना आदि कुछ उत्कृष्ट अवसर हैं जिनका लाभ आप आयात निर्यात में एक मजबूत कॅरियर बनाने के लिए उठा सकते हैं। इसके लिए मजबूत नेटवर्किंग कौशल, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का गहरा ज्ञान और अच्छी उत्पादन प्रथाओं का अच्छा अध्ययन आवश्यक लाभप्रद है।

मध्यप्रदेश सहित देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में विदेश व्यापार के लिए कई अच्छे गुणवत्तापूर्ण संस्थान हैं, जहां ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन के पाठ्यक्रम किए जा सकते हैं। आप अपनी उपयुक्तता और दक्षता के अनुरूप उपयुक्त पूर्ण संस्थान का चयन कर कॅरियर की डगर पर आगे बढ़ें।

- डॉ. जयंतीलाल भंडारी
(लेखक, कॅरियर मार्गदर्शन के लिए लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में प्रतिष्ठित हैं।)

मध्यप्रदेश : संस्कृति एवं परंपरागत शिल्प कलाओं का केन्द्र

मध्यप्रदेश कला संस्कृति और परम्पराओं से समृद्ध प्रदेश है। विभिन्न अंचलों में विस्तारित प्रदेश के हर क्षेत्र की अपनी विशेषता है। इन्हीं विशेषताओं के साथ यहां के लोगों ने अपनी कला, सभ्यता और परम्परा को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया है। शिल्प और कला के परम्परागत हस्तांतरण से प्रदेश में पुरातन शिल्प के विविध स्वरूप देखने को मिलते हैं। इनमें चित्रकला, काष्ठकला, धातुकला, मिट्टी शिल्प आदि हैं। मध्यप्रदेश जनजातीय बहुल्य प्रदेश है। इसीलिए यहां के शिल्प में जनजाति शिल्प और परम्पराओं का समावेश है। प्रदेश में लोहा, तांबा, पीतल, कांसा, सोना, चांदी आदि धातुओं से विविध कलात्मक धातु शिल्प का निर्माण किया जाता है। प्रदेश में भरेवा, कांस्यकार, ताम्रकार और स्वर्णकार शिल्पी भी विख्यात हैं। उन्होंने ही सबसे पहले देशज पद्धति से लौह अयस्क को पिघलाकर प्राकृतिक संसाधनों से लोहा निर्माण की तकनीक को विकसित किया था। इसी तरह प्रदेश में अन्य शिल्प भी मौजूद है। ''रोज़गार और निर्माण'' के इस अंक में हम मध्यप्रदेश के प्रमुख शिल्प की जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं।

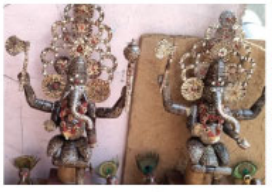

धातु शिल्प

मध्यप्रदेश में धातु शिल्प की परंपरा बहुत पुरानी है। अति पिछड़ी अगरिया जनजाति को धातु शिल्प के निर्माता के रूप में जाना जाता है। वहीं यहां कसेरा, ठठेरा और स्वर्ण धातु के सिद्धहस्त शिल्पी हैं। लौह अयस्क को गलाने की तकनीक से लेकर उनसे कलाकृतियाँ, गहने, बर्तन आदि बनाने की तकनीक से लोग अचंभित हैं। टीकमगढ़, मंडला, चीचली(गाडरवाड़ा) का धातु शिल्प सभी को आकर्षित करता है। प्रदेश का यह शिल्प देश ही नहीं विदेशों में भी लोकप्रिय है।

टीकमगढ़ का शिल्प

बुंदेलखंड का टीकमगढ़ जिला धातु शिल्प का महत्वपूर्ण केन्द्र है। यहां की कलात्मक कृतियां पुरातन समय से लेकर आज तक विख्यात है। सोना, चांदी, पीतल, तांबा, गिलट आदि धातुओं का उपयोग यहां प्राचीन समय से होता रहा है। यहां निवास करने वाले शिल्पकार सुनार कहलाते हैं। इस समुदाय का मुख्य कार्य सोना से आभूषणों का निर्माण है, परंतु टीकमगढ़, छतरपुर, झांसी, जखोरा, शाहगढ़ आदि स्थानों पर सुनारों की विशेष शाखा है, जिनका व्यवसाय ही पीतल के आभूषण, देवी-देवताओं और अन्य कलात्मक मूर्तियां ढालना है। इसे टीकमगढ़ की धातु कला के नाम से जाना जाता है।

बैतूल का भरेवा शिल्प

प्रदेश का जनजाति बाहुल्य जिला बैतूल भरेवा धातु शिल्प के लिए विख्यात है। भरेवा शिल्प के जनजातीय शिल्पी स्थानीय लोगों की दैनिक आवश्यकताओं, सामाजिक, धार्मिक, आनुष्ठानिक और सौंदर्यपरक रुचि के अनुसार धातु से सामग्री बनाते हैं। भरेवा शिल्पियों की तकनीक, विधि, शिल्प एवं कलाकृतियों को देखकर यह एहसास होता है कि धातु शिल्प की इस उन्नत तकनीक का ज्ञान सदियों से हमारे यहां विद्यमान रहा है। भरेवा अर्थात धातु की ढलाई या भराई का काम करने वाले लोग। गोंडवाना राज्य के समय यह कला प्रचलन में थी। भरेवा शिल्प से अस्त्र-शस्त्र, देवी-देवताओं की मूर्तियां, घोड़े, बैलों की लगाम, घुंघरू आदि बनाये जाते हैं।

चीचली का पीतल शिल्प

नरसिंहपुर जिले में स्थित चीचली धातु शिल्प, तकनीक और निर्माण का स्थल है। चीचली में मुख्यतः पीतल और तांबे की धातु से काम किया जाता है। इसके अलावा यहां के शिल्पी कांसे का उपयोग भी करते हैं। यहां प्रमुख रूप से बर्तन बनाने का काम होता है। यहां के शिल्पी पहले तांबा, पीतल को पिघला कर रचना करते थे, लेकिन अब रेडिमेड धातु जिसे चंदा या सर्किल कहा जाता है, का उपयोग करते हैं। इस शिल्प को अपनाने वाले शिल्पकारों को कसैर, उठेर या तमेर कहा जाता है। चीचली में पहले झांझ, घंटा, घड़ियाल जैसी वस्तुओं का निर्माण अधिक होता था, लेकिन अब परात, डेकची गंज जैसे बर्तन बनाए जाते हैं।

उचेहरा का धातु शिल्प

सतना जिले का उचेहरा कस्बा कांस्य धातु शिल्प निर्माण का बड़ा केन्द्र है। उचेहरा धातु शिल्प की प्रसिद्धि कांसा और फूल द्वारा निर्मित थालियों के कारण है। यहां की बनी थालियां पूरे देश के बर्तन बाजार में विशेष है पिछले कुछ वर्षों से उचेहरा के 'बटलोही' नामक पात्र की भी अच्छी मांग बनी हुई है। बटलोही का उपयोग दाल, चावल पकाने के लिए होता है। उचेहरा के शिल्पी कांसा या फूल, पीतल और मिश्र धातुओं का उपयोग करते हैं।

मंडला की शिल्पकला

मंडला की कांस्यकला का गौरवशाली इतिहास है। यहां लोटा, कटोरी और गिलास जैसे बर्तन का ही निर्माण होता है, लेकिन पहले गमले, फूलदानयुक्त गमलों, कलश, रोशनदान भी बनाये जाते थे। यह देख सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि यहां के शिल्पकार अपने काम में कितने दक्ष थे। पारंपरिक रूप से मंडला में जिस कांस्य शिल्प की तकनीक को अपनाया गया है वह लगभग अन्य क्षेत्रों की शिल्पियों जैसी ही है।

अगरिया लौह शिल्प

अगरिया जनजाति ने पारम्परिक रूप से लौह अयस्कों की खोज की है, उन्होंने अयस्कों को पिघलाकर लोहा प्राप्त किया और इस लोहे से कृषि उपकरण, औजार और शिल्प का निर्माण किया। अगरिया जनजाति के शिल्पी ज्यादातर मंडला, डिंडौरी, शहडोल, सीधी और बालाघाट जिले में निवास करती हैं। अगरिया शिल्पी ग्रामीणों में उपयोग होने वाले सामानों तीर का फाल, भाला, कुल्हाड़ी, चाकू, हंसिया, हथौड़ा, खुरपी, छेनी, फावड़ा, कुदाल, चिमटा, तवा, सांकल, संडसी जैसे सामानों का निर्माण करते हैं। इसके अलावा वे आध्यात्मिक महत्व तथा मान्यता में प्रयोग होने वाली सामग्री का निर्माण भी करते हैं।

मिट्टी शिल्प

मध्यप्रदेश में माटी शिल्प की अति प्राचीन परंपरा है। वर्तमान में प्रदेश भर में कुम्हार समाज की रोजी-रोटी का साधन मिट्टी शिल्प से ही चलता है। वे मिट्टी को आकार देकर देवी- देवताओं की प्रतिमाओं से लेकर जीवनोपयोगी बर्तनों, भवन सामग्री और खिलौने आदि का निर्माण करते हैं। कुम्हार समाज के अलावा प्रदेश की जनजातियां भी मिट्टी के कुशल शिल्पी होते हैं। टेराकोटा और पाटरी से उनके द्वारा बनाई कलाकृतियां देश-विदेश में प्रसिद्ध हैं। मंडला, धार, झाबुआ, ग्वालियर, शिवपुरी, शहडोल, सीधी आदि जिलों के जनजातीय शिल्पियों के माटी शिल्प की अपनी विशेष पहचान है।

मंडला का टेराकोटा

मंडला जिले में निवास करने वाली जनजातियां गोंड, बैगा, प्रधान, धीमा, जिनवार, भूमिया और भेरिया पाटी और टेराकोटा शिल्प के सिद्धहस्त शिल्पी हैं। ये शिल्पी जनजाति समाज की धार्मिक मान्यताओं और परंपरा में काम आने वाली प्रतिमाओं का निर्माण करते हैं। जिसमें बड़ा देव, फुलवारी देवी की प्रतिमाएं, प्रसिद्ध हैं। यहां का माटी शिल्प काले रंग का होता है। इसके अलावा मंडला में बच्चों के तरह-तरह के खिलौने, सजावटी सामानों और गमलों का भी निर्माण होता है।

मालवा का माटी शिल्प

मालवा के धार, झाबुआ तथा निमाड़ जिलों की जनजातियां टेराकोटा शिल्प की कुशल शिल्पकार हैं। यहां के शिल्प में राजस्थान, गुजरात के मिट्टी कला की छाप दिखाई देती है। इन जिलों में भील, भिलाला, बरेला, पटेलिया, नायक और मनका जनजाति माटी शिल्प के कार्य में संलग्न है। यह जनजातियां सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं से जुड़े शिल्प का निर्माण करने के अलावा बाजार की मांग के अनुरूप टेराकोटा शिल्प का निर्माण करते हैं।

ग्वालियर का शिल्प

ग्वालियर, शिवपुरी जिलों में निवास करने वाली सहारिया, भील और भिलाला जनजाति टेराकोटा शिल्प से जुड़े हैं। चैत्र माह में मनाए जाने वाले गणगौर पर्व की सजावट इसी शिल्प से होती है।

काष्ठ कला

मध्यप्रदेश में वनों की बहुलता है इसीलिए यहां काष्ठ कला का इतिहास प्राचीन और समृद्ध है। पूरे प्रदेश में बढ़ई समाज के अलावा जनजातीय समाज के कुछ वर्ग काष्ठ कला में निपुण हैं। बढ़ई समाज के काष्ठ शिल्पी जहां कृषि उपकरणों, भवन सामग्री और ग्रामीणों के लिए आवश्यक सामान का निर्माण करते हैं।

बुधनी का खिलौना उद्योग

बुधनी तहसील के काष्ठ शिल्पियों के बनाये लकड़ी के खिलौने और सजावट की कलाकृतियां अनूठी हैं। बुधनी के काष्ठ शिल्पियों के अनुसार 'दूधी', सागौन और साज की पोलकड़ियों से कलाकृतियां बनाई जाती हैं। बुधनी में कई परिवार इस कला से जुड़े हैं।

पचमढ़ी की काष्ठकला

होशंगाबाद जिले के जनजातीय क्षेत्र केसला, सुखतवा और पचमढ़ी के जनजातियों को यह कला विरासत में मिली है। उनकी बनाई कलाकृतियां देश ही नहीं विदेश में भी प्रसिद्ध हैं। जनजातीय शिल्पी सागौन और साज की लकड़ी से मुखौटे, खिलौने और सजावट में रखने योग्य कलाकृतियां बनाते हैं।

शहडोल का काष्ठ शिल्प

शहडोल जिले के जनजातीय काष्ठ शिल्पियों द्वारा बनाए खिलौने और सजावटी सामग्रियों की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अच्छी मांग है। जिले के करचुल और महरोई गांवों में कई शिल्पी परिवार काष्ठ शिल्प के निर्माण में जुटे हुए हैं। इन शिल्पियों ने विशेष प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है।

रीवा का सुपारी शिल्प

मध्यप्रदेश के रीवा में लकड़ी के साथ सुपारी पर भी अद्भुत शिल्प तैयार किया जाता है। रीवा में सुपारियों पर कलाकारी करके उनकी मूर्तियां और छड़ियां बनाई जाती हैं। सुपारियों का प्रयोग करके भगवान गणेश की मूर्तियां विश्व विख्यात हैं। इसके अलावा सुपारियों और लकड़ी का प्रयोग कर यहां पर खिलौने एवं सजावटी सामान भी बनाए जाते हैं।

प्रस्तुति - शशांक मणि पाण्डे
(लेखक, समसामयिक विषयों पर लेखन करते हैं।)

पृष्ठ 1 का शेष ...

सवाल - मीडिया सर्टिफिकेशन और न्यूज मॉनिटरिंग के लिये क्या विशेष व्यवस्थाएं की गई हैं, जिससे पेड न्यूज पर अंकुश लगाया जा सके?

जबाव - मीडिया मॉनिटरिंग के लिए राज्य और जिला स्तर पर कमेटी बनाई है। इसमें अधिकारी तथा मीडिया के लोग सदस्य हैं। इनके माध्यम से प्री-सर्टिफिकेशन का काम होता है, मीडिया में जो खबरें प्रकाशित होती हैं उसकी मॉनिटरिंग होती है। जनसंपर्क विभाग की मदद से सोशल मीडिया, प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर भी नजर रखे हुए हैं। मीडिया प्रतिनिधियों के लिए कार्यशालाएं आयोजित की हैं।

सवाल - बुजुर्ग मतदाताओं के लिये मतदान केन्द्र पर क्या विशेष व्यवस्था रहेगी?

जबाव - 85 वर्ष से अधिक आयु के मतदाता और दिव्यांग मतदाताओं के पास होम वोटिंग का विकल्प खुला है। यदि वह यह विकल्प चुनते हैं तो मतदान दिनांक के पहले पोस्टल बैलेट के माध्यम से घर पर ही उनसे मतदान कराया जाता है। अगर वे मतदान केन्द्र पर जाकर मतदान करना चाहते हैं तो उनके लिए स्वयं सेवकों की व्यवस्था की गई है। उनको लाइन में नहीं लगना होगा, प्राथमिकता से बुजुर्ग और दिव्यांग मतदाताओं को मतदान करवाया जायेगा।

सवाल - लोकसभा चुनाव में युवाओं की सहभागिता के लिए क्या योजना बनाई गई है?

जबाव - हम स्कूल, कॉलेजों में युवाओं से संवाद कर रहे हैं। कॉलेजों में कैंपस एंबेसडर बनाए हैं, नोडल प्रोफेसर बनाए गए हैं। व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से लगातार युवाओं से संपर्क किया जा रहा है। बूथ लेवल ऑफिसर कॉलेज में पहुंचकर युवाओं को मतदाता सूची में नाम जुड़वाने, वोटर हेल्पलाइन का उपयोग करने आदि की जानकारी देते हैं। युवाओं की सहभागिता के लिए यूथ सेंट्रिक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि लोकसभा चुनाव में युवाओं की अच्छी सहभागिता देखने को मिलेगी।

सवाल - मतदान के समय गर्मी का मौसम है, ऐसी स्थिति में मतदाताओं के लिए क्या विशेष व्यवस्था की गई है?

जबाव - इस बार मतदान का जो समय होगा उस समय गर्मी अपने चरम पर होगी। मतदान केन्द्र के बाहर टेंट, पीने के पानी, ओआरएस और मेडिकल किट की पर्याप्त व्यवस्था की जायेगी। हमारा प्रयास रहेगा कि वेटिंग टाइम कम हो, ताकि लोगों को परेशान न होना पड़े।

सवाल- मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी होने के नाते आप प्रदेश की जनता को क्या संदेश देना चाहेंगे?

जबाव - मेरा प्रदेश के सभी मतदाताओं से आग्रह है कि हमारे राज्य में चार चरणों में मतदान होना है, जिस चरण में, जिस दिनांक को आपके यहां मतदान है उस दिन आप वोट जरूर कीजिए। मतदान करने के साथ अन्य लोगों को भी मतदान के लिए प्रोत्साहित करें। वोट करना आपका अधिकार तो है ही, साथ ही हमारी प्रमुख जिम्मेदारी भी है।

इनसैट-3 डीएस

नए उपग्रह ने भेजी धरती की तस्वीर

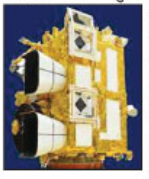

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के नए मौसम विज्ञान उपग्रह इनसैट-3 डीएस ने काम करना शुरू कर दिया है। इस उपग्रह ने पृथ्वी की पहली तस्वीर भेज दी है। इसरो ने सोशल मीडिया पर यह तस्वीर जारी करते हुए लिखा कि इनसैट-3 डीएस ने अपने मिशन के तहत आधुनिक इमेजर और साउंडर पेलोड के माध्यम से पृथ्वी की सुंदरता की पहली झलक दिखाई है। इससे मौसम पूर्वानुमान और वायुमंडलीय गतिशीलता को समझने में मदद मिलेगी। उल्लेखनीय है कि इसरो ने फरवरी माह में इस उपग्रह को लॉन्च किया था।

आइसलैंड

रेक्जेन्स प्रायद्वीप में ज्वालामुखी विस्फोट

आइसलैंड के रेक्जेन्स प्रायद्वीप में ज्वालामुखी विस्फोट के बाद आपातकाल की घोषणा की गई है। रेक्जेन्स में दिसम्बर 2023 के बाद यह चौथा ज्वालामुखी विस्फोट है। जानकारी के अनुसार इसे आइसलैंड का अब तक का सबसे ताकतवर ज्वालामुखी विस्फोट बताया जा रहा है। जानकारी के अनुसार ज्वालामुखी से लावा के साथ धुएं और राख का गुबार भी निकल रहा है। लावा ग्रिंडाविक कस्बे तक पहुंच गया है, जिसके कारण स्थानीय लोगों और पर्यटकों को सुरक्षित जगह पर पहुंचाया गया है।

नेपाल ने

पोखरा को बनाया देश की पर्यटन राजधानी

नेपाल सरकार ने गंडकी प्रांत के शहर पोखरा को देश की पर्यटन राजधानी घोषित किया है। नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड ने एक समारोह में इसकी घोषणा करते हुए कहा कि यह सुरम्य शहर अब पर्यटन राजधानी के रूप में पहचाना जाएगा। उन्होंने कहा कि पर्यटन का केंद्र होने से इस शहर को सभी आवश्यक मानदंडों को पूरा करने के बाद पर्यटन राजधानी के रूप में नामित किया गया है, इससे पोखरा को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर पहचानने योग्य ब्रांड बनाने में मदद मिलेगी।

विनय कुमार

रूस में भारत के नए राजदूत नियुक्त

विदेश मंत्रालय ने भारतीय विदेश सेवा के वर्ष 1992 बैच के अधिकारी विनय कुमार को रूस में भारत का राजदूत नियुक्त किया है, वे पवन कपूर की जगह लेंगे। विदेश मंत्रालय ने कहा कि आई.एफ.एस. विनय कुमार को लंबा अनुभव है, वे विदेश मंत्रालय के मुख्यालय में अतिरिक्त सचिव के रूप में कार्य कर चुके हैं। विनय कुमार 2021 से म्यांमार में भारत के राजदूत के रूप में पदस्थ हैं।

प्रभा वर्मा

कृति 'रौद्र सात्विकम्' को मिला सरस्वती सम्मान

केरल के प्रख्यात कवि और साहित्यकार प्रभा वर्मा को उनकी काव्य कृति 'रौद्र सात्विकम्' के लिए प्रतिष्ठित सरस्वती सम्मान पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान प्रदान करने वाली संस्था के.के. बिरला फाउंडेशन ने बताया कि उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश ए.के. सीकरी की अध्यक्षता वाली 13 सदस्यीय चयन समिति ने इस सम्मान के लिए 'रौद्र सात्विकम्' का चयन किया है। यह सम्मान प्रतिवर्ष किसी भारतीय नागरिक की ऐसी उत्कृष्ट कृति को दिया जाता है, जो भारत के संविधान की आठवीं सूची में उल्लेखित किसी भी भारतीय भाषा में प्रकाशित हुई हो। उल्लेखनीय है कि अंग्रेजी और मलयालम भाषा में रचनाएं लिखने वाले प्रभा वर्मा पहले भी साहित्य अकादमी सहित कई पुरस्कार हासिल कर चुके हैं।

पंकज आडवाणी

बिलियर्ड्स हॉल ऑफ फेम में हुए शामिल

भारत के स्टार खिलाड़ी पंकज आडवाणी ने अपने कॅरियर में एक और उपलब्धि हासिल की है। पंकज को चीन में स्थित वर्ल्ड बिलियर्ड्स म्यूजियम के हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया है। म्यूजियम में पंकज की फोटो लगाकर उनको सम्मानित किया गया है। 38 वर्षीय पंकज ने अब तक 18 बार बिलियर्ड्स विश्व चैम्पियनशिप, 17 बार आईबीएसएफ वर्ल्ड बिलियर्ड्स चैम्पियनशिप और एक बार वर्ल्ड टीम बिलियर्ड्स चैम्पियनशिप जीती है। इसके साथ ही पंकज ने 8 बार स्नूकर वर्ल्ड टाइटल भी जीते हैं। पंकज वर्ष 2004 में अर्जुन पुरस्कार, वर्ष 2006 में खेल रत्न पुरस्कार, वर्ष 2009 में पद्मश्री तथा वर्ष 2018 में पद्मभूषण पुरस्कार हासिल कर चुके हैं।

नासा की

चंद्रमा पर वैज्ञानिक बेस बनाने की तैयारी

अंतरिक्ष के रहस्यों को सुलझाने के लिए अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा अब चंद्रमा पर अपना वैज्ञानिक बेस बनाएगी। नासा ने इसके लिए पूरी योजना तैयार कर ली है। ब्रिटिश वैज्ञानिक डॉ. मैगी एडरिन पोकॉक ने नासा की आर्टेमिस परियोजना और चंद्रमा पर बेस बनाने की योजना के संबंध में बताया कि नासा आर्टेमिस मिशन के तहत 50 वर्ष बाद इंसान को चंद्रमा पर भेज रहा है, लेकिन इस मिशन का उद्देश्य चंद्रमा को एक स्टेजिंग पोस्ट के रूप में इस्तेमाल करना है। उन्होंने कहा कि चंद्रमा पृथ्वी से काफी छोटा ग्रह है, ऐसे में वहां गुरुत्वाकर्षण बल कम है, जिसके कारण चंद्रमा पर वैज्ञानिक बेस बनाने से नासा को अंतरिक्ष मिशन लॉन्च करने में आसानी होगी।

डेविन

विश्व का पहला एआई सॉफ्टवेयर इंजीनियर

अमेरिका एआई लैब कॉग्निश्न ने आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित सॉफ्टवेयर इंजीनियर रोबोट लॉन्च किया है। कंपनी का दावा है कि ये दुनिया का पहला एआई सॉफ्टवेयर इंजीनियर है, जिसमें मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का इस्तेमाल किया गया है। इस रोबोट को डेविन नाम दिया गया है। डेविन सॉफ्टवेयर इंजीनियर की तरह वेबसाइट बना सकता है। कम्प्यूटर बग की पहचान कर सकता है, उसे ठीक कर सकता है। इसके साथ ही डेविन वीडियो बनाने के लिए कोडिंग कर सकता है। ये टीम के साथ और अकेले भी काम करने में सक्षम है।

चीन ने बनाई

घोस्ट पार्टिकल खोजने के लिए प्रयोगशाला

चीन में वैज्ञानिकों ने काइपिंग शहर में जमीन से 700 मीटर नीचे दुनिया की सबसे बड़ी भूमिगत प्रयोगशाला बनाई है। 35 मीटर व्यास वाली यह प्रयोगशाला घोस्ट पार्टिकल खोजने के लिए बनाई गई है। यह प्रयोगशाला इस वर्ष के अंत तक खोज में जुट जाएगी। वैज्ञानिकों ने बताया कि ब्रह्मांड में जो घोस्ट पार्टिकल्स है, उनमें से ज्यादातर का निर्माण बिग बैंग के समय यानी ब्रह्मांड के निर्माण के समय हुआ है।

स्पेस एक्स ने

एक साथ लॉन्च किए 22 स्टारलिंक उपग्रह

एलन मस्क के स्वामित्व वाली स्पेस एक्स कंपनी ने 22 स्टारलिंक उपग्रहों का नया बैच लॉन्च किया है। इन उपग्रहों को कैलिफोर्निया के वेंडनबर्ग स्पेस फोर्स बेस से फाल्कन-9 रॉकेट के जरिए पृथ्वी की निचली कक्षा में पहुंचाया गया। स्पेस एक्स ने बताया कि इन 22 उपग्रहों के जरिए दुनियाभर में इंटरनेट की सेवाएं तेज गति से मिल सकेंगी। स्पेस एक्स ने बताया कि कंपनी इस वर्ष अब तक 26 बैच लॉन्च कर चुकी है।

फिनलैंड

सातवीं बार बना सबसे खुशहाल देश

फिनलैंड एक बार फिर दुनिया का सबसे खुशहाल देश बन गया है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट के अनुसार खुशहाल देशों की रैंकिंग के मामले में नॉर्डिक देशों का दबदबा कायम है। इस रिपोर्ट के अनुसार फिनलैंड लगातार सातवीं बार दुनिया का सबसे खुशहाल देश है। इस रिपोर्ट में 143 देशों का आंकलन किया गया है। शीर्ष 10 देशों में फिनलैंड के बाद डेनमार्क, आइसलैंड, स्वीडन, इजराइल, नीदरलैंड्स, नॉर्वे, लक्जमबर्ग, स्विट्जरलैंड और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं।

लियो वराडकर

आयरलैंड के प्रधानमंत्री ने दिया इस्तीफा

आयरलैंड के प्रधानमंत्री लियो वराडकर ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। वराडकर ने कहा कि वे आयरलैंड की गठबंधन सरकार में शामिल फाइन गेल पार्टी के अध्यक्ष का पद तत्काल छोड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि उनके पद छोड़ने का कारण व्यक्तिगत और राजनीतिक दोनों है। पार्टी नेतृत्व की ओर से नए नेता का चुनाव करने के बाद उन्हें प्रधानमंत्री पद की जिम्मेदारी सौंप दी जाएगी।

ऑस्ट्रेलिया में

कीड़े की नई प्रजाति मिली

ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड राज्य में शोधकर्ताओं को कीड़े की एक नई प्रजाति मिली है। ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रीय विज्ञान एजेंसी सीएसआईआरओ ने बताया कि यह कीड़ा लॉन्गहॉर्न बीटल परिवार का सदस्य है। इस प्रजाति को एक्सकास्था एल्बोपिलोसोमा नाम दिया गया है। यह कीड़ा लैमिंगटन नेशनल पार्क के जंगलों में पाया गया है।

वो वान थुओंग

वियतनाम के राष्ट्रपति ने दिया इस्तीफा

वियतनाम के राष्ट्रपति वो वान थुओंग ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी ने उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया है। थुओंग 2 मार्च 2023 को वियतनाम के राष्ट्रपति बने थे। वियतनाम सरकार के अनुसार थुओंग ने पार्टी के नियमों का उल्लंघन किया है। खबरों के अनुसार थुओंग के इस्तीफे को वियतनाम में चल रहे रिश्वत विरोधी अभियान से जोड़ा जा रहा है। इस आंदोलन का उद्देश्य भ्रष्टाचार को खत्म करना है। इसके कारण वियतनाम में राजनीतिक सत्ता का संघर्ष पनप रहा है।

अंश नेरुरकर

फ्यूचर कैटेगरी खिताब जीतने वाले पहले भारतीय बने

भारत के 11 वर्षीय नवोदित शतरंज खिलाड़ी अंश नेरुरकर ने चेक गणराज्य में आयोजित प्राग अंतर्राष्ट्रीय शतरंज टूर्नामेंट में इतिहास रच दिया है। अंश टूर्नामेंट में फ्यूचर कैटेगरी का खिताब जीतने वाले पहले भारतीय शतरंज खिलाड़ी बन गए हैं। प्रतियोगिता में अंश ने ग्रैंड मास्टर आर. प्रगाननंदा के साथ मिलकर सर्वश्रेष्ठ टीम का पुरस्कार भी जीता है। अंश ने नौ दौर की इस प्रतियोगिता में सात बाजियां जीतीं, वहीं दो बाजी ड्रॉ रहीं। उल्लेखनीय है कि फ्यूचर कैटेगरी में पूरी दुनिया से 10 खिलाड़ी खेलते हैं।

स्मृति शेष

भारत के पूर्व एथलीट बुधवा उरांव का निधन

भारत के पूर्व अंतर्राष्ट्रीय एथलीट बुधवा उरांव का 75 वर्ष की आयु में निधन हो गया। झारखंड पुलिस में उप पुलिस अधीक्षक (डीएसपी) रह चुके उरांव वर्ष 1986 में आयोजित एशियाई खेलों में 800 मीटर दौड़ में तकनीकी कारणों से स्वर्ण पदक जीतने से चूक गए थे। उन्होंने वर्ष 1989 में कनाडा वर्ल्ड पुलिस गेम्स में एक स्वर्ण और एक रजत पदक जीता था। साथ ही उन्होंने 1987 के दक्षिण एशियाई खेलों में नए राष्ट्रीय रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक जीता था। वे झारखंड एथलेटिक्स एसोसिएशन के सचिव भी रह चुके हैं।

पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेट कप्तान सईद अहमद का निधन

पाकिस्तान क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सईद अहमद का निधन हो गया है। वे 86 वर्ष के थे। पाकिस्तान के लिए 41 टेस्ट मैच खेलने वाले सईद ने जनवरी 1958 में वेस्टइंडीज के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया है। सईद ने टेस्ट क्रिकेट में 5 शतक और 16 अर्धशतकों के साथ 2991 रन बनाये हैं। उन्होंने गेंदबाजी में भी अपना जौहर दिखाते हुए 22 टेस्ट विकेट झटके हैं। वर्ष 1969 में इंग्लैंड दौरे पर सईद को पाकिस्तान क्रिकेट टीम की कमान सौंपी गई थी, सईद ने 3 मैचों में टीम की कप्तानी की। उन्होंने आखिरी टेस्ट मैच ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वर्ष 1972 में खेला था।

(स्रोत : संपादकीय टीम द्वारा संकलित, फोटो : गूगल से साभार)

राष्ट्रीय समुद्री दिवस - 5 अप्रैल

भारत की समुद्री परंपरा के गौरवशाली इतिहास का उत्सव है राष्ट्रीय समुद्री दिवस

राष्ट्रीय समुद्री दिवस भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में समुद्री व्यापार और वैश्विक व्यापार में अपने रणनीतिक स्थान की महत्वपूर्ण भूमिका को समर्पित है। राष्ट्रीय समुद्री दिवस पांच अप्रैल को मनाया जाता है। इस दिन भारत की समुद्री परंपरा के गौरवशाली इतिहास का उत्सव मनाया जाता है। इसका आयोजन भारत के शिपिंग उद्योग को प्रोत्साहित करने हेतु किया जाता है। शिपिंग उद्योग देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है। समुद्र में जीवन जोखिम भरा है और हर दिन नई चुनौतियों के साथ आता है। भारत में समुद्री क्षेत्र का संपन्न इतिहास रहा है। इसमें राष्ट्र के बदलाव को ऊर्जा देने की पूरी संभावनाएं हैं। राष्ट्रीय समुद्री दिवस पर हम राष्ट्र की संपन्नता के लिए अपनी समुद्री ताकत को और बढ़ाने के लिए प्रतिबद्धता जाहिर करते हैं। भारत अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO) का भी सदस्य है। पिछले साल (2023) दिसंबर में भारत को अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO) परिषद के लिये फिर से चुना गया है, जो IMO में भारत की निरंतर सेवा का प्रतीक है। इस साल भारत में 61वां राष्ट्रीय समुद्री दिवस मनाया जा रहा है। राष्ट्रीय समुद्री दिवस के समारोह के दौरान, 'एनएमडी उत्कृष्टता पुरस्कार' आमतौर पर वरिष्ठ स्तर पर भारतीय समुद्री क्षेत्र में उनके जीवनकाल की विशिष्ट और असाधारण उपलब्धियों के लिए व्यक्तियों को पहचानने और सम्मानित करने के लिए दिया जाता है।

क्यों मनाया जाता है राष्ट्रीय समुद्री दिवस?

पहली बार, 5 अप्रैल, 1919 में भारतीय कंपनी सिंधिया स्टीम नैवीगेशन कंपनी लिमिटेड का एसएस लॉयल्टी नामक जहाज व्यापार करने के लिए भारत से लंदन गया। भारत के नेविगेशन में यह एक ऐतिहासिक तारीख थी, क्योंकि भारत ने तब यह इतिहास रचा था जब भारत के समुद्री मार्गों पर अंग्रेजों का नियंत्रण था। उस जहाज का स्वामित्व एससी इंडिया स्टीम नेविगेशन कंपनी लिमिटेड के पास था जो उस समय की सबसे बड़ी स्वदेशी पोत परिवहन कंपनी थी। उसकी याद में बंदरगाह, जहाजरानी एवं जलमार्ग मंत्रालय प्रत्येक वर्ष पांच अप्रैल को राष्ट्रीय समुद्री दिवस के रूप में मनाता है। आपको बता दें कि पहली बार यह दिन 5 अप्रैल, 1964 को दुनियाभर में अंतरमहाद्वीपीय वाणिज्य और अर्थव्यवस्था के बारे में लोगों को जानकारी देने और जागरूकता फैलाने के लिए मनाया गया था।

अलग-अलग दिन मनाए जाते हैं राष्ट्रीय और विश्व समुद्री दिवस

5 अप्रैल को राष्ट्रीय समुद्री दिवस मनाया जाता है जबकि हर साल सितंबर महीने के अंतिम गुरुवार को विश्व समुद्री दिवस मनाया जाता है। इस साल 20 से 22 अक्टूबर, 2024 तक स्पेन में विश्व समुद्री दिवस का मुख्य कार्यक्रम आयोजित होगा। इस वर्ष की थीम, भविष्य को नेविगेट करना : सुरक्षा पहले! (Navigating the Future : Safety First!) यह समुद्री पर्यावरण की सुरक्षा के साथ-साथ समुद्री सुरक्षा को बढ़ाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (International Maritime Organization) के काम को दर्शाता है। 1978 से, सितंबर के प्रत्येक अंतिम गुरुवार को विश्व समुद्री दिवस के रूप में मनाया जाता है।

IMO क्या है?

शिपिंग उद्योग को नियमित करने के लिए 1948 में अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (आईएमओ) की स्थापना की गई थी। IMO की स्थापना 1948 में जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के बाद हुई थी और 1958 में अस्तित्व में आया। IMO संयुक्त राष्ट्र (UN) की एक विशेष एजेंसी है। IMO में 176 सदस्य देश और तीन सहयोगी सदस्य हैं, इसका मुख्यालय लंदन, यूनाइटेड किंगडम में है। भारत 1959 में IMO में शामिल हुआ। भारत समुद्री मामलों के प्रति अपनी निरंतर प्रतिबद्धता को उजागर करते हुए IMO परिषद की श्रेणी-बी में बना हुआ है।

यह एक वैश्विक अंतर्राष्ट्रीय मानक-निर्धारण प्राधिकरण है, जो मुख्य रूप से अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग की सुरक्षा में सुधार करने और जहाजों द्वारा होने वाले प्रदूषण को रोकने हेतु उत्तरदायी है। आईएमओ यानी अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन शिपिंग की सुरक्षा और जहाजों द्वारा समुद्री और वायुमंडलीय प्रदूषण की रोकथाम की जिम्मेदारी लेती है। आईएमओ के कार्य संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों का समर्थन करते हैं। आने वाले वर्षों में टिकाऊ शिपिंग और टिकाऊ समुद्री विकास को बढ़ावा देना आईएमओ की प्रमुख प्राथमिकताओं में से एक है। इस समय आर्सेनियो डोमिंग्वेज अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन के महासचिव हैं। आर्सेनियो पनामा गणराज्य के हैं और अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन के दसवें निर्वाचित महासचिव हैं।

राष्ट्रीय समुद्री दिवस के दिन पुरस्कार भी दिए जाते हैं

भारत में राष्ट्रीय समुद्री दिवस पर उन लोगों के लिए एक पुरस्कार समारोह भी आयोजित किया जाता है, जिन्होंने भारतीय समुद्री क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दिया है। इस पुरस्कार को वरुण पुरस्कार के रूप में जाना जाता है जिसमें भगवान वरुण की एक प्रतिमा और एक प्रशस्ति पत्र शामिल होता है। समारोह के दौरान एनएमडी उत्कृष्टता पुरस्कार भी दिया जाता है, जिसमें एक ट्रॉफी और एक प्रशस्ति पत्र शामिल होता है। यह भारतीय समुद्री क्षेत्र में वरिष्ठ कार्यात्मक स्तर पर व्यक्तियों को उनके जीवनकाल की असाधारण और विशिष्ट उपलब्धियों या प्रदर्शन के लिए पहचानने और सम्मानित करने के लिए दिया जाता है। पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय नाविकों की सेवाओं और समुद्री क्षेत्र से जुड़े अन्य व्यक्तियों की सेवाओं को सम्मानित करने के लिए समुद्री क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रतिष्ठित हस्तियों को निम्न पुरस्कार प्रदान करता है :-

- **सागर सम्मान, वरुण पुरस्कार :** भारतीय नौवहन या संबद्ध समुद्री उद्योगों में निरंतर और उत्कृष्ट योगदान देने वाले व्यक्तियों को पहचान और सम्मान देने के लिए वरुण पुरस्कार प्रदान किया जाता है।
- **उत्कृष्टता के लिए सागर सम्मान पुरस्कार :** भारतीय नौवहन या भारतीय समुद्री उद्योग में नौवहन व्यवसाय, वाणिज्यिक संचालन, मानव संसाधन विकास, समुद्री प्रौद्योगिकी और औद्योगिक संबंधों के प्रबंधन के क्षेत्रों में वरिष्ठ कार्यात्मक स्तर पर व्यक्तियों को उनकी आजीवन असाधारण और विशिष्ट उपलब्धियों या प्रदर्शन के लिए पहचान और सम्मानस्वरूप यह पुरस्कार दिया जाता है।
- **वीरता के लिए सागर सम्मान पुरस्कार :** भारतीय नाविकों (अधिकारियों सहित) को भारत या अन्य जगहों पर मर्चेंट नेवी में उनके शौर्यपूर्ण अनुकरणीय कार्यों के लिए वीरता पुरस्कार दिया जाता है।
- **उत्कृष्ट समुद्री प्रशिक्षण संस्थान:** उत्कृष्ट भारतीय शिपिंग कंपनी, नाविकों के उत्कृष्ट भारतीय नियोक्ता, नाविकों के उत्कृष्ट विदेशी नियोक्ता, उत्कृष्ट भारतीय बंदरगाह और उत्कृष्ट भारतीय टर्मिनल को भारतीय नौवहन और भारतीय नाविकों के लिए उनके द्वारा निरंतर योगदान दिए जाने के साथ ही साथ उन्हें अधिकतम प्रयास करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए सम्मान और पुरस्कार दिया जाता है।

देश में हैं 12 प्रमुख पोर्ट

भारत में प्रमुख बंदरगाहों (Ports) की बात करें तो इनकी संख्या बारह है। देश में 12 प्रमुख पोर्ट के अलावा 200 छोटे पत्तन या पोर्ट हैं। प्रमुख पोर्ट पोत परिवहन मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में हैं, जबकि छोटे बंदरगाह संबंधित राज्य समुद्री बोर्डों या राज्य सरकार के अधिकार क्षेत्र में हैं।

ये हैं प्रमुख पोर्ट

1. चेन्नई पत्तन न्यास
2. कोचीन पत्तन न्यास
3. दीनदयाल पत्तन न्यास
4. जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास
5. कामराजर पोर्ट
6. पारादीप पोर्ट ट्रस्ट
7. कोलकाता पत्तन न्यास
8. मुरगांव पत्तन न्यास
9. मुंबई पत्तन न्यास
10. न्यू मंगलौर पत्तन न्यास
11. विशाखापत्तनम पत्तन न्यास
12. वी.ओ. चिदंबरनार पत्तन न्यास

राष्ट्रीय राजमार्ग की तरह राष्ट्रीय जलमार्ग पर होता है आवागमन

भारत में अंतर्देशीय जलमार्गों के विकास और विनियमन हेतु भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI) की स्थापना 27 अक्तूबर, 1986 को की गई थी। राष्ट्रीय जलमार्ग अधिनियम 2016 के अनुसार, 111 जलमार्गों को राष्ट्रीय जलमार्ग (National Waterways-NW) घोषित किया गया है। IWAI जहाजरानी मंत्रालय (Ministry of Shipping) के अधीन एक सांविधिक निकाय है। यह जहाजरानी मंत्रालय से प्राप्त अनुदान के माध्यम से राष्ट्रीय जलमार्गों पर अंतर्देशीय जल परिवहन अवसंरचना के विकास और अनुरक्षण का कार्य करता है। इस प्राधिकरण का मुख्यालय नोएडा में स्थित है। जबकि इसके क्षेत्रीय कार्यालय पटना, कोलकाता, गुवाहाटी और कोच्चि में हैं तथा उप कार्यालय प्रयागराज (इलाहाबाद), वाराणसी, फरक्का, साहिबगंज, हल्दिया, स्वरूपगंज, हेमनगर, डिब्रूगढ़, धुब्री, सिलचर, कोल्लम, भुवनेश्वर और विजयवाड़ा में स्थित हैं।

राष्ट्रीय जलमार्ग का प्रयोग विभिन्न कार्गो जलयानों, पर्यटक जलयानों तथा भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण जलयानों आदि द्वारा किया जाता है। भारत में लगभग 14,500 किलोमीटर के नौगम्य जलमार्ग हैं जिनमें नदियां, नहरें, अप्रवाही जल, खाड़ी आदि शामिल हैं। अंतर्देशीय जल परिवहन द्वारा ईंधन दक्ष और पर्यानुकूल माध्यम से लगभग 126 मिलियन मीट्रिक टन (MMT) कार्गो की ढुलाई सालभर में की जा रही है। वर्तमान में इनका संचालन गंगा, भागीरथी, हुगली नदियों, ब्रह्मपुत्र, बराक नदी, गोवा की नदियों, केरल के अप्रवाही जल, मुंबई के अंतर्देशीय जलक्षेत्र और गोदावरी कृष्णा नदियों के डेल्टा क्षेत्रों के कुछ हिस्सों तक सीमित है। इन यांत्रिक जलयानों के संगठित परिचालन के अलावा, विभिन्न क्षमताओं वाली देशी नौकाएं भी विभिन्न नदियों और नहरों में परिचालित होती हैं और इस असंगठित क्षेत्र में भी कार्गो और यात्रियों की पर्याप्त मात्रा में आवाजाही होती है। राष्ट्रीय जलमार्ग अधिनियम, 2016 के तहत देश में 111 एनडब्ल्यू के साथ कच्छ नदी प्रणाली के जवाई-लूनी-रण को 615 किलोमीटर (राजस्थान में 205 किमी और गुजरात में 410 किलोमीटर) की कुल लंबाई के लिए राष्ट्रीय जलमार्ग-48 घोषित किया गया है।

राष्ट्रीय जलमार्ग 1

राष्ट्रीय जलमार्ग 1 की घोषणा अक्टूबर 1986 में की गई थी। हल्दिया (सागर) और इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के बीच (1620 कि.मी.) गंगा-भागीरथी-हुगली नदी प्रणाली को 1986 में राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या 1 (रा.ज.-1) के रूप में घोषित किया गया था।

राष्ट्रीय जलमार्ग 2

बांग्लादेश सीमा तथा सदिया के बीच 891 कि.मी. की लंबाई वाली ब्रह्मपुत्र नदी 01 सितम्बर, 1988 को राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या 2 (रा.ज.-2) घोषित की गई थी।

राष्ट्रीय जलमार्ग 3

राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-3 की कुल लम्बाई 205 किलोमीटर है। इसका विस्तार केरल के पश्चिमी तटीय क्षेत्र में है। इस जलमार्ग की घोषणा फरवरी 1993 में की गई। यह भारत का पहला राष्ट्रीय जलमार्ग है, जिसके पूरे विस्तार में, 24 घंटे नौकायन की सुविधा है। राष्ट्रीय जलमार्ग 3 में वेस्ट कोस्ट नहर (कोट्टापुरम - कोल्लम), चंपाकारा और उद्योगमंडल नहर शामिल हैं।

राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या 4

इस जलमार्ग की घोषणा 25.11.2008 को की गई है। राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-4 के अंतर्गत भद्राचलम से राजामुंद्री के बीच गोदावरी नदी के जलमार्ग को, वजीराबाद से विजयवाड़ा के बीच कृष्णा नदी जलमार्ग को तथा काकीनाडा से पुदुचेरी के बीच नहर-जलमार्ग को शामिल किया गया है। इस जलमार्ग की कुल लम्बाई 1095 किलोमीटर है।

राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या 5

इस जलमार्ग की घोषणा भी राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-4 के साथ ही 25-11-2008 को की गई है। राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या - 5 के अन्तर्गत तालचेर से धमरा के बीच ब्राह्मणी नदी तंत्र के जलमार्ग को, जियोनखली से चरबतिया के बीच पूर्वी तट नहर जलमार्ग को, चरबतिया से धमरा के बीच मताई नदी जलमार्ग को तथा मंगलगढ़ी से पारादीप के बीच महानदी के डेल्टाई नदियों के जलमार्ग को शामिल किया गया है। इस जलमार्ग की कुल लम्बाई 623 किलोमीटर है।

राष्ट्रीय जलमार्ग 16

भारत में बराक नदी का लखीमपुर और भंगा के बीच 121 किलोमीटर का नौचालन प्रखंड है जिसे वर्ष 2016 में राष्ट्रीय जलमार्ग-16 घोषित किया गया है। बराक नदी उत्तर पूर्वी क्षेत्र की दूसरी सबसे बड़ी नदी है। इसका उद्गम स्थल नागालैंड के कोहिमा के दक्षिण में नागालैंड - मणिपुर बॉर्डर के पास है। यह नदी नागालैंड, मणिपुर और असम में से गुजरने के बाद भंगा में दो धाराओं में विभाजित हो जाती है जिसे सुरमा और कुशीयारा कहा जाता है। ये दोनों धाराएं बांग्लादेश के मार्कुली में जाकर फिर से मिल जाती हैं और उसके बाद इस नदी को मेघना कहा जाता है। बराक - मेघना नदी प्रणाली की कुल लंबाई 900 किलोमीटर (उद्गम से लेकर बांग्लादेश के चंदपुर तक) है। इसमें से 524 किलोमीटर भारत में है, 31 किलोमीटर भारत-बांग्लादेश सीमा पर और शेष बांग्लादेश में है। भारत के 524 किलोमीटर में से 403 किलोमीटर लखीमपुर प्रखंड में है जो कि पहाड़ी इलाके में हैं और यह नौपरिवहन योग्य नहीं है।

वर्ष 2016 में 106 जलमार्गों को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित करने के बाद मौजूदा पांच राष्ट्रीय जलमार्गों की सूची में कुल 111 राष्ट्रीय जलमार्ग हो गए हैं।

- रश्मि रंजन

(लेखिका, सम-सामयिक विषयों पर लेखन करती हैं)

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

हिन्दी

1. चाँद का मुंह टेढ़ा (काव्य) के रचयिता हैं?
A. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
B. भवानी प्रसाद मिश्र
C. गजानन माधव मुक्तिबोध
D. गिरिजा कुमार माथुर
उत्तर- C. गजानन माधव मुक्तिबोध

2. अशोक के फूल (निबंध-संग्रह) के रचनाकार हैं?
A. कुबेरनाथ राय
B. गुलाब राय
C. रामचन्द्र शुक्ल
D. हजारी प्रसाद द्विवेदी
उत्तर- D. हजारी प्रसाद द्विवेदी

3. प्रेमचंद के अधूरे उपन्यास का नाम है?
A. गबन B. रंगभूमि
C. मंगलसूत्र D. सेवासदन
उत्तर- C. मंगलसूत्र

4. ध्रुवस्वामिनी (नाटक) के नाटककार हैं?
A. रामकुमार वर्मा
B. रामवृक्ष बेनीपुरी
C. जयशंकर प्रसाद
D. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
उत्तर- C. जयशंकर प्रसाद

5. निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति का मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को शूल।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा छंद है?
A. सोरठा B. दोहा
C. रोला D. हरिगीतिका
उत्तर- B. दोहा

6. डॉ. नागेन्द्र द्वारा लिखित ग्रंथ है?
A. हिन्दी साहित्य का रीतिकाल
B. रीतिकाल स्वरूप व प्रवृत्तियां
C. रीतिकाल की भूमिका व प्रवृत्तियां
D. रीतिकाव्य की भूमिका
उत्तर- D. रीतिकाव्य की भूमिका

7. इनमें से 'गंगौली' गांव किस उपन्यास के केन्द्र में है?
A. जल टूटता हुआ
B. अलग-अलग वैतरणी
C. परती : परिकथा
D. आधा गांव
उत्तर- C. आधा गांव

8. केशवदास द्वारा रचित महाकाव्य है?
A. विज्ञानगीता
B. रामचन्द्रिका
C. जहांगीर दास चन्द्रिका
D. रसिक प्रिया
उत्तर- B. रामचन्द्रिका

9. निम्नलिखित में से कौन मिश्र बंधु नहीं है?
A. शुकदेव बिहारी मिश्र
B. कृष्ण बिहारी मिश्र
C. श्याम बिहारी मिश्र
D. गणेश बिहारी मिश्र
उत्तर- B. कृष्ण बिहारी मिश्र

10. इनमें से काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापकों में कौन नहीं हैं?
A. बाबू श्याम सुन्दर दास
B. ठाकुर शिव कुमार सिंह
C. रामनारायण मिश्र
D. रामचन्द्र शुक्ल
उत्तर- D. रामचन्द्र शुक्ल

11. हिन्दी संत काव्य में 'हंस' का प्रतीकार्थ है?
A. नीरक्षीर विवेकी पक्षी
B. आत्मा
C. सूर्य
D. अवधूत
उत्तर- B. आत्मा

12. 'लाल चन्द्रिका' के रचनाकार हैं?
A. लल्लू लाल
B. सदल मिश्र
C. गंगा प्रसाद शुक्ल
D. राजा शिवप्रसाद
उत्तर- A. लल्लू लाल

13. 'कुवलयमाला कथा' के रचनाकार हैं?
A. रोड़ कवि B. उद्यतन सूरि
C. दामोदर शर्मा D. ज्योतिरीश्वर
उत्तर- B. उद्यतन सूरि

14. 'उक्तिव्यक्ति प्रकरण' ग्रंथ का विषय है?
A. पुराण B. आनंद
C. भक्ति D. व्याकरण
उत्तर- D. व्याकरण

15. 'अष्टछाप' के कवि नहीं है?
A. रैदास
B. कृष्णदास
C. परमानंद दास
D. नंद दास
उत्तर- A. रैदास

16. इनमें से कौन-सा कवि रामभक्त नहीं है?
A. अग्रदास B. सुन्दरदास
C. तुलसीदास D. मलूकदास
उत्तर- B. सुन्दरदास

17. 'केशव कहि न जाइ का कहिए, देखत सब रचना विचित्र अति, समुझि मनाहि मन रहिए' किस कवि की पंक्ति है?
A. केशवदास B. सूरदास
C. तुलसीदास D. नन्ददास
उत्तर- C. तुलसीदास

18. 'सुख सागर' के रचनाकार है?
A. सदल मिश्र
B. लल्लू लाल
C. हरिश्चन्द्र
D. मुंशी सदासुखलाल
उत्तर- D. मुंशी सदासुखलाल

19. 'बालबोधनी' मासिक पत्रिका के संपादक थे?
A. प्रताप नारायण मिश्र
B. राधाचरण गोस्वामी
C. भारतेंदु हरिश्चन्द्र
D. ठाकुर जगमोहन सिंह
उत्तर- C. भारतेंदु हरिश्चन्द्र

20. 'जयवर्द्धमान' नाटक के लेखक कौन हैं?
A. डॉ. रामकुमार वर्मा
B. उपेन्द्र नाथ अश्क
C. उदय शंकर भट्ट
D. सेठ गोविंददास
उत्तर- A. डॉ. रामकुमार वर्मा

21. 'मुकुल' नामक कविता संग्रह किस रचनाकार का है?
A. नरेन्द्र शर्मा
B. माखनलाल चतुर्वेदी
C. रामेश्वर शुक्ल अंचल
D. सुभद्रा कुमारी चौहान
उत्तर- D. सुभद्रा कुमारी चौहान

22. ''जसोदा! कहा कहौं हौं बात? तुम्हरे सुत के करतब मो पै कहत कहे नहिजात।
ये किस कवि की काव्य पंक्तियां है?
A. सूरदास B. चतुर्भुजदास
C. कुम्भनदास D. हरिदास
उत्तर- B. चतुर्भुजदास

23. एही रूप सकती औ सीऊ।
एही रूप त्रिभुवन कर जीऊ।।
एही रूप प्रगटे बहुभेसा।
एही रूप जग रंक नरेसा।।
काव्य पंक्ति किस कवि की है?
A. मंझन B. तुलसीदास
C. कुतुबन D. हृदयनाथ
उत्तर- A. मंझन (मधुमालती की पंक्तियां हैं)

24. यह अभिनव मानव प्रजा सृष्टि द्वयता में लगी निरंतर ही वर्णों की करती रहे वृष्टि''
ये काव्य पंक्तियां किस कवि की हैं?
A. जयशंकर प्रसाद
B. सुमित्रा नंदन पंत
C. महादेवी वर्मा
D. रामधारी सिंह दिनकर
उत्तर- A. जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

25. कमलेश्वर द्वारा रचित कहानी नहीं है?
A. राजा निरबंसिया
B. मांस का दरिया
C. जार्ज पंचम की नाक
D. एक और जिंदगी
उत्तर- D. एक और जिंदगी

26. इनमें से किस उपन्यास के लेखक अमृतलाल नागर नहीं है?
A. सुहाग के नुपुर
B. मानस के हंस
C. भूले बिसरे चित्र
D. बूंद और समुद्र
उत्तर- C. भूले बिसरे चित्र (भगवतीचरण वर्मा)

27. पानी परात को हाथ छुयौ नहि नैनन के जल सो पग धोए, किसकी पंक्ति है?
A. सूरदास B. रहीम
C. गंगकवि D. नरोत्तम दास
उत्तर- D. नरोत्तम दास

28. 'उत्तरकबीर' नामक कविता किस कवि की है?
A. केदारनाथ सिंह
B. अशोक वाजपेयी
C. कुंवर नारायण
D. ज्ञानेन्द्र पति
उत्तर- A. केदारनाथ सिंह

29. प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से प्रेमचंद के उपन्यासों का सही क्रम है?
A. गोदान, निर्मला, कर्मभूमि, रंगभूमि
B. रंगभूमि, निर्मला, गोदान, कर्मभूमि
C. रंगभूमि, निर्मला, कर्मभूमि, गोदान
D. रंगभूमि, कर्मभूमि, निर्मला, गोदान
उत्तर- C. रंगभूमि, निर्मला, कर्मभूमि, गोदान

30. 'अनघ' नाटक किस कवि ने लिखा है?
A. भारतेंदु हरिश्चन्द्र
B. मैथलीशरण गुप्त
C. सुमित्रानंदन पंत
D. रामकुमार वर्मा
उत्तर- B. मैथलीशरण गुप्त

31. 'घुमक्कड़ शास्त्र' के लेखक हैं?
A. रामवृक्ष बेनीपुरी
B. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
C. सत्यदेव परिव्राजक
D. राहुल सांकृत्यायन
उत्तर- D. राहुल सांकृत्यायन

32. पृथ्वी प्रदक्षिणा के लेखक हैं?
A. महेश प्रसाद
B. राहुल सांस्कृत्यायन
C. शिवप्रसाद गुप्त
D. सत्यदेव परिव्राजक
उत्तर- C. शिवप्रसाद गुप्त

33. आत्म-निरीक्षण के लेखक हैं?
A. वियोगी हरि
B. गुलाब राय
C. हरिभाऊ उपाध्याय
D. सेठ गोविंददास
उत्तर- D. सेठ गोविंददास

34. जयशंकर प्रसाद का कौन सा नाटक अभिनेता की दृष्टि से अपेक्षाकृत सफल है?
A. जनमेजय का नागयज्ञ
B. स्कन्द गुप्त
C. ध्रुवस्वामिनी
D. राज्यश्री
उत्तर- C. ध्रुवस्वामिनी

35. इनमें से कौन-सी रचना भीष्मसाहनी की है?
A. बुनी हुई रस्सी
B. कड़ियाँ
C. बहुत रात गये
D. कुछ और कविताएं
उत्तर- B. कड़ियाँ

36. 'चेखव: एक इंटरव्यू' किसकी रचना है?
A. रणवीर रांगा
B. पद्मसिंह शर्मा (कमलेश)
C. राजेन्द्र यादव
D. प्रभाकर माचवे
उत्तर- C. राजेन्द्र यादव

37. 'ऊंचा पर्वत गहरा सागर' इनमें से किस एकांकीकार की रचना है?
A. गोविंदवल्लभ पंत
B. विष्णु प्रभाकर
C. चिरंजीत
D. प्रकाश चन्द्र गुप्त
उत्तर- B. विष्णु प्रभाकर

38. 'एक हथौड़ा वाला घर में और हुआ' किसकी पंक्ति है?
A. केदारनाथ अग्रवाल
B. रामदरश मिश्र
C. राम कुमार वर्मा
D. शिवमंगल सिंह सुमन
उत्तर- A. केदारनाथ अग्रवाल

39. 'सूरज का सातवां घोड़ा' के लेखक हैं?
A. कमलेश्वर
B. धर्मवीर भारती
C. राजेन्द्र यादव
D. मोहन राकेश
उत्तर- B. धर्मवीर भारती

40. ब्राह्मण' पत्र के संपादक कौन थे?
A. पं. प्रताप नारायण मिश्र
B. गणेश शंकर विद्यार्थी
C. महावीर प्रसाद द्विवेदी
D. पं. बालकृष्ण भट्ट
उत्तर- A. पं. प्रताप नारायण मिश्र

41. इन कवियों को आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए?
A. केशव, बिहारी, भूषण, घनानंद
B. घनानंद, बिहारी, केशव, भूषण
C. भूषण, केशव, घनानंद, बिहारी
D. बिहारी, केशव, घनानंद, भूषण
उत्तर- A. केशव, बिहारी, भूषण, घनानंद

42. हिन्दी साहित्य का इतिहास सर्वप्रथम किस भाषा में लिखा गया था?
A. अंग्रेजी B. हिन्दी
C. फ्रेंच D. जर्मन
उत्तर- C. फ्रेंच

43. 'राजमती' इनमें से किस काव्यकृति की नायिका है?
A. कीर्तिपताका
B. आल्हाखंड
C. बीसलदेव रासो
D. रणमल्लछंद
उत्तर- C. बीसलदेव रासो

44. रीतिकाल के किस कवि ने अपनी कविताओं में ऋतुओं और त्योहारों के साथ जीवन को खूबसूरती के साथ मिलाया है?
A. बिहारीलाल B. घनानंद
C. देव D. पद्माकर
उत्तर- D. पद्माकर

45. ''सूर समाना चंद में दहूं किया घर एक।'' यह काव्यपंक्ति किस कवि की है?
A. सूरदास
B. कबीरदास
C. चंदबर दाई
D. मलिक मुहम्मद जायसी
उत्तर- B. कबीरदास

46. सुमित्रानंदन पंत की काव्य रचनाओं का सही क्रम है?
A. गुंजन, पल्लव, ग्राम्या, युगांत
B. पल्लव, गुंजन, युगांत, ग्राम्या
C. युगांत, गुंजन, ग्राम्या, पल्लव
D. पल्लव, गुंजन, ग्राम्या, युगांत
उत्तर- B. पल्लव, गुंजन, युगांत, ग्राम्या

47. इन उपन्यासों का प्रकाशन काल के अनुसार सही क्रम है?
A. बूंद और समुद्र, कठगुलाब, अमृत और विष, मैला आंचल
B. मैला आंचल, अमृत और विष, बूंद और समुद्र, कठगुलाब
C. कठगुलाब, बूंद और समुद्र, अमृत और विष, मैला आंचल
D. मैला आंचल, बूंद और समुद्र, अमृत और विष, कठगुलाब
उत्तर- D. मैला आंचल, बूंद और समुद्र, अमृत और विष, कठगुलाब

48. रचनाकाल के अनुसार काव्यों का सही क्रम है?
A. आंसू, कामायनी, लहर, कानन कुसुम
B. कानन कुसुम, आंसू, कामायनी, लहर
C. लहर, आंसू, कामायनी, कानन कुसुम
D. कानन कुसुम, आंसू, लहर, कामायनी
उत्तर- D. कानन कुसुम, आंसू, लहर, कामायनी

49. प्रकाशन काल की दृष्टि से प्रेमचन्द्र के उपन्यासों का सही अनुक्रम है?
A. सेवासदन, प्रतिज्ञा, वरदान, रंगभूमि
B. सेवासदन, वरदान, रंगभूमि, प्रतिज्ञा
C. रंगभूमि, वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन
D. सेवासदन, प्रतिज्ञा, रंगभूमि, वरदान
उत्तर- B. सेवासदन, वरदान, रंगभूमि, प्रतिज्ञा

50. 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी के कहानीकार हैं?
A. शिवप्रसाद सिंह
B. यशपाल
C. जैनेन्द्र
D. माधवराव सप्रे
उत्तर- D. माधवराव सप्रे

- डॉ. राम मनोहर उपाध्याय
(लेखक, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के जनसंचार विभाग में अतिथि शिक्षक हैं।)

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न

अर्थशास्त्र

1. औपचारिक क्षेत्रक ऋण के संदर्भ में असत्य कथन है -
(अ) ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों एवं छोटे कर्जदारों के ऋण का सबसे अधिक भाग औपचारिक क्षेत्रक के द्वारा पूरा होता है।
(ब) औपचारिक क्षेत्रक ऋण के अंतर्गत बैंक एवं सहकारी समितियों के द्वारा दिये जाने वाला ऋण आता है।
(स) भारतीय रिज़र्व बैंक ऋणों के औपचारिक स्रोतों की कार्य प्रणाली पर निगरानी रखता है।
(द) उपरोक्त में से कोई भी नहीं।
उत्तर- (अ)
व्याख्या - ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों और अन्य छोटे ऋणियों के ऋणों का प्रमुख स्रोत, अनौपचारिक क्षेत्रक ऋण, जो साहूकारों, व्यापारियों और रिश्तेदारों से प्राप्त होता है।

2. निम्न में से सत्य कथन बताइये -
(अ) व्यक्तियों के बैंक खातों में जमाधन को मांग जमा कहा जाता है।
(ब) मांग जमा आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा के समान कार्य करता है।
(स) उपरोक्त दोनों
(द) उपरोक्त में से कोई भी नहीं।
उत्तर- (स)
व्याख्या - बैंक खातों में जमा धन को मांग के माध्यम से निकाला जा सकता है। इसीलिये इसे मांग जमा कहते हैं। चूंकि मांग जमाओं को मुद्रा के साथ-साथ व्यापक स्तर पर भुगतान का माध्यम स्वीकार्य किया जाता है, इसीलिये इसे मुद्रा माना जाता है।

3. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य के अपने राजस्व के प्रत्यक्ष कर स्रोत के अंतर्गत आता है -
(अ) पेट्रोलियम उत्पादों पर मूल्य वर्धित कर।
(ब) विद्युत पर कर तथा शुल्क
(स) स्टॉप शुल्क और पंजीकरण शुल्क
(द) उपरोक्त सभी।
उत्तर- (स)
व्याख्या - प्रत्यक्ष कर अन्य स्रोत है - कृषि आय पर कर, भू-राजस्व

4. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य के अपने राजस्व में अप्रत्यक्ष कर स्रोत होते हैं -
(अ) राज्य वस्तु और सेवा कर
(ब) पेट्रोलियम व शराब उत्पादों पर बिक्री कर/वैट
(स) विद्युत पर कर व शुल्क
(द) उपरोक्त सभी।
उत्तर- (द)

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार स्कूली शिक्षा की वर्तमान संरचना 10+2 को किस प्रारूप में परिवर्तित किया जायेगा -
(अ) 5-3-3-4 (ब) 5-4-3-3
(स) 5-4-4-4 (द) 4-5-3-3
उत्तर- (अ)
व्याख्या - (1) पांच वर्ष की फाउन्डेशन स्टेज (3 से 8 वर्ष के लिये) (2) तीन वर्ष का प्रिपेरेटरी स्टेज (8 से 11वर्ष के लिये) (3) तीन वर्ष का मिडिल स्टेज (11 से 14 वर्ष के लिये) (4) चार वर्ष का सेकेंडरी स्टेज (14 से 18 वर्ष के लिये) (कक्षा 9 से 12)

6. अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्रक के संबंध में असत्य कथन बताइये -
(अ) असंगठित क्षेत्रक के लिये कोई नियम एवं विनिमय नहीं होते हैं
(ब) असंगठित क्षेत्रक में छोटी-छोटी और बिखरी इकाईयां होती हैं, जो अधिकांशतः सरकारी नियंत्रण के बाहर होती है
(स) इस क्षेत्र में रोज़गार सुरक्षित नहीं होता हैं।
(द) उपरोक्त सभी कथन सत्य है।
उत्तर- (अ)

7. इस क्षेत्र के लिये नियम तो होते हैं, परंतु उनका अनुपालन नहीं होता है।
संगठित क्षेत्रक के संबंध में निम्न में से कौन सा कथन असत्य है -
(अ) संगठित क्षेत्रक में वे उद्यम अथवा कार्य स्थान आते हैं जहां रोज़गार की अवधि नियमित होती है
(ब) संगठित क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं
(स) इस क्षेत्र के कर्मचारी को सवेतन अवकाश, चिकित्सा अवकाश जैसी सुविधायें नहीं मिलती है।
(द) उपरोक्त सभी।
उत्तर- (स)

8. निम्न कथन में से सत्य कथन बताइये -
(अ) भारत की सकल राष्ट्रीय आय में सर्वाधिक योगदान तृतीयक क्षेत्र का है
(ब) भारत में लोगों को सबसे अधिक रोज़गार प्राथमिक क्षेत्र में मिलता है।
(स) भारत में सेवाक्षेत्र में उत्पादन की जितनी वृद्धि हुई उतनी रोज़गार में वृद्धि नहीं हुई।
(द) उपरोक्त सभी।
उत्तर- (द)

9. स्वतंत्रता के बाद लागू किये गये भू-सुधार कार्यक्रम को किन राज्यों में सर्वाधिक सफलता मिली -
(अ) पंजाब, हरियाणा
(ब) केरल, पश्चिम बंगाल
(स) राजस्थान, गुजरात
(द) मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश
उत्तर- (ब)

10. हरित क्रांति के पहले चरण में उच्च पैदावार वाली किस्मों के बीजों (HYV) का प्रयोग किन राज्यों तक सीमित रहा -
(अ) पंजाब, तमिलनाडू, आंध्रप्रदेश
(ब) पंजाब, मध्यप्रदेश, बिहार
(स) पंजाब, हरियाणा, सिक्किम
(द) उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार
उत्तर- (अ)

11. हरित क्रांति में कृषि क्षेत्र में उच्च पैदावार वाली किस्मों की बीजों के प्रयोग से मुख्य रूप से गेहूं व चावल के उत्पादन में वृद्धि हुई। उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग बढ़ा डी.के. कर्वे समिति किससे संबंधित है -
(अ) बैंकिंग क्षेत्र के विकास से
(ब) भुगतान संतुलन से।
(स) लघु उद्योगों के विकास से।
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं।
उत्तर- (स)
व्याख्या - 1955 में ग्राम तथा लघु उद्योग समिति का गठन किया गया था।

12. औपनिवेशिक शासनकाल में भारत में जनांकिकीय परिस्थिति के संदर्भ में कौन सा कथन सत्य नहीं है -
(अ) 1921 के पूर्व का भारत जनांकिकीय संक्रमण के प्रथम सोपान में था।
(ब) इस काल में जीवन प्रत्याशा 35 वष से भी कम उम्र थी।
(स) इस काल में सकल मृत्यु दर बहुत उच्च थी।
(द) इस समय भारत की जनसंख्या की संवृद्धि दर विस्फोटक अवस्था में थी
उत्तर- (द)
व्याख्या - इस समय भारत की जनसंख्या न तो बहुत विशाल थी, ना उसकी वृद्धि दर अधिक थी।

13. राशन कार्ड के संबंध में सही कथन बताइये -
(अ) निर्धनों में भी निर्धन लोगों के लिये अंत्योदय कार्ड।
(ब) गरीबी रेखा से नीचे के लोगों के लिये बीपीएल कार्ड।
(स) अन्य लोगों के लिये एपीएल कार्ड।
(द) उपरोक्त सभी कथन सत्य है।
उत्तर- (द)

14. भारत में गरीबी रेखा के निर्धारण के लिये स्वीकृत कैलोरी ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में प्रतिदिन कितनी है -
(अ) 2400, 2100 कैलोरी
(ब) 2100, 2400 कैलोरी
(स) 1500, 1800 कैलोरी
(द) 1800, 1500 कैलोरी
उत्तर- (अ)
व्याख्या - गरीबी निर्धारण का यह फॉर्मूला भारत में पहली बार 1979 में वाई. के. अलघ समिति ने तय किया था।

15. भारत में निर्धनता रेखा का आंकलन कौन करता है -
(अ) नीति आयोग
(ब) राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (NSSO)
(स) वित्त मंत्रालय
(द) राष्ट्रीय विकास परिषद
उत्तर- (ब)
व्याख्या - निर्धनता रेखा का आंकलन सामान्यतया हर पांच वर्ष में NSSO द्वारा किया जाता है।

16. विश्व बैंक के द्वारा समूचे विश्व की निर्धनता रेखा के निर्धारण के लिये कौन सा मानक लिया गया है -
(अ) जिन व्यक्तियों की आय 1.90 यूएस डॉलर प्रतिदिन से कम हो।
(ब) जिन व्यक्तियों की आय 5.00 यूएस डॉलर से अधिक हो।
(स) जिन व्यक्तियों की आय 20 डॉलर प्रतिमाह से कम हो।
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं।
उत्तर- (अ)

17. विश्व व्यापार संगठन का मुख्य कार्य है -
(अ) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को उदार बनाना।
(ब) विकासशील देशों को आर्थिक सहायता प्रदान करना।
(स) देशों के बीच सीमा विवाद का निवारण करना।
(द) उपरोक्त सभी।
उत्तर- (अ)

18. भारत सरकार के द्वारा उपभोक्ता हितों के संरक्षण के लिये उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 में बनाया गया। इसके संबंध में कौन सा कथन असत्य है -
(अ) इसके अंतर्गत उपभोक्ता अदालतों का गठन किया गया है।
(ब) इसके अंतर्गत राष्ट्रीय, राज्य एवं जिला स्तरीय अदालतों की स्थापना की गई है।
(स) इसके अंतर्गत राष्ट्रीय उपभोक्ता अदालत के आदेश के विरुद्ध कहीं अपील नहीं किये जाने का प्रावधान है।
(द) इस अधिनियम में उपभोक्ताओं को उपभोक्ता अदालत में प्रतिनिधित्व का अधिकार दिया गया है।
उत्तर- (स)
व्याख्या - राष्ट्रीय स्तर के उपभोक्ता अदालत के आदेश के विरुद्ध एक माह की अवधि में उच्चतम न्यायालय में अपील की जा सकती है, परंतु आदेशित धनराशि का 50 प्रतिशत या 50000/- जमा करने के बाद (जो भी कम हो)। जिला स्तर का न्यायालय 20 लाख, राज्यस्तर न्यायालय 1 करोड़ तथा राष्ट्रीय स्तर के न्यायालय 1 करोड़ से अधिक राशि के दावों के मुकदमें सुनती है।

19. कंपनी अधिनियम 2013 के अंतर्गत एक निर्दिष्ट सीमा से अधिक लाभ, निवल संपदा या वार्षिक कारोबार वाली कंपनियों को पिछले तीन वर्षों के मध्य अर्जित औसत निवल लाभ का कितना प्रतिशत कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों पर खर्च करना होता है -
(अ) 2 (ब) 10
(स) 15 (द) 25
उत्तर- (अ)
व्याख्या - इस धनराशि को कुछ निर्धारित गतिविधियों जैसे शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये खर्च किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों और केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों के पूर्व सैनिकों तथा उनके आश्रितों के कल्याण हेतु योगदान को भी मान्य किया गया है।

20. प्रधानमंत्री वय वंदना योजना की अवधि कब तक मान्य है -
(अ) 31 मार्च 2020
(ब) 31 मार्च 2023
(स) 31 मार्च 2021
(द) 31 मार्च 2022
उत्तर- (ब)
व्याख्या - वित्त मंत्रालय द्वारा यह योजना वरिष्ठ नागरिकों को प्रत्येक महीने गारंटीकृत पेंशन का भुगतान करने के लिये वर्ष 2017 में प्रारंभ की गई थी। पहले इस योजना की अवधि 31 मार्च 2020 तक थी, जिसे बढ़ाकर 31 मार्च 2023 कर दिया गया। 60 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्ग इसे भारतीय जीवन बीमा निगम से क्रय कर सकते हैं।

21. प्रधानमंत्री नागरिक सहायता और राहत कोष (PM-CARES Fund) एक पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट है, जिसके अध्यक्ष होते हैं -
(अ) प्रधान मंत्री (ब) वित्त मंत्री
(स) गृह मंत्री (द) रक्षा मंत्री
उत्तर- (अ)
व्याख्या - वित्तमंत्री, गृहमंत्री व रक्षामंत्री इसके सदस्य होते हैं।

22. तरल नकदी की वह राशि जो बैंकों को अपनी कुल जमा के प्रतिशत के रूप में भारतीय रिज़र्व बैंक के पास रखनी होती है, कहलाती है -
(अ) वैधानिक तरलता अनुपात (SLR)
(ब) नकद आरक्षित अनुपात (CRR)
(स) सीमांत स्थायी सुविधा (MSF)
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं
उत्तर- (ब)
व्याख्या - SLR निवल जमा का वह न्यूनतम प्रतिशत है, जो एक वाणिज्यिक बैंक को तरल परिसम्पत्तियों - जैसे नकदी, सोना आदि के रूप में स्वयं के पास रखना होता है।
MSF में बैंक अपने SLR वैधानिक तरलता अनुपात का उपयोग करके एक दिन के लिये भी RBI से उधार ले सकते हैं।

23. गरीब कल्याण रोज़गार अभियान के संदर्भ में असत्य कथन बताइये -
(अ) इसका उद्देश्य उन प्रवासी श्रमिकों के लिये आजीविका के अवसर सुनिश्चित करना है, जो कोविड 19 महामारी के कारण अपने गांव लौट आये हैं।
(ब) इसका उद्देश्य गांवों में सड़कें, आवास, आंगनवाड़ियों और सामुदायिक परिसरों जैसी आधारभूत अवसंरचनाओं का निर्माण है।
(स) यह अभियान बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, झारखंड और ओड़िशा के 116 जिलों में संचालित है।
(द) इसे राज्य सरकारों के सहयोग से नीति आयोग ने लागू किया है।
उत्तर- (द)
व्याख्या - इसे सड़क परिवहन और राजमार्ग, खदान, पर्यावरण, रेलवे, पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस, दूरसंचार एवं कृषि सहित भारत सरकार के 11 मंत्रालयों द्वारा लागू किया गया है। नीति आयोग इसमें सम्मिलित नहीं है।

24. भारत सरकार द्वारा देश में कुपोषण की समस्या को दूर करने के लिये पोषण अभियान का प्रारंभ कब से हुआ है -
(अ) 18 दिसंबर 2017
(ब) 18 दिसंबर 2018
(स) 18 दिसंबर 2019
(द) 1 जनवरी 2020
उत्तर- (अ)
व्याख्या - इस अभियान में सभी राज्य व केन्द्रशासित प्रदेश सम्मिलित किये गये हैं। महिला और बाल विकास मंत्रालय इसकी क्रियान्वयन एजेंसी है। 6 वर्ष तक के बच्चों, किशोरियों एवं गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली माताओं को इसमें सम्मिलित किया गया है।

25. नकद आरक्षित अनुपात कम करने पर निवेश की मांग -
(अ) कम हो जाती है।
(ब) बढ़ जाती है।
(स) अपरिवर्तित रहती है।
(द) उपरोक्त में से कोई भी।
उत्तर- (ब)
व्याख्या - नकद आरक्षित अनुपात (CRR) कम कर देने पर वाणिज्यिक बैंकों की साख सृजित करने की क्षमता बढ़ जाती है। कम ब्याज दर पर साल की उच्च उपलब्धता के कारण निवेश की मांग बढ़ जाती है।

26. वाणिज्यिक बैंकों के द्वारा सरकारी प्रतिभूतियां खरीदने पर उनकी साख निर्माण की क्षमता -
(अ) घट जाती है।
(ब) बढ़ जाती है।
(स) अपरिवर्तित रहती है।
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं।
उत्तर- (अ)
व्याख्या - वाणिज्यिक बैंकों को सरकारी प्रतिभूतियां क्रय करने की अनुमति देकर केन्द्रीय बैंक वाणिज्यिक बैंकों के नकद शेषों को कम कर देती हैं, जिससे उनकी साख निर्माण की क्षमता कम हो जाती है।

- डॉ. माया राठी
(लेखिका, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या महाविद्यालय, भोपाल में अर्थशास्त्र की प्राध्यापिका हैं।)

आदर्श आचार संहिता के संबंध में पूछे जाने वाले प्रश्न

भारत निर्वाचन आयोग ने देश में लोकसभा चुनाव और कुछ राज्यों में विधानसभा चुनाव आयोजित करने की घोषणा की है, इस घोषणा के साथ देशभर में आदर्श आचार संहिता प्रभावशील हो गई है। केन्द्र और राज्यों की सरकारों, राजनीतिक दलों, चुनाव प्रत्याशियों, सरकारी अधिकारी-कर्मचारियों को आदर्श आचार संहिता का पालन करना अनिवार्य है, ऐसे में लोगों के मन में जिज्ञासा रहती है कि आदर्श आचार संहिता क्या है, इसके प्रावधान क्या हैं और इसका पलान कैसे किया जाए। भारत निर्वाचन आयोग ने आदर्श आचार संहिता के परिपालन के संबंध में कुछ अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (एफ.ए.क्यू.) जारी किए हैं, जिसके संपादित अंश ''रोज़गार और निर्माण'' में प्रकाशित किए जा रहे हैं।

प्र. 1 आदर्श आचार संहिता क्या है?

उत्तर: राजनीतिक दलों और अभ्यर्थियों के मार्गदर्शन के लिए आदर्श आचार संहिता, उन मानदंडों का एक समूह है जो राजनीतिक दलों की सहमति से विकसित किए गए हैं, साथ ही जिन्होंने आचार संहिता में सन्निहित सिद्धांतों का पालन करने के लिए सहमति व्यक्त की है और यह उन्हें इसका सम्मान करने और इसका अक्षरतः अनुपालन करने के लिए बाध्य करता है।

प्र. 2 चुनाव के दौरान निर्वाचन आयोग की क्या भूमिका है?

उत्तर: भारत के संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत निर्वाचन आयोग केंद्र और राज्यों में सत्तारूढ़ दलों सहित राजनीतिक दल द्वारा एवं निर्वाचन लड़ने वाले अभ्यर्थियों द्वारा संसद और राज्य विधान सभाओं के लिए स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण निर्वाचन कराने के लिए अपने संवैधानिक कर्तव्यों के निर्वहन में इसके अनुपालन को सुनिश्चित करता है। यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि निर्वाचन उद्देश्यों के लिए आधिकारिक मशीनरी का दुरुपयोग न हो। इसके अलावा, यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि निर्वाचन अपराध, दुर्भावना और भ्रष्ट आचरण जैसे प्रतिरूपण, मतदाताओं को रिश्वत देना और प्रेरित करना, मतदाताओं को भयभीत करना और धमकाना आदि को हरसंभव तौर पर रोका जाता है। उल्लंघन के मामले में उचित उपाय किए जाते हैं।

प्र. 3 आदर्श आचार संहिता किस तारीख से लागू होती है और किस तारीख तक जारी रहती है?

उत्तर: निर्वाचन आयोग द्वारा निर्वाचन कार्यक्रम की घोषणा की तारीख से आदर्श आचार संहिता लागू हो जाती है और निर्वाचन की प्रक्रिया पूरी होने तक क्रियाशील रहती है।

प्र. 4 साधारण निर्वाचन और उप-निर्वाचन के दौरान संहिता की प्रयोज्यता क्या है?

उत्तर:
क. लोकसभा के आम निर्वाचन के दौरान यह संहिता पूरे देश में लागू होती है।

ख. विधान सभा चुनाव के दौरान, आचार संहिता पूरे राज्य में लागू होती है।

ग. उपनिर्वाचनों के दौरान, यदि निर्वाचन क्षेत्र में राज्य की राजधानी, महानगर, नगर निगम शामिल हैं, तो यह संहिता केवल संबंधित निर्वाचन क्षेत्र में ही लागू होगी। अन्य सभी मामलों में आदर्श आचार संहिता को पूरे जिले में लागू किया जाएगा, जिसमें उपनिर्वाचन के लिए निर्वाचन क्षेत्र आते हों।

प्र. 5 आदर्श आचार संहिता की मुख्य विशेषताएं क्या हैं?

उत्तर: आदर्श आचार संहिता की मुख्य विशेषता यह है कि ये राजनीतिक दल, अभ्यर्थी और सत्तारूढ़ दल (पार्टियां) को निर्वाचन की प्रक्रिया के दौरान कैसे आचरण करना है, सिखाती है, अर्थात निर्वाचन के दौरान बैठकों और जुलूस का आयोजन, मतदान दिवस की गतिविधियां और सत्ता में दल का कामकाज आदि में उनके सामान्य आचरण पर आदर्श आचार संहिता का निर्धारण।

सरकारी तंत्र के संबंध में

प्र. 6 क्या कोई मंत्री अपनी आधिकारिक यात्रा को निर्वाचन कार्य के साथ जोड़ सकता है?

उत्तर: नहीं, मंत्री अपनी आधिकारिक यात्रा को निर्वाचन कार्यों से जोड़ नहीं सकते हैं और निर्वाचन कार्य के दौरान आधिकारिक मशीनरी या कर्मियों का उपयोग भी नहीं करेंगे। हालांकि निर्वाचन आयोग ने प्रधानमंत्री को निर्वाचन कार्यों संबंधी यात्रा के साथ आधिकारिक यात्रा का संयोजन करने में आदर्श आचार संहिता के संचालन से छूट दी है।

प्र. 7 क्या निर्वाचन कार्य के लिए सरकारी परिवहन का उपयोग किया जा सकता है?

उत्तर: किसी भी दल या अभ्यर्थी के हित में प्रोत्साहन अथवा सहायता के लिए आधिकारिक हवाई जहाज, वाहन आदि सरकारी परिवहन का उपयोग नहीं किया जा सकता है।

प्र. 8 क्या सरकार निर्वाचन कार्य से संबंधित अधिकारियों का स्थानांतरण और पोस्टिंग कर सकती है?

उत्तर: निर्वाचन प्रक्रिया के संचालन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित सभी अधिकारियों के स्थानांतरण और पोस्टिंग पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध होगा। यदि किसी अधिकारी का स्थानांतरण या पदस्थापन आवश्यक समझा जाता है, तो आयोग की पूर्व स्वीकृति प्राप्त करना होगी।

प्र. 9 आदर्श आचार संहिता लागू होने से पहले यदि निर्वाचन कार्य से संबंधित किसी अधिकारी को सरकार द्वारा स्थानांतरित किया गया है और उन्होंने नये स्थान पर कार्यभार नहीं संभाला है। क्या ऐसे अधिकारी आचार संहिता लागू होने के बाद नई जगह पर पदभार संभाल सकते हैं?

उत्तर: नहीं, यथा पूर्व स्थिति बनाई रखी जाएगी।

प्र. 10 क्या केन्द्र या राज्य सरकार के मंत्री निर्वाचन की अवधि के दौरान किसी भी आधिकारिक चर्चा के लिए निर्वाचन क्षेत्र या राज्य के किसी भी निर्वाचन से संबंधित अधिकारी को तलब कर सकते हैं?

उत्तर: मंत्री, चाहे वह केन्द्र या राज्य सरकार का हो, संविधान या राज्य के किसी भी निर्वाचन संबंधी अधिकारी को किसी भी आधिकारिक चर्चा के लिए कहीं भी नहीं बुला सकते हैं।

केवल तभी अपवाद होगा जब कोई मंत्री, संबंधित विभाग के प्रभारी अथवा मुख्यमंत्री की हैसियत से कानून व्यवस्था की विफलता या प्राकृतिक आपदा या ऐसी किसी आपात स्थिति के संबंध में किसी निर्वाचन क्षेत्र का सरकारी दौरा करते हैं, जिसके लिए समीक्षा, निस्तारण, राहत के विशिष्ट प्रयोजन और ऐसे किसी प्रयोजन के लिए ऐसे मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों की उपस्थिति अपेक्षित हो।

यदि कोई केन्द्रीय मंत्री दिल्ली से बाहर पूर्णतया अधिकारिक कार्य से दौरा कर रहा हो, जिसे जनहित में टाला नहीं जा सकता, तो इस आशय को प्रमाणित करते हुए एक पत्र संबंधित विभाग, मंत्रालय के सचिव द्वारा उस राज्य के मुख्य सचिव को भेजा जाएगा साथ ही उसकी एक प्रति निर्वाचन आयोग को भी दी जाएगी।

प्र. 11 क्या कोई अधिकारी, जहां पर निर्वाचनों का आयोजन किया जा रहा है, उस निर्वाचन क्षेत्र में अपने निजी दौरे पर मंत्री से मुलाकात कर सकता है?

उत्तर: नहीं, कोई अधिकारी जो उस निर्वाचन क्षेत्र में अपने निजी दौरे पर मंत्री से मुलाकात करता है सम्बंधित सेवा नियमों के अंतर्गत, कदाचार का दोषी होगा और यदि वह लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 129 (1) में उल्लेखित कोई अधिकारी होता है तो उसे उस धारा के वैधानिक प्रावधानों के उल्लंघन का भी अतिरिक्त रूप से दोषी माना जायेगा और जिसके अंतर्गत प्रदान किये गए दंडनीय कार्यवाही का वह उत्तरदायी होगा।

प्र. 12 क्या मंत्री निर्वाचन के दौरान आधिकारिक वाहन का प्रयोग करने के अधिकारी हैं?

उत्तर: मंत्री, सरकारी वाहनों का उपयोग अपने सरकारी कार्य के लिए केवल अपने सरकारी आवास से अपने कार्यालय में आने-जाने के ही पात्र हैं, बशर्ते इस यात्रा के साथ कोई निर्वाचन कार्य या कोई राजनीतिक गतिविधि नहीं जुड़ी हो।

प्र. 13 क्या मंत्री या कोई अन्य राजनीतिक पदाधिकारी बीकन लाइट लगी हुई सायरन वाली पायलट कार का उपयोग कर सकते हैं?

उत्तर: मंत्री या किसी अन्य राजनीतिक पदाधिकारी को निर्वाचन अवधि के दौरान किसी भी रंग की बीकन लाइट लगी हुई गाड़ी या पायलट कार अथवा किसी भी प्रकार की सायरन लगी हुई गाड़ी को उनके निजी या आधिकारिक दौरे में उपयोग की अनुमति नहीं दी जाती है, चाहे राज्य प्रशासन ने उसे एक सुरक्षा कवच प्रदान कर रखा हो जिसमें दौरे पर उसके साथ जाने के लिए सशस्त्र सुरक्षाबल की उपस्थिति की आवश्यकता होती है। वाहन सरकारी स्वामित्व का हो या निजी स्वामित्व का, यह प्रतिबंध दोनों पर लागू होगा।

प्र. 14 मान लीजिए कि मंत्री को राज्य द्वारा एक वाहन प्रदान किया गया है और मंत्री को उस वाहन के रखरखाव के लिए भत्ता दिया जाता है। क्या मंत्री द्वारा इसका उपयोग निर्वाचन उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है?

उत्तर: जहां राज्य द्वारा वाहन प्रदान किया जाता है या मंत्री को वाहन के रखरखाव के लिए भत्ता दिया जाता है, वह निर्वाचन के लिए ऐसे वाहन का उपयोग नहीं कर सकता है।

प्र.15 क्या राष्ट्रीय तथा राज्य आयोग के सदस्यों के दौरों पर कोई प्रतिबंध है?

उत्तर: यह सलाह दी जाती है कि ऐसे आयोगों के सदस्यों की सभी आधिकारिक यात्राओं को किसी भी गलतफहमी से बचने के लिए निर्वाचन कार्यों के पूरा होने तक ऐसे दौरों को टाल दिया जाना चाहिए, जब तक कि ऐसे दौरे किसी आकस्मिक स्थिति में अपरिहार्य न हों।

प्र. 16 मुख्यमंत्री, मंत्री, अध्यक्ष किसी राज्य के "राज्य दिवस" समारोह में भाग ले सकते हैं या नहीं?

उत्तर: इसमें कोई आपत्ति नहीं है बशर्ते कि वह इस अवसर पर कोई राजनीतिक भाषण नहीं देते हैं और समारोह केवल सरकारी अधिकारियों द्वारा आयोजित किया जाना है। मुख्यमंत्री, मंत्री, अध्यक्ष की तस्वीर दिखाने वाला कोई भी विज्ञापन जारी नहीं किया जाएगा।

प्र. 17 क्या विश्वविद्यालय या संस्थान के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री भाग ले सकते हैं और संबोधित कर सकते हैं?

उत्तर: राज्यपाल दीक्षांत समारोह में हिस्सा ले सकते हैं और संबोधित कर सकते हैं। मुख्यमंत्री या मंत्रियों को दीक्षांत समारोह में भाग लेने और संबोधित न करने की सलाह दी जा सकती है।

प्र. 18 क्या "इफ्तार दल" या इस प्रकार की किसी अन्य दल को राजनीतिक पदाधिकारियों के निवास पर आयोजित किया जा सकता है, जिसका खर्च राज्य के खजाने से वहन किया जाएगा?

उत्तर: नहीं, हालांकि कोई भी व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत क्षमता और अपने निजी खर्च पर ऐसी किसी भी दल का आयोजन करने के लिए स्वतंत्र है।

कल्याण योजनाएं, सरकारी कार्य आदि

प्र. 19 क्या सत्तारूढ़ दल द्वारा निर्वाचन संभावनाओं को बढ़ाने की दृष्टि से उनकी उपलब्धियों के बारे में सरकारी खजाने की लागत पर विज्ञापन जारी करने पर कोई प्रतिबंध है?

उत्तर: हाँ, प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सरकारी खजाने की लागत पर दल की उपलब्धियों के बारे में विज्ञापन और निर्वाचन की अवधि के दौरान आधिकारिक जन संचार का दुरुपयोग पूरी तरह प्रतिबंधित है।

प्र. 20 क्या केंद्र अथवा राज्य सरकारों में सत्ताधारी दलों की उपलब्धियों को दर्शाने वाले होर्डिंग्स, विज्ञापन आदि का खर्च सरकारी खजाने (राजकोष) से जारी रखे जा सकते हैं।

उत्तर: नहीं, प्रदर्शन पर ऐसे सभी होर्डिंग्स, विज्ञापन आदि को संबंधित अधिकारियों द्वारा हटा दिया जाता है। इसके अलावा, सरकारी खजाने की कीमत पर समाचार पत्रों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सहित अन्य मीडिया में कोई विज्ञापन जारी नहीं किया जाना चाहिए।

प्र. 21 क्या कोई मंत्री या कोई अन्य प्राधिकरण विवेकाधीन कोष से अनुदान, भुगतान की मंजूरी दे सकता है?

उत्तर: नहीं, मंत्रीगण तथा अन्य प्राधिकारी निर्वाचन की घोषणा के समय से अपने विवेकाधीन कोष से अनुदान, भुगतान की स्वीकृति नहीं दे सकते।

प्र. 22 अगर किसी योजना या कार्यक्रम के संबंध में कार्य आदेश जारी किया गया है तो क्या निर्वाचन कार्यक्रम की घोषणा के बाद इसे शुरू किया जा सकता है?

उत्तर: निर्वाचन की घोषणा से पहले जिन कार्यों के लिए कार्य आदेश जारी किए गए हैं और ऐसे कार्य आरंभ नहीं हुए हैं, तो उन कार्यों को आरंभ नहीं किया जाएगा। यदि कोई कार्य वास्तव में उस क्षेत्र में आरंभ हो चुका है तो उसे जारी रखा जा सकता है।

प्र. 23 क्या किसी योजना के लिए सांसद, विधायक, एमएलसी स्थानीय क्षेत्र विकास निधि के तहत धनराशि जारी की जा सकती है?

उत्तर: नहीं, निर्वाचन प्रक्रिया के पूरा होने तक, जहां निर्वाचन प्रगति पर है उस क्षेत्र में किसी भी योजना के तहत सांसदों/विधायकों/एमएलसी, स्थानीय क्षेत्र विकास निधि के तहत किसी भी क्षेत्र में धनराशि जारी नहीं की जाएगी।

शेष अगले अंक में...

खेल चर्चा

अफगानिस्तान ने फीफा विश्वकप क्वालिफायर में भारत को हराया

गुवाहाटी, फीफा विश्वकप-2026 और एएफसी एशियन कप-2027 के संयुक्त क्वालिफायर के दूसरे चरण में भारतीय फुटबॉल टीम को अफगानिस्तान के हाथों 2-1 से हार का सामना करना पड़ा। अपना 150वां अंतर्राष्ट्रीय मैच खेल रहे भारतीय कप्तान सुनील छेत्री ने पहले हाफ के 37वें मिनट में शानदार गोल दागा। ये छेत्री के कॅरियर का 94वां अंतर्राष्ट्रीय गोल था। छेत्री के इस गोल की बदौलत भारतीय टीम मैच में ज्यादातर समय आगे रही। लेकिन दूसरे हाफ में अफगानिस्तान ने पलटवार किया। 71वें मिनट में रहमत अकबरी ने गोल दागकर टीम को बराबरी दिलाई, वहीं 88वें मिनट में भारतीय गोलकीपर गुरुप्रीत के फाउल पर मिली पेनाल्टी को शरीफ मुखम्मद ने गोल में तब्दील कर अफगानिस्तान को रोमांचक जीत दिलाई।

पेरिस ओलंपिक-2024

अचंत शरत कमल होंगे ध्वजवाहक

नई दिल्ली, भारत के अनुभवी टेबल टेनिस खिलाड़ी और राष्ट्रमंडल खेलों के स्वर्ण पदक विजेता अचंत शरत कमल इस वर्ष आयोजित होने वाले पेरिस ओलंपिक खेलों में भारत के ध्वजवाहक होंगे। भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) ने जानकारी देते हुए कहा कि 41 वर्षीय टेबल टेनिस खिलाड़ी ओलंपिक में प्रतिस्पर्धा करते समय हमारे दल की एकता का प्रतीक है।

पेरिस ओलंपिक में पहली बार भारत की महिला और पुरुष टेबल टेनिस टीमों ने क्वालिफाई किया है। ओलंपिक-2024 में अचंत शरत कमल पुरुष टीम और व्यक्तिगत वर्ग में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। कमल ने राष्ट्रमंडल खेलों में 7 स्वर्ण, 3 रजत और 3 कांस्य पदक जीते हैं, साथ ही उन्होंने एशियाई खेलों में 2 कांस्य पदक भी जीते हैं।

आईओए ने कहा कि भारत की दिग्गज महिला मुक्केबाज एमसी मैरी कॉम को भारतीय दल का प्रमुख (शेफ डी मिशन) नियुक्त किया है, वहीं शिवा केशवन को भारतीय दल का उप प्रमुख बनाया गया है। केशवन ल्यूज खेल के खिलाड़ी हैं, जो शीतकालीन ओलंपिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। आईओए ने कहा कि छह बार की विश्व चैम्पियन और लंदन ओलंपिक-2012 की कांस्य पदक विजेता मैरी कॉम का खेलों के प्रति समर्पण और प्रेरणादायी यात्रा ओलंपिक में हमारे खिलाड़ियों का मार्गदर्शन करती हैं।

आईओए की अध्यक्ष पी.टी. ऊषा ने कहा कि हम पेरिस ओलंपिक खेलों में भारतीय दल का नेतृत्व करने के लिए अधिकारियों की प्रतिष्ठित और क्षमतावान टीम पाकर बहुत खुश हैं। यह नियुक्तियां अनुभव, विशेषज्ञता और नेतृत्व कौशल को देखकर की गई है, जो वैश्विक खेल आयोजन में हमारे खिलाड़ियों की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

पेरिस ओलंपिक में ध्वजवाहक नियुक्त किया जाना मेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान है। यह मेरा पांचवां और अंतिम ओलंपिक होने जा रहा है। विश्व में कम ही खिलाड़ियों को यह सम्मान मिलता है।

- अचंत शरत कमल

गगन नारंग करेंगे निशानेबाजी टीम का संचालन

पेरिस ओलंपिक की निशानेबाजी रेंज में भारतीय निशानेबाजी टीम का संचालन पूर्व निशानेबाज गगन नारंग करेंगे। आईओए ने कहा कि पेरिस ओलंपिक में भारत निशानेबाजी में अपना सबसे बड़ा दल भेजेगा। इस ओलंपिक में भारतीय निशानेबाजों ने अब तक 19 कोटा हासिल कर लिए हैं। लंदन ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता गगन नारंग का अनुभव निशानेबाजों को विश्व के सबसे बड़े खेल आयोजन में शानदार प्रदर्शन करने में मदद करेगा।

ससेक्स के लिए काउंटी क्रिकेट खेलेंगे उनादकट

लंदन, भारत के तेज गेंदबाज जयदेव उनादकट काउंटी चैम्पियनशिप में ससेक्स क्लब के लिए खेलेंगे। उनादकट पिछले साल भी इसी क्लब के लिए खेले थे। उनादकट ने पिछले सत्र में ससेक्स के लिए चार मैचों में 11 विकेट लिए थे। उनादकट इस सत्र में ससेक्स के अंतिम पांच मैचों में खेलेंगे। काउंटी चैम्पियनशिप में खेलने से पहले उनादकट इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में सनराइजर्स हैदराबाद की तरफ से खेलेंगे। उल्लेखनीय है कि उनादकट ने भारत के लिए 4 टेस्ट, 8 वन-डे और 10 ट्वेंटी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैच खेले हैं।

सकामोटो ने जीती फिगर स्केटिंग चैम्पियनशिप

टोक्यो, जापान की दिग्गज स्केटर काओरी सकामोटो ने लगातार तीसरी बार फिगर स्केटिंग विश्व चैम्पियनशिप का खिताब जीता है। वे इससे पहले वर्ष 2022 और 2023 में भी स्वर्ण पदक जीत चुकी हैं। सकामोटो वर्ष 1968 के बाद यह कारनामा करने वाली वे पहली महिला बन गई हैं। इस प्रतियोगिता में सकामोटो ने फ्री स्केट के साथ 222.96 का स्कोर किया और स्वर्ण पदक अपने नाम किया। प्रतियोगिता में अमेरिका की इसाबेऊ लेविटो दूसरे तथा दक्षिण कोरिया की किम चाए योन तीसरे स्थान पर रहीं।

ऑस्ट्रेलिया में पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलेगा भारत

मेलबर्न, भारतीय क्रिकेट टीम इस वर्ष के अंत में ऑस्ट्रेलिया में पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलेगी। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने इस भारतीय पुरुष और महिला क्रिकेट टीमों के ऑस्ट्रेलियाई दौरे की घोषणा कर दी है। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच टेस्ट मैचों की सीरीज (बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी) नवंबर 2024 से जनवरी 2025 तक खेली जाएगी। सीरीज का पहला मैच 22 नवंबर से पर्थ में खेला जाएगा। वहीं 6 दिसंबर से दूसरा टेस्ट मैच एडिलेड में खेला जाएगा जो, डे-नाइट टेस्ट मैच होगा। सीरीज का तीसरा मैच 14 दिसंबर से ब्रिस्बेन, चौथा टेस्ट 26 दिसंबर से मेलबर्न में खेला जाएगा। टेस्ट सीरीज का आखिरी मैच 3 जनवरी, 2025 से सिडनी में खेला जाएगा।

जबकि भारतीय महिला टीम का ऑस्ट्रेलियाई दौरा 5 दिसंबर से शुरू होगा। इस दौरे पर भारतीय महिला टीम तीन मैचों की वन-डे सीरीज खेलेगी। सीरीज का पहला मैच 5 दिसंबर को ब्रिस्बेन में, दूसरा मैच 8 दिसंबर तथा तीसरा मैच 11 दिसंबर को खेला जाएगा। दूसरा और तीसरा मैच पर्थ में खेला जाएगा।

- **भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच 33 वर्ष बाद पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जाएगी।**
- **इससे पहले दोनों देशों के बीच वर्ष 1991-92 में खेली गई थी पांच टेस्ट मैचों की सीरीज।**
- **भारत ने वर्ष 2018-19 और वर्ष 2020-21 में ऑस्ट्रेलिया को उन्हीं के घर में टेस्ट सीरीज में शिकस्त दी है।**

अफगानिस्तान ने 2-1 से जीती ट्वेंटी-20 सीरीज

शारजाह, अफगानिस्तान ने तीन मैचों की ट्वेंटी-20 सीरीज में आयरलैंड को 2-1 से मात दी है। सीरीज के तीसरे और अंतिम मैच में अफगानिस्तान ने आयरलैंड को 57 रन से हराया। मैच में अफगानिस्तान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 7 विकेट खोकर 155 रन बनाये। लक्ष्य का पीछा करने उतरी आयरिश टीम के बल्लेबाज रन बनाने के लिए संघर्ष करते नजर आये। आयरलैंड की पारी 98 रन पर सिमट गई।

ब्राजील के पूर्व फुटबॉलर रोबिन्हो को नौ साल की सजा

रोम, ब्राजील के पूर्व दिग्गज फुटबॉलर रोबिन्हो को बलात्कार के एक मामले में नौ वर्ष जेल की सजा काटनी होगी। रियल मैड्रिड और मैनचेस्टर सिटी और एसी मिलान जैसे शीर्ष क्लबों के लिए खेल चुके रोबिन्हो को वर्ष 2017 में इटली की एक अदालत ने बलात्कार के आरोप में 9 वर्ष की सजा सुनाई थी। तब रोबिन्हो एसी मिलान के लिए खेलते थे और सजा से पहले ही ब्राजील चले गए थे। इटली के अनुरोध के बाद ब्राजील की अदालत ने रोबिन्हो को 9 वर्ष की सजा सुनाई।

डब्ल्यूटीटी खिताब जीतने वाले पहले भारतीय बने साथियान

बेरूत, भारत के अनुभवी टेबल टेनिस खिलाड़ी गनासेकरन साथियान ने लेबनान में आयोजित डब्ल्यूटीटी फीडर सीरीज इवेंट में पुरुष एकल वर्ग के चैम्पियन बन गए हैं। साथियान ने टूर्नामेंट के फाइनल में अपने हमवतन खिलाड़ी मानव ठक्कर को शिकस्त दी। इस जीत के साथ साथियान यह टूर्नामेंट जीतने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं।

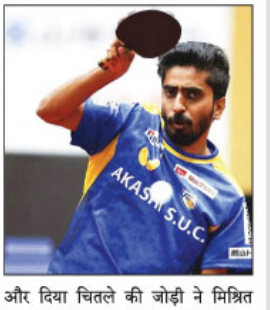

साथियान ने टूर्नामेंट में बेहतरीन खेल दिखाया और सेमीफाइनल में चीनी ताइपे के चुआंग चिह युआन को हराकर फाइनल में जगह बनाई। फाइनल में भी साथियान ने मानव को शानदार मुकाबले में 3-1 (6-11, 11-7, 11-7, 11-4) से हराया। मैच में 1-0 से पिछड़ने के बाद साथियान ने जबरदस्त वापसी की और अगले दोनों गेम जीतकर खिताब पर कब्जा जमाया।

मानुष और दिया ने जीता मिश्रित युगल वर्ग का खिताब

प्रतियोगिता में मिश्रित युगल वर्ग का खिताब भी भारत के नाम रहा। मानुष शाह और दिया चितले की जोड़ी ने मिश्रित युगल वर्ग के फाइनल में मानव ठक्कर और अर्चना कामत की जोड़ी को 3-1 (11-6, 10-12, 11-6, 11-6) से हराकर खिताब जीता। टूर्नामेंट में पुरुष युगल वर्ग में मानव ठक्कर और मानुष शाह की जोड़ी फाइनल में जगह बनाने में कामयाब रहीं, लेकिन खिताबी मुकाबले में उन्हें क्यूबा के जॉर्ज कैंपोस और एंडी पेरेरा की जोड़ी के हाथों 3-1 (11-5, 7-11, 11-13, 12-14) से हार का सामना करना पड़ा।

स्विस ओपन बैंडमिंटन

चीनी ताइपे के लिन चुन यी ने जीता खिताब

बासेल, चीनी ताइपे के युवा खिलाड़ी लिन चुन यी ने स्विस ओपन बैंडमिंटन टूर्नामेंट जीत लिया है। टूर्नामेंट में पुरुष एकल वर्ग के फाइनल में लिन ने अपने ही देश के अनुभवी खिलाड़ी चोऊ टिएन चेन को संघर्षपूर्ण मुकाबले में 7-21, 22-20, 23-21 से हराया।

टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में भारत के किदांबी श्रीकांत को हराने वाले लिन ने फाइनल में भी बेहतरीन खेल दिखाया। हालांकि मैच के पहले गेम में चोऊ टिएन चेन उन पर भारी पड़े और एकतरफा अंदाज में 21-7 से जीत दर्ज की। इसके बाद दूसरे गेम में भी इन दोनों खिलाड़ियों के बीच जबरदस्त टक्कर हुई, जिसमें लिन 22-20 के अंतर से जीत दर्ज करने में सफल रहे। मैच के तीसरे गेम में दोनों खिलाड़ियों ने दमदार खेल दिखाया, जिससे गेम टाइब्रेकर में गया। टाइब्रेकर में लिन ने 23-21 से यह गेम जीतकर खिताब पर कब्जा जमाया।

- **लिन चुन यी ने पहली बार जीता है स्विस ओपन खिताब।**
- **लिन के कॅरियर का यह चौथा वर्ल्ड टूर खिताब है।**
- **कैरोलिना मारिन स्विस ओपन में दूसरी बार बनी हैं विजेता।**
- **मारिन वर्ष 2021 में भी जीत चुकी हैं यह खिताब।**
- **मारिन ने रियो ओलंपिक-2016 में बैडमिंटन महिला एकल वर्ग में स्वर्ण पदक जीता है।**

महिला वर्ग में मारिन बनीं चैम्पियन

स्विस ओपन में महिला एकल वर्ग का खिताब स्पेन की कैरोलिना मारिन ने जीता। मारिन ने महिला एकल वर्ग के फाइनल में इंडोनेशिया की ग्रेगोरिया मारिस्का तुनजुंग को रोमांचक मुकाबले में 21-19, 13-21, 22-20 से हराया। तुनजुंग ने फाइनल मैच में मारिन को कड़ी टक्कर दी। मारिन ने मैच का पहला गेम 21-19 से जीता। वहीं दूसरे गेम में तुनजुंग ने वापसी की, तीसरा गेम मारिन ने जीता। प्रतियोगिता में पुरुष युगल वर्ग का खिताब इंग्लैंड के बेन लेन और सीन वेंडी की जोड़ी ने जीता, वहीं महिला युगल वर्ग में लेनी मायासरी और रिबिका सुगिआर्तो की इंडोनेशियाई जोड़ी विजेता बनीं।

ऑस्ट्रेलियन ग्रां प्री

कार्लोस सेंज ने जीती रेस

मेलबर्न, स्पेन के कार रेसर कार्लोस सेंज ने ऑस्ट्रेलियन ग्रां प्री जीत ली है। यह इस सत्र में सेंज की पहली जीत है। टीम फेरारी के ड्राइवर सेंज ने 58 लैप की इस रेस को एक घंटा 20 मिनट 26.843 सेकेंड में पूरा किया। रेस में सेंज के टीम साथी चार्ल्स लेकलर्क दूसरे तथा मैक्लेरेन मर्सिडीज टीम के लेंडो नॉरिस तीसरे स्थान पर रहे। मैक्लेरेन टीम के ही ड्राइवर ऑस्कर पिस्ट्री मामूली अंतर से पोडियम फिनिश करने से चूक गए और चौथे स्थान पर रहे।

मौजूदा फॉर्मूला-वन चैम्पियन और इस सत्र में शुरुआती दो रेस जीत चुके मैक्स वर्स्टापेन इस बार रेस को फिनिश नहीं कर पाए। चार लैप के बाद वर्स्टापेन की कार का ब्रेक सिस्टम फेल हो गया, जिसके बाद सुरक्षा के लिहाज से उन्हें रेस से हटना पड़ा।

- **कार्लोस सेंज के कॅरियर की यह तीसरी जीत है।**
- **सेंज इससे पहले ब्रिटिश ग्रां प्री और सिंगापुर ग्रां प्री जीत चुके हैं।**

(स्रोत : संपादकीय टीम द्वारा संकलित, फोटो : गूगल से साभार)

सामयिकी

वायुसेना को आधुनिक और भविष्य के लिए तैयार एयरोस्पेस फोर्स में बदलने की आवश्यकता

वायुसेना प्रमुख एयरचीफ मार्शल वी.आर. चौधरी ने डिफेंस सर्विसेज स्टॉफ कॉलेज, वेलिंगटन का दौरा किया। उन्होंने 79वें स्टाफ कोर्स की तैयारी कर रहे भारतीय सशस्त्र बलों और मित्र देशों के छात्र अधिकारियों और कॉलेज के स्थायी कर्मचारियों को संबोधित किया। वायुसेना प्रमुख ने भारतीय वायुसेना के सामने आनेवाली चुनौतियों, इसकी क्षमता विकास योजना और इसकी संयुक्तता के बारे में बताया। उन्होंने भारतीय वायुसेना को एक आधुनिक और भविष्य के लिए तैयार एयरोस्पेस फोर्स में बदलने के बारे में बहुत अच्छी तरह से व्याख्या की। वायुसेना प्रमुख एयरचीफ मार्शल ने संघर्षरत क्षेत्रों से भारतीय प्रवासियों को सुरक्षित निकालने के काम और आपदा राहत कार्यों के दौरान भारतीय वायुसेना द्वारा निभाई गई प्रमुख भूमिका के बारे में बताया। साथ ही उन्होंने रूस-यूक्रेन युद्ध और इज़राइल-हमास संघर्ष जैसे मौजूदा संघर्षों से प्राप्त महत्वपूर्ण वायुशक्ति सीख पर भी प्रकाश डाला। अंत में एयरचीफ मार्शल ने वायुसेना प्रमुख को चल रही प्रशिक्षण गतिविधियों और डीएसएससी में संयुक्तता के लिए दिए जा रहे प्रोत्साहन के बारे में भी जानकारी दी।

ईपीएफओ ने जनवरी 2024 के दौरान 16.02 लाख सदस्य जोड़े

24 मार्च 2024 को जारी ईपीएफओ के अंतिम पेरोल डेटा से पता चलता है कि ईपीएफओ ने जनवरी, 2024 के महीने में 16.02 लाख सदस्य जोड़े हैं। डेटा के अनुसार जनवरी 2024 के दौरान लगभग 8.08 लाख नए सदस्यों ने नामांकन किया है। डेटा का एक उल्लेखनीय पहलू यह है कि इसमें 18-25 आयु वर्ग का वर्चस्व है, जो जनवरी 2024 में जोड़े गए कुल नए सदस्यों का 56.41 प्रतिशत है। पेरोल डेटा से पता चलता है कि लगभग 12.17 लाख सदस्य बाहर निकल गए और बाद में ईपीएफओ में फिर से शामिल हो गए। इन सदस्यों ने अपनी नौकरी बदल ली और ईपीएफओ के दायरे में आने वाले प्रतिष्ठानों में फिर से शामिल हो गए और अंतिम निपटान के लिए आवेदन करने की बजाय संचित धन को स्थानांतरित करने का विकल्प चुना, जिससे दीर्घकालिक वित्तीय कल्याण की रक्षा हुई और उनकी सामाजिक सुरक्षा का विस्तार हुआ।

उपराष्ट्रपति ने इंडियन ऑफ द ईयर कार्यक्रम को किया संबोधित

कमजोर अर्थव्यवस्थाओं से उबरने के साथ पांच बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में भारत शामिल

विकसित भारत की गूंज आज हमारे महान राष्ट्र के हर कोने में सुनाई दे रही है। यह भविष्य में छलांग लगाने के आह्वान से कहीं अधिक है यह एक पक्का वायदा है, यह एक अहम प्रतिज्ञा है कि वर्ष 2047 में हम एक विकसित राष्ट्र होंगे। यह बात उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने ''इंडियन ऑफ द ईयर'' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि पिछले दशक में देश का विकास एक पिरामिड की तरह नहीं, बल्कि एक पठार की तरह रहा है। इसका लाभ देश के हर कोने में और हर किसी को मिला है। उन्होंने कहा कि हाल के वर्षों में भारत कमजोर अर्थव्यवस्थाओं से उबरने के साथ दुनिया की पांच बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हुआ।

उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ 'इंडियन ऑफ द ईयर'' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए

विकसित राष्ट्र की नींव

हमें कनाडा, ब्रिटेन और फ्रांस को पीछे छोड़ते हुए पांच बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल होने का सौभाग्य मिला है। मैं कह सकता हूं कि अगले 2 साल से भी कम समय में भारत जर्मनी और जापान से आगे दुनिया की तीन बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो जाएगा। तो हमारा अमृत काल जो हर दृष्टि से हमारा गौरव काल है, एक अर्थ में 2047 में एक विकसित राष्ट्र की नींव रख रहा है।

बड़ी लीग में हुए शामिल

उपराष्ट्रपति ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर सोच उम्मीदों और संभावनाओं से भरी हुई है। हमने अभूतपूर्व विकास देखा है, जो लोग अर्थव्यवस्था जानने का दावा करते हैं, उन्होंने विकास दर 7.5 प्रतिशत से अधिक होने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। हमने तेजी से ढांचागत विकास किया है, जिससे दुनिया ईर्ष्या करती है। भारत मंडपम, यशोभूमि, संसद की नई इमारत, हमारे एक्सप्रेसवे को देखिए और कल्पना कीजिए कि हम कहां हैं, वैश्विक बेंचमार्क से भी हम बड़ी लीग में शामिल हो चुके हैं। उपराष्ट्रपति ने कहा कि व्यापक डिजिटल पहुंच का लाभ गांवों में उपलब्ध है, टियर-2 शहरों में लोग उस स्तर तक पहुंच रहे हैं जहां उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था, वे इसका लाभ उठा रहे हैं और फिर अवसरों के नए आयाम सामने आ रहे हैं।

सकारात्मक शासन से हुआ संभव

जी-20 की अध्यक्षता को युगांतरकारी उपलब्धियों के लिए हमेशा याद किया जाएगा। इसकी वजह स्पष्ट है कि भारत की पहल पर अफ्रीकी संघ को जी-20 सदस्य के रूप में शामिल करने पर सहमति बनी। इस देश की 5 हजार साल पुरानी सभ्यतागत संस्कृति को पूरी दुनिया ने देखा, यहीं पर हम खड़े हुए हैं। दुनिया में भारत संवैधानिक रूप से निर्मित लोकतंत्र है जो सभी स्तरों, ग्राम स्तर पर, नगरपालिका स्तर पर, राज्य स्तर पर और केंद्रीय स्तर पर मौजूद है।

श्रीलंका जा रहा कार्गो जहाज फ्रांसिस स्कॉट पुल से टकराया

अमेरिका के मैरीलैंड में एक कार्गो जहाज के टकराने से फ्रांसिस स्कॉट ब्रिज ढह गया। न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक घटना अमेरिकी समयानुसार रात करीब डेढ़ बजे हुई। पुल से टकराने के बाद जहाज में आग लग गई और वह डूब गया। सिंगापुर के झंडे वाला यह जहाज श्रीलंका की राजधानी कोलंबो जा रहा था। इसे रवाना हुए कुछ ही समय हुआ था। यह 22 अप्रैल को श्रीलंका पहुंचने वाला था। जहाज का नाम दाली बताया जा रहा है। पुल ढहने की वजह से इस पर मौजूद कई गाड़ियां और लोग पानी में गिर गए। फायर डिपार्टमेंट के मुताबिक अब तक 7 लोग लापता हैं, 2 लोगों को पानी से निकाला गया। इनमें एक की हालत गंभीर है। अब तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि पुल पर कितने लोग मौजूद थे और वे अब किस स्थिति में हैं। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के मुताबिक, मैरीलैंड ट्रांसपोर्टेशन अथॉरिटी ने बताया कि ब्रिज पर हादसे के बाद सभी लेन बंद कर दी गई हैं और ट्रैफिक रोक दिया गया है।

पुस्तक विमोचन

तितलियों और पतंगों (लेपिडोप्टेरा) पर तैयार हुई सचित्र मार्गदर्शिका

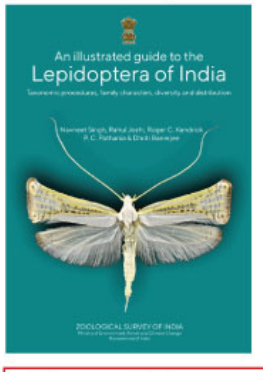

इंडियन ऑफ द ईयर कार्यक्रम जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने हाल ही में एक पुस्तक प्रकाशित की है। इस पुस्तक का शीर्षक 'एन इलस्ट्रेटेड गाइड टू द लेपिडोप्टेरा ऑफ इंडिया टैक्सोनोमिक प्रोसेजर्स, फैमिली कैरेक्टर, डायवर्सिटी एंड डिस्ट्रीब्यूशन' है।

इस किताब में 2019 में जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (जैडएसआई) द्वारा आयोजित 6वें एशियाई लेपिडोप्टेरा संरक्षण संगोष्ठी के दौरान विचार-विमर्श से निकली नई जानकारियां हैं, जहां एक ऐसी पुस्तक के लिए व्यापक रूप से चर्चा की गई थी, जो लेपिडोप्टेरोलॉजी के क्षेत्र में शौकिया और पेशेवर दोनों का मार्गदर्शन कर सके। यह परियोजना कोविड-19 के लॉकडाउन के दौरान शुरू की गई। इसके बाद लेखकों ने लगातार चार वर्ष तक इस क्षेत्र से संबंधित जानकारी को अद्यतन किया और अंत में इसका परिणाम इस पुस्तक के रूप में सामने आया।

यह किताब डॉ. धृति बनर्जी, निदेशक, जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (जैडएसआई) के साथ डॉ. नवनीत सिंह, डॉ. राहुल जोशी और डॉ. पी. सी. पठानिया, जैडएसआई के वैज्ञानिक और हांगकांग के लेपिडोप्टेरा विशेषज्ञ, डॉ. आर.सी. केन्ड्रिक के द्वारा संयुक्त रूप से तैयार की गई है।

सुपरफैमिली कंपोजिशंस

किताब का उद्देश्य भारत में पाई जाने वाली तितलियों और पतंगों के परिवारों और सुपर फैमिलीज़ के लक्षणों को संक्षेप में बताना है। बेसल विभाजन की प्रमुख विशेषताओं और विभिन्न समूहों की सुपरफैमिली कंपोजिशंस को प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक क्षेत्र में सामग्री इकट्ठा करने और क्यूरेट के तरीकों, टैक्सोनोमिक प्रक्रियाओं, सुपरफैमिली और पारिवारिक स्तर की पहचान और विश्व स्तर पर लेपिडोप्टेरा विविधता और वितरण के पैटर्न के बारे में रूपरेखा तैयार करती है।

बीते 10 वर्षों में 38400 प्रवासियों की डूबने की वजह से गई जान

संयुक्त राष्ट्र के अंतरराष्ट्रीय प्रवासन संगठन की तरफ से एक रिपोर्ट जारी की गई है। इस रिपोर्ट के में बताया गया है कि बीते 10 वर्षों में 64,000 प्रवासियों की मृत्यु हुई है। इनमें से करीब 38,400 प्रवासियों की मौत समुद्र में डूबने से हुई है। रिपोर्ट के अनुसार भूमध्य सागर में सबसे ज्यादा 27,000 प्रवासियों की मौतें हुई हैं।

भूमध्य सागर के रास्ते कई प्रवासी उत्तरी अमेरिका से दक्षिणी यूरोप जाने की कोशिश करते हैं। आईओएम के डेटा विश्लेषक एंड्रिया गार्सिया बोरजा ने बताया कि भूमध्य सागर खतरनाक क्षेत्र है और यहां यात्राएं करना बेहद जोखिम भरा साबित होता है। अन्य क्षेत्रों की तुलना में भूमध्य सागर के आंकड़ों को काफी गहनता से देखा गया है। सहारा रेगिस्तान जैसे क्षेत्रों की निगरानी करना कठिन था क्योंकि वहां का विश्वसनीय डेटा आना मुश्किल था।

नीली अर्थव्यवस्था पर संयुक्त कार्यशाला का आयोजन

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने नई दिल्ली में ब्लू इकोनॉमी पाथवेज स्टडी रिपोर्ट की स्थिति पर एक परामर्श कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में विश्व बैंक, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, नीति आयोग, पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय जैसे विभिन्न संबंधित मंत्रालयों तथा विभिन्न राज्य और राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास संगठनों के विशेषज्ञों ने भाग लिया।

इस कार्यशाला के दौरान, इस रिपोर्ट को तैयार करने में प्रत्येक संबंधित मंत्रालय की सहयोगी भूमिका पर विचार-विमर्श किया गया। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने तकनीकी अध्ययन करने और 'भारत की नीली अर्थव्यवस्था: भारत में संसाधन-कुशल, समावेशी और टिकाऊ विकास के लिए मार्ग' शीर्षक से एक मौलिक रिपोर्ट तैयार करने के लिए विश्व बैंक के साथ एक ज्ञान भागीदार के रूप में काम किया है।

फैसला

शांतिवादी सिद्धांत छोड़ पहली बार लड़ाकू विमान बेचेगा जापान

जापान ने एक बड़ा फैसला लिया है। ऐसा पहली बार हुआ है जब जापान ने अपने शांतिवादी सिद्धांतों को छोड़कर लड़ाकू विमान बेचने का फैसला लिया है। जापान अपने लड़ाकू विमानों को ब्रिटेन और इटली के साथ अन्य देशों में विकसित कर रहा है। इस फैसले के बाद जापान संयुक्त लड़ाकू जेट परियोजना में अपनी भूमिका को सुनिश्चित करेगा। जापान की कैबिनेट ने हथियार उपकरण के दिशानिर्देशों में संशोधन का भी समर्थन किया। इससे लड़ाकू विमान समेत घातक हथियारों को अन्य देशों को बेचने की अनुमति मिल सकेगी।

इस समय जापान अमेरिका द्वारा डिजाइन किए गए एफ-2 लड़ाकू विमानों और ब्रिटेन द्वारा उपयोग किए जाने वाले यूरोफाइटर टाइफून को बदलने के लिए नई तकनीकी के लड़ाकू विमानों को तैयार कर रहा है। इस काम में इटली और ब्रिटेन जापान का सहयोग कर रहे हैं। इस कार्य योजना को ग्लोबल कॉम्बैट एयर प्रोग्राम नाम दिया गया है,जिसका मुख्यालय ब्रिटेन में है। इससे पहले जापान एफ-एक्स नाम के एक घरेलू डिजाइन पर काम कर रहा था। जापान को उम्मीद है कि उसके द्वारा तैयार किया गया नया विमान रूस और चीन के खिलाफ बढ़ते तनाव के बीच उन्नत हथियार साबित होगा।

संविधान में किया गया यह संशोधन

जापान की कैबिनेट ने हथियारों और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण दिशानिर्देशों में भी संशोधन का समर्थन किया है। इससे घातक हथियारों को अन्य देशों को बेचने की अनुमति मिल सकेगी। जापान ने शांतिवादी संविधान के तहत लंबे समय से हथियारों के निर्यात को प्रतिबंधित कर दिया था, लेकिन चीन से बढ़ते क्षेत्रीय और वैश्विक तनाव के बीच देश ने तेजी से कदम उठाए हैं। जेट विमानों को बेचने के निर्णय से जापान को पहली बार अपने द्वारा उत्पादित घातक हथियारों को अन्य देशों में निर्यात करने की अनुमति मिलेगी।

(स्रोत : संपादकीय टीम द्वारा संकलित, फोटो गूगल से साभार)

स्वामी- मध्यप्रदेश माध्यम, प्रकाशक - संदीप यादव, मुद्रक - संदीप यादव द्वारा मेसर्स डी.बी. कॉर्प लिमिटेड, 10-11, सेक्टर-B, इंडस्ट्रियल एरिया, गोविंदपुरा, भोपाल से मुद्रित एवं मध्यप्रदेश माध्यम 40, प्रशासनिक क्षेत्र, अरेरा हिल्स, भोपाल-462011 (म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक- रंजना चितले।